वैज्ञानिक चिंतन की आवाज़

तर्कशील पथ

TARKSHEEL

जनवरी 2020

आत्महत्या करने की प्रवृति (24)

जीना एक कला है (47)

डा. श्रीराम लागू

16 नवंबर 1927 – 17 दिसंबर 2019

₹20

जैसे जीवित रहने के लिए भोजन की जरूरत होती है, उसी प्रकार मन की खुराक अच्छा साहित्य है।

मैं घास हूँ

पाश

मैं घास हूँ
मैं आपके हर किए-धरे पर उग आऊँगा
बम फेंक दो चाहे विश्वविद्यालय पर
बना दो होस्टल को मलबे का ढेर
सुहागा फिरा दो भले ही
हमारी झोपड़ियों पर
मेरा क्या करोगे
मैं तो घास हूँ हर चीज पर उग आऊँगा
बंगे को ढेर कर दो
संगरूर मिटा डालो
धूल में मिला दो लुधियाना जिला
मेरी हरियाली अपना काम करेगी...
दो साल... दस साल बाद
सवारियाँ फिर किसी कंडक्टर से पूछेंगी
यह कौन-सी जगह है
मुझे बरनाला उतार देना
जहाँ हरे घास का जंगल है
मैं घास हूँ, मैं अपना काम करूँगा
मैं आपके हर किए-धरे पर उग आऊँगा

टाईप सैटिंग और डिज़ाइनिंग:

दोआबा कम्यूनिकेशंस

मोबाईल : 92530 64969
Email: baldevmehrok@gmail.com

तर्कशील पथ पत्रिका हेतु शुल्क स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, शाखा मॉडल टाऊन, अम्बाला शहर (हरियाणा) में रैशनलिस्ट सोसायटी हरियाणा के नाम से खाता सं. 30191855465 IFSC: SBIN 0002420 में जमा करा सकते है। शुल्क Paytm के माध्यम से मोबाईल नम्बर 9416036203 पर या कोड को स्कैन करके भी भेजा जा सकता है। शुल्क भेजने के बाद इसी मोबाइल नम्बर पर अपना पता SMS या WhatsApp करें।

Reg.No.HARHIN/2014/60580

संपादक : बलवन्त सिंह - 94163-24802

संपादक सहयोग :-
गुरमीत अम्बाला - 94160-36203
बलबीर चन्द लौंगोवाल - 98153-17028
हेम राज स्टेनो - 98769-53561

पत्रिका शुल्क :-
द्विवार्षिक : 200/- रू.
विदेश : वार्षिक : 25 यू.एस.डॉलर

पत्रिका वितरण :
गुरमीत अम्बाला
Email: tarksheeleditor@gmail.com

रचनाएं, पत्र व्यवहार व शुल्क भेजने के लिए पता:
बलवन्त सिंह (प्रा.)
म.नं. 1062, आदर्श नगर,
नजदीक पूजा सीनियर सैकण्डरी स्कूल, पिपली।
जिला कुरूक्षेत्र - 136131 (हरियाणा)
Email: tarksheeleditor@gmail.com

तर्कशील सोसायटी की गतिविधियों से जुड़ने के लिए
www.facebook.com/tarksheelindia
पेज को लाईक करें।

पत्रिका के प्रमुख लेखों को निम्न ब्लॉग पर भी पढ़ा जा सकता है-
http://tarksheelblog.wordpress.com
पत्रिका को पढ़ने के लिए लॉग ऑन करें:
www.tarksheel.org
Tarksheel on Whatsapp : 9416036203
Tarksheel Mobile App :
Readwhere.com
Tarksheel on Twitter:
@gurmeeteditor

FORM IV

1) Place of Publication : Yamuna Nagar,
2) Periodicity of its publication : Monthly
3) Printer's Name : Ramnik Printers,
Nationality : Indian,
Address : Near Luxmi Cinema, Yamuna Nagar
4) Publisher's Name : Balwant Singh
Nationality : Indian,
Address : H.No. 1062, Adrash Nagar, Near Puja Senior Secondary School Pipli (Distt. Kurukshetra) (Haryana)
5) Editor's Name : Balwant Singh,
Nationality : India,
Address : H.No. 1062, Adrash Nagar, Near Puja Senior Secondary School Pipli Distt. Kurukshetra (Haryana)
6. Name and adressed of individuals who own the newspaper and partners or shareholders holding more than one percent of the total capital.
1. Balwant Singh hereby declare that the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.

Date .... Signature of Publisher

संकेतिका

मीटिंग की सूचना

तर्कशील सोसायटी हरियाणा की आगामी द्विमासिक मीटिंग, दिनांक **15 मार्च, 2020** को दिन रविवार, प्रातः 10.00 से 3.00 बजे तक पूण्डरी (जिला कैथल) में होगी।

नोटः तिथि, स्थान व समय के बारे में सभी साथी फोन संपर्क करके सुनिश्चित कर लें।

सम्पर्क सूत्रः
कृष्ण हलवाईः 9802026000
मान सिंहः 9812118222

नोट : किसी भी तरह की कानूनी कारवाई सिर्फ जगाधरी यमुनानगर (हरियाणा) की अदालत में ही हो सकेगी।

सम्पादकीय

मानसिक स्वास्थ्य का महत्त्व

विश्व में 10 अक्तूबर का दिन हर वर्ष मानसिक स्वास्थ्य दिवस के रूप में मनाया जाता है जिसका उद्देश्य अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर मानसिक स्वास्थ्य को लेकर शिक्षित करना व जागरुकता फैलाना है। ऊपर से सामान्य से दिखने वाले मानसिक रोगों को प्रायः गंभीरता से नहीं लिया जाता, विशेषकर भारत में इस विषय के प्रति अभी उतनी जागरुकता नज़र नहीं आती जितनी कि विश्व के अन्य देशों में।

जहां तक भारत का सवाल है इस विषय पर हाल ही की एक सर्वे रिपोर्ट में चौंकाने वाले आंकड़े आये हैं। 'लांसर साईक्याटरी' जर्नल में प्रकाशित 'इंडिया स्टेट लेवल डिजीज़ बर्डन अनीशिएटिव' द्वारा तैयार की गई रिपोर्ट जो कि विशेषकर दक्षिणी भारत के राज्यों पर केंद्रित है जिसके अध्ययन के अनुसार प्रत्येक 7 में से एक व्यक्ति मानसिक विकार से ग्रस्त है। प्राप्त आंकड़ों के अनुसार भारत में लगभग 2 करोड़ आबादी मानसिक विकारों से ग्रस्त है और यह आबादी लगातार बढ़ती जा रही है। केवल पिछले दशक में ही 18 प्रतिशत की बढ़ौतरी हुई है जो कि चिंता का विषय है। मानसिक रोगों में चिंता विकार, सीजोफ्रेनिया, बाईपोलर विकार, बौद्धिक अक्षमता, अव्यवस्था विकार, आत्मकेंद्रिता जैसे विकार शामिल हैं।

मानसिक रोगों के प्रति जागरुकता अब धीरे-धीरे बढ़ने लगी है। लोग मानसिक परेशानियों को लेकर मानसिक रोग विशेषज्ञों के पास पहुंचने लगे हैं, परंतु बहुत बड़ी आबादी अभी भी मानसिक रोगों को कथित भूत-प्रेत बाधा मान कर तांत्रिकों, बाबाओं, ज्योतिषियों की शरण में जाती रहती है। कुछ ऐसे लोग भी हैं जो तांत्रिकों-बाबाओं के पास जाने के साथ-साथ मानसिक रोगों के डाक्टरों का भी परामर्श लेते हैं, मगर डाक्टरों से ठीक होने के बावजूद उसका श्रेय तांत्रिकों-बाबाओं को ही दिया करते हैं। वर्तमान स्थिति को देखते हुए इस समय देश में लगभग 75000 मानसिक-रोग-विशेषज्ञों की जरूरत है।

यह सब देखते हुए मानसिक स्वास्थ्य को लेकर राष्ट्रीय जागरुकता अभियान चलाने की अति आवश्यकता है। आज विभिन्न अनुमानों के अनुसार भारत में कुल जीडीपी का 0.006 प्रतिशत ही इस मद पर खर्च किया जा रहा है जो कि बहुत कम है।

देश भर में तर्कशील संस्थाएं अपने कमतर साधनों के होते हुए भी मानसिक रोगों को लेकर जागरुकता अभियान जारी रखे हुए हैं। हरियाणा-पंजाब में अब मानसिक रोगों से ग्रस्त लोगों को अक्सर एक बार तर्कशील सोसायटी से संपर्क करने की सलाह दी जाती है। आज आवश्यकता है कि भारत भी वैश्विक पैमाने पर मानसिक स्वास्थ्य अभियान में शामिल हो।...................... गुरमीत अम्बाला

भनमती

: डा. नरेन्द्र दाभोलकर,

प्रकृति के कार्य अथवा दुनिया के क्रम का समझना आदिम मनुष्य की बुद्धि से परे की बात थी। आस-पास घटने वाली घटनाएं उसे अजीबोगरीब लगती थीं। उसने कल्पना की कि इस संसार में 'यातू- नाम की शक्ति है। उसकी पूजा करना अर्थात् 'यातूक्रिया' और पूजा के द्वारा का जो धर्म सिद्ध हुआ, उसे 'यातूधर्म' माना गया। 'यातू' शब्द के अपभ्रंश से 'जादू' शब्द उत्पन्न हुआ। इसलिए यातू धर्म के Magico Religious Belief कहा जाता है। अच्छी बातें, जैसे-बारिश, अनाज की संपन्नता, बच्चों की संख्या बढ़े आदि उद्देश्य से की जाने वाली यातूक्रिया को 'शुक्ल यतू' कहा जाता है। बुरे उद्देश्य से, मतलब पड़ोस के घर का अनाज अपने आप मेरे घर आ जाए, सौतन बांझ हो जाए, दुश्मन खून की उल्टियां करे और उसकी मृत्यु हो जाए, जैसी अपेक्षा से की जाने वाली करतूतों को 'कृष्ण' यातू कहा जाता है। इसे ही ब्लैक मैजिक या भानमती कहा जाता है। वास्तव में इक्कीसवीं सदी में प्रकृति की अनगिनत घटनाओं के कार्य-कारण भाव पता चलने के बाद 'काला जादू' अथवा भानमती की कल्पनाएं जितनी मात्रा में खत्म होनी चाहिए थीं, उतनी नहीं हुई। देहातों में अभी भी लड़ाई-झगडों के विषय में काला जादू भानमती और जादू-टोना ही होते हैं। इस संदर्भ में होने वाला कार्य-कारण भाव समझने में लोग अमूमन राजी नहीं होते। ऐसे में भानमती पर विश्वास को मजबूत करने वाली जैसी घटनाओं का सिलसिला शुरू होता है। अचानक घर की छत पर पत्थर गिरने लगते हैं, पुलिस की गश्त से भी उसमें रुकावट नहीं आती। घर में रखे कपड़े अपने आप फटने लगते हैं अथवा उनमें आग लग जाती है। दीवार की अलमारी में रखे डिब्बे अपने आप गिरने लगते हैं। घर में किसी व्यक्ति के शरीर पर काले निशान नज़र आने लगते हैं। कभी खाने की थाली में राख दिखाई पड़ती है, तो कभी खाना बहुत ही तीखा या कड़वा हो जाता है। कभी-कभी स्कूल में बैठे बच्चों की आंखों से कंकर आने लगते हैं। ये बातें बहुत ही रहस्यात्मक और भयावह होती हैं। इनसे विज्ञान से परे किसी दूसरी शक्ति का आभास होता है।ऊपरी तौर पर इन घटनाओं के कारण नज़र नहीं आते। घर के व्यक्ति का हाथ हो, ऐसी कल्पना भी कोई नहीं करता। खाने का स्वाद कड़वा लगना, कपड़े का जलना, पत्थर बरसना आदि इन बातों से घर में आतंक का साया मंडराने लगता है कि कहीं घर को ही आग न लग जाए, घर पर बरसने वाले पत्थर से कहीं घर का का कोई सदस्य जख्मी न हो जाए, बच्चों की आंखों से कंकर आने के कारण कहीं आंखों में कोई गहरा जख्म न हो जाए।

महाराष्ट्र के मराठवाड़ा में अधिकांश महिलाओं पर भानमती सवार होती है। पीड़ित महिलाएं घुघुआने लगती हैं, निरर्थक बड़बड़ाती हैं, जमीन पर लोटने लगती हैं। मुंह से भौंकने की आवाज निकालती हैं। भानमती का संसर्ग गांव की अन्य महिलाओं को भी होता है। यह बात केवल मराठवाड़ा में ही नज़र आती है। यह मानसिक बिमारी है, इसमें कोई शक नहीं है। पिछले 20 वर्षो से अंनिस इसके विरोध में कार्य कर रही है। 20 वर्ष की तुलना में अब ऐसे मामलों में बहुत कमी आ गई है। लोगों की मानसिकता में भी परिवर्तन आ गया है। ऐसे मामलों में अब वे आंदोलन के कार्यकर्ता और पुलिस की मदद लेना चाहते हैं। फिर भी ऐसे प्रसंग खबरें चर्चा का बड़ा विषय बनते हैं। जब तक इन पर पूरी तरह से रोक नहीं लगेगी तब तक इसके विज्ञान से परे एक रहस्यात्मक शक्ति होने की गलत मानसिकता लोगों में मौजूद रहेगी। इसीलिए ऐसी घटनाओं में तुरंत दखलंदाजी करना जरूरी होता है।

भानमती की खास बात यह है कि इसमें हमेशा ही रहस्यात्मक और भयावह घटनाएं घटती हैं। भानमती से कुएं में पानी आ गया, लॉटरी लग गई, पुत्र प्राप्ति हो गई अथवा दुर्घटना टल गई जैसी कोई बात नहीं होती; बल्कि दुर्घटनाएं ही दर्ज होती हैं। व्यक्ति पर यह भानमती अपना असर दिखाती

है, जैसे-अचानक अंग पर फूली के काले निशान नज़र आना, कान से कंकर टपकना आदि। भानमती हुए व्यक्ति के संदर्भ में गलतफहमियां भी फैलती हैं। ऐसा व्यक्ति कोने में बैठ जाता है अथवा खूंटी पर लटक जाता है। वह अपने बालों के बल लटकता है। उसके सिर से, नाक से, कान से, सुइयां, कीलें निकलने लगते हैं।

भानमती से पीड़ित व्यक्ति के प्रति घर के लोगों को सहानुभूति होती है। वे पीड़ित की तकलीफ देखकर खुद भी तकलीफ का अनुभव करते हैं। लेकिन इस पीड़ा से उन्हें मुक्त करने के लिए कोई साहस नहीं बटोरता। उनकी सहायता नहीं करता। इसका कारण यह भी हो सकता है कि ऐसी ऊटपटांग बातों का कारण उन्हें पताा नहीं होता। इसीलिए कौन सी सहायता ली जाए, इस उलझन में वे रहते हैं। वे शायद सोचते भी हों कि इसमें कोई तथ्य नहीं, घबराने वाली बात नहीं। लेकिन क्या पता, वास्तव में ऐसी कोई शक्ति हो, वे ऐसा भी मान लेते हैं। एक व्यक्ति दूसरे को भानमती की जानकारी बढ़ा-चढ़ाकर बताता है और इस तरह भानमती और भी भयावह बन जाती है।

भानमती के मामलों का अध्ययन करने के बाद पता चलता है कि पीड़ित व्यक्ति समाज से उपेक्षित, निरर्थकता की भावना से परेशान और जीवन में असफलता का अनुभव करने वाला होता है। इन बातों को सहने की क्षमता उसमें नहीं होती। ऐसे समय उसे सहानुभूति की, अपनेपन की जरूरत होती हैं संवेदनाहीन समाज में उसकी जरूरत जब पूरी नहीं होती, तब समाज को आकर्षित करने के लिए भानमती का सहारा लिया जाता है। भानमती के दुष्कृत्य चोरी-छिपे, कभी पूरे होशोहवास में तो कभी मन की सुप्त इच्छाओं से प्रेरित होकर अनजाने ही किए जाते हैं। ऐसे व्यक्ति मानसिक स्तर पर असामान्य (सायकोलॉजिकल माल अडजेस्ट) अथवा अप्राकृतिक या विकृत (ऑबनॉर्मल) होते हैं। प्रेम या सहानुभूति को गलत मार्ग से प्राप्त करना मानसिक बीमारी का लक्षण होता है, जो समाज को हानि पहुंचाता है। भानमती के संदर्भ में विशेष बात यह है कि ऊपरी तौर पर सताने वाली इसकी घटनाएं प्रत्यक्ष घटित नहीं होतीं। कपड़ों में आग लगती है, लेकिन उसे पहनने वाला व्यक्ति नहीं लगता। अलमारी में रखी हुई फुटकर चीजें बाहर आती हें, मूल्यवान चीजें अंदर ही रहती हैं। वस्तुएं गायब होती हें, लेकिन वापस मिल भी जाती हैं। इसमें यह पता चल सकता है कि भानमती करने वाले व्यक्ति को उसके कृत्यों का होश नहीं होता।

भानमति की घटना का पर्दाफाश कैसे किया जाए ?

भानमति की जांच-पड़ताल करते समय वैज्ञानिक सिद्धांत यह है कि 'कोई भी चीज किसी भी भौतिक शक्ति के बिन 1 मिलीमीटर भी हिल नहीं सकती।' कार्य-कारिण भाव के बिना कुछ भी अपने आप घटित नहीं होता। अकारण पत्थर नहीं गिरते। हर घटना के पीछे मनुष्य का हाथ होता है। यह रासायनिक, जैव रासायनिक, यांत्रिक करामातें होती हैं। इन बातों पर ध्यान न देते हुए भानमती की रहस्यात्मक व्यवस्था के पीछे उसके अनुसंधान से इनकार कर यह कुछ बाहरी पीड़ा है, ऐसा भ्रम पैदा किया जाता है। भानमती को खत्म करने का मतलब उसका भंडाफोड़ करना है। इस काम के लिए चौकन्नी वृत्ति और तर्कशुद्ध विचारों की जरूरत होती है।

भानमती की दौ सौ से अधिक घटनाओं के पीछे किसका हाथ है, यह समिति जान चुकी है। दूरदृष्टि रखने वाला कोई भी समझदार व्यक्ति यह जान सकता है। इस काम के लिए समिति ने एक पद्धति तैयार की है। वह इस प्रकार हैः

1. भानमती की घटनाएं बंद करने के लिए जब लोग हमारे पास आते हैं और हमसे विनती करते हैं तब उनसे यह लिखति प्रतिज्ञा पत्र लेना चाहिए-'इसके बाद भानमती को रोकने के लिए किसी भी मांत्रिक को बुलाया नहीं जाएगा। समिति को पूरा सहयोग दिया जाएगा। समिति द्वारा दी गई सूचनाओं का पालन किया जाएगा। जरूरत पड़ने पर प्रेस अथवा पुलिस के पास जाने की अनुमति ली जाएगी।'

भानमती की प्रथम घटना से लेकर सारा ब्यौरा विस्तार से समिति को दिया जाए, जैसे-घटना कहां, किस तारीख को, कितने बजे घटित हुई, घटित होते समय कोई देखने वाला है या नहीं, खबर किससे मिली, ऐसी दुर्घटनाओं को टालने के लिए कौन से उपाय किए गए हें, उससे कोई परिवर्तन

हुआ या नहीं, आदि।

2. भानमती का पता लगाने के लिए संबंधित घर में जाने के बाद समिति के सदस्यों द्वारा परिवार के हर सदस्य की, स्वतंत्रता से बंद कमरे में पूछताछ होगी-चाहे वह महिला हो या युवा या वृद्ध।

3. जांच करने वाले समूह में 4 या 5 व्यक्ति हों। उनमें एक प्रगल्भ महिला हो। पूछताछ कौन करेगा, यह पहले से ही तय हो। किसी के काम में कोई दखलंदाज न दे। पूछताछ के समय की बातचीत रेकॉर्ड की जाए। पूछताछ वृद्ध व्यक्ति से शुरू हो। युवाओं को अंत में संबोधित किया जाए।

4. पूछताछ शुरू करने से पहले घर का ठीक तरह से निरीक्षण करें। संभव हो तो उसका नक्शा सामने रखें।

5. पूछताछ उचित दिशा में हो। आवश्यकता के अनुसार कुछ व्यक्तियों से दो बार पूछताछ हो। परिवार के सभी सदस्यों में होने वाली संसंगति, विसंगति को ढूंढ लें। अंतर्कलह को ढूंढ लें। व्यक्ति के चेहरे पर होने वाले हावभाव, उसकी चंचलता को देखते हुए निष्कर्ष तक पहुंचना ही जांच-पड़ताल की सही दिशा होती है। कुछ मामलों को अनुभवी कार्यकर्ता के साथ स्वतंत्रता से उठाएं।

6. पूछताछ, निरीक्षण, समूह-चर्चा के माध्यम से अधिकतर यह पता चल जाता है कि भानमती कौन करवाता है। शक के अनुसार उस व्यक्ति को बंद कमरे में बिठाकर उसे सख्ती से ऐसी ऊलजूल हरकतें न करने की हिदायत दी जाए, इतना ही काफी है। जरूरत के अनुसार इस व्यक्ति का मानसोपचार विशेषज्ञ से इलाज करवाइए। वे उस व्यक्ति की मानसिकता की जांच कर हमारे हवाले कर देते हैं।

7. भानमती के नाााम से दुष्कृत्य करने वाले व्यक्ति को ढूंढ लिया जाता है। कभी-कभी वह अपना गुनाह कबूल नहीं करता। इससे समाज के लिए उसका खतरा वैसे ही बना रहता है। जांच करने वाले सदस्यों की असफलता की चर्चा होती है। ऐसी स्थिति में उस व्यक्ति को घटनास्थल से दूर रखना चाहिए। घर के लोग कभी-कभी उसे दूर रखने के लिए तैयार नहीं होते। उन्हें अपने ही घर के सदस्यों को दोषी ठहराना नागवार लगता है। संभाव्य खतरों को टालने के लिए पुलिस अथवा प्रेस से संपर्क करें तथा दी हुई सूचनाओं पर अमल करना जरूरीक है, बल्कि उसकी लिखत अनुमति उपयुक्त होती है।

8. भानमती करने वाले व्यक्ति के साथ कैसा बर्ताव करना चाहिए यह उस परिवार के सदस्यों को बताना जरूरी होता है। भानमती करने वाले व्यक्ति का पता लगने पर, इस मामले में जिन लोगों को समस्याओं का सामना करना पड़ता है, वे लोग उसके प्रति तिरस्कृत होकर उसे सजा देने की भूमिका में होते हैं। बदले की भावना से उसके साथ बुरा बर्ताव करने की संभावना होती है। लेकिन पीड़ित व्यक्ति पहले से ही मानसिक समस्या से ग्रस्त होता है। उसके साथ तिरस्कार एवं उपेक्षा से पेश आने के बाद उसकी मानसिकता और भी बिगड़ने की संभावना होती है। अगर उसके साथ समझौते का दृष्टिकोण रखा जाए, उसकी समस्या का निराकरण करने का प्रयत्न किया जाए तो भविष्य में कोई समस्या नहीं होती। इसलिए परिवार के लोगों को सूचित करके उस व्यक्ति को मानसोपचार विशेषज्ञ के पास ले जाना अधिक उचित होता है।

9. भानमती के करतूतों को दोबारा जारी रखने की संभावना उस व्यक्ति से हो सकती है। इसकी सूचना उसके परिवार के लोगों को देनी चाहिए।

10. भानमती करने वाले व्यक्ति को जनसंचार माध्यमों से दूर रखना चाहिए, वरना बात का बतंगड़ बनकर मामला और भी उलझ सकता है। ऐसे मामलों के दुष्परिणामों को टालने के लिए यह समझना जरूरी है कि ऐसा करने वाले व्यक्ति की समस्या क्या है और उसका समाधान कैसे किया जाए।

(लेखक की पुस्तक 'अंधविश्वास उन्मूलन विचार से')

''प्रकृति सभी कार्य खुद-ब-खुद करती है, अपने आप ही, बिना किसी ईश्वर अथवा देवता की दखल-अंदाजी से।''

-टाईट्स लुक्रीटियस कारूस

एक बहुआयामी व्यक्तित्व वाले डॉ. श्रीराम लागू

*(महाराष्ट्र अंधश्रद्धा निर्मूलन समिति के पूर्णकालिक कार्यकर्ता व 'अंधश्रद्धा निर्मूलन वार्तापत्र' मासिक पत्रिका के प्रबंध संपादक और प्रकाशक **राहुल थोरात** द्वारा लिखिति डॉ. श्रीराम लागू के व्यक्तित्व पर प्रकाश डालता यह लेख विशेष रूप से प्राप्त हुआ है। 17 दिसंबर, 2019 को डॉ. लागू की मृत्यु पर उन्हें श्रद्धांजलि स्वरूप यह लेख पाठकों समक्ष प्रस्तुत है)*

प्रसिद्धि के शिखर पर विराजमान इंसान ने आंदोलन के लिए कारागृह की राह चुनना, यह डॉ. लागू का बड़प्पन हैं। प्रसिद्धि के केंद्र में रहने वाले कुछ लोग केवल बोलने वाले सुधारक होते है। उन की कोशिश रहती है कि वे आंदोलन के चक्कर में ना पड़ें। लेकिन आंदोलन के लिए, स्त्री-पुरुष समता के आग्रह के लिए कारागृह जाने वाले डॉ. लागू क्रियाशील सुधारक थे।

उन्नीस सौ नब्बे के दशक में अंधविश्वास उन्मूलन का आंदोलन महाराष्ट्र के ग्रामीण क्षेत्रों में ले जाने का श्रेय निलू फुले और डॉ. श्रीराम लागू इस जोड़ी को जाता है। डॉ. नरेंद्र दाभोलकर ने निलू भाऊ और डॉ. लागू के प्रसिद्धि वलय का उपयोग कर के ग्रामीण क्षेत्रों में महाराष्ट्र अंधश्रद्धा निर्मूलन समिति (अंनिस) के कई कार्यक्रम आयोजित किए। इन प्रसिद्ध व्यक्तियों को देखने के लिए लोगों की भीड़ जमा हो जाती थी और डॉ. नरेंद्र दाभोलकर उस भीड़ को अपना अंधविश्वास उन्मूलन का विचार कथन करते थे। निलू भाऊ का क्रेझ ग्रामीण क्षेत्रों में ज्यादा था। और डॉ. लागू का क्रेझ शहरी क्षेत्रों में था। इस कारण दोनों क्षेत्रों के दर्शक अंधविश्वास उन्मूलन की बैठक के श्रोता के रूप में इकट्ठा होते थे।

डॉ.दाभोलकर-लागू : 'वाद-संवाद' कार्यक्रम में डॉ.दाभोलकर-लागू वाद-संवाद कार्यक्रम

डॉ. श्रीराम लागू प्रखर बुद्धिवादी थे। उन की भूमिका यह थी की, 'ईश्वर को रिटायर किया जाए', लेकिन डॉ. दाभोलकर की भूमिका यह थी कि, देश के संविधान ने सभी को उपासना की आजादी दी है, इस कारण हमारा विरोध देव-धर्म को नहीं, बल्कि देव धर्म के नाम पर होने वाले शोषण का हम विरोध करते हैं।

'एक बार डॉ. नरेंद्र दाभोलकर ने चिपलून (महाराष्ट्र) में डॉ. लागू से साक्षात्कार (इंटरव्यू) किया। डॉ. लागू ने अपनी स्पष्ट और तर्क संगत शैली में ईश्वर के बारे में राय व्यक्त की। यह साक्षात्कार काफी प्रसिद्ध हुआ था। उस समय उन्हों ने कहा था, 'अगर फुर्सत मिलती है तो मेरी राय पूरे महाराष्ट्र में खुले आम व्यक्त करने की मेरी इच्छा है। उस के बाद ढेर सारी गालियाँ भी झेलने की तैयारी मैंने की है।"

बाद में दाभोलकर ने 'वाद-संवाद' इस कार्यक्रम का नियोजन सम्पूर्ण महाराष्ट्र में किया और विवेक-जागरण का यह वाद-संवाद सारे महाराष्ट्र में होने लगा। इस विवेक-जागरण के सैकड़ों कार्यक्रम अंनिस के कार्यकर्ताओं ने गाँव-गाँव आयोजित किए। इस कार्यक्रम का उपयोग अंधविश्वास उन्मूलन का काम बढ़ाने के लिए संगठन को हुआ। इस कार्यक्रम में कई बार धर्मांध संगठनों ने गड़बड़ी भी की। एक जगह तो डॉ. लागू और दाभोलकर पर हमला भी किया गया। लेकिन डॉ. लागू डगमगाये नहीं। उन्हों ने निर्भयता के साथ ये कार्यक्रम महाराष्ट्र में प्रस्तुत किए।

कार्यकर्ताओं के घर डॉ. लागू की भेंट

डॉ. लागू और डॉ.नरेंद्र दाभोलकर वाद-संवाद कार्यक्रम के लिए गाँव-गाँव भ्रमण करते थे। जिस गाँव में कार्यक्रम हुआ करता था, उस गाँव के अंनिस कार्यकर्ता के घर डॉ. लागू नाश्ता, भोजन लेते थे। इतने बड़े कलाकार होने के बावजूद, कभी खाने-रहने के बारे में कोई भी शर्त रखे बिना कार्यकर्ता ने जो व्यवस्था की है, उस में वे आनंद मान लेते थे। डॉ. दाभोलकर जानबूझकर डॉ. लागू को अंनिस कार्यकर्ता के घर ले जाते थे। उस समय डॉ. लागू अनिस कार्यकर्ताओं के सामाजिक काम की सराहना उस के परिवार के सदस्यों के सामने करते थे। परिवार के

साथ फोटो खिंचवाते थे। इस कारण परिवार के व्यक्तियों में कार्यकर्ता के कार्य के बारे में और ज्यादा आदर निर्माण होता था। डॉ. लागू के गृह-भेंट के कारण कार्यकर्ताओं का परिवार उत्साहित होता था। इस कारण कार्यकर्ताओं को अंनिस का काम करने के लिए ज्यादा गुंजाइश मिलती थी।

कार्यकर्ताओं के घर जा कर संवाद साधते हुए डॉ. लागू

अंनिस के अधिवेशन में उपस्थिति

हर दो वर्ष बाद अंनिस के राज्य स्तरीय अधिवेशन महाराष्ट्र के विविध क्षेत्रों में होते थे। उस समय प्रत्येक अधिवेशन के लिए डॉ. लागू उपस्थित रहा करते थे। सफर कितने भी दूर का हो, वे संगठन पर अपने प्रेम के खातिर स्वयं खर्च कर के आते थे। उन्होंने अंनिस से यात्रा व्यय के लिए कभी भी एक रुपया भी नहीं लिया है। मानदेय की तो कोई बात ही नहीं थी। अधिवेशन के लिए आ आने के बाद कार्यकर्ता उन्हें एक सेलिब्रेटी रूप में नहीं बल्कि एक प्रखर बुद्धिवादी विचारक के रूप में देखा करते थे। वे भी कार्यक्रम में एक सामान्य कार्यकर्ता के रूप में पेश आते थे। किसी भी वी आई पी औपचारिकता की उन्हें अपेक्षा नहीं हुआ करती थी। अन्य वक्ताओं के भाषण वे ध्यानपूर्वक और समय निकाल कर सुनते थे।

अंनिस के विविध अधिवेशनों में वे अपनी बुद्धिवादी और नास्तिक भूमिका का अत्यंत अध्ययन पूर्वक समर्थन करते थे। वे कहते थे, 'मनुष्य का मस्तिष्क आज भी ८० प्रतिशत जानवर का ही है, इस कारण मनुष्य हिंसा करता है, द्वेष करता है और विवेकहीन बर्ताव करता है।' डॉ. लागू का भाषण सुनते हुए लोग मंत्रमुग्ध हो जाते थे। लागू अपना भाषण नियत समय में ही समाप्त करते थे, यह उन की एक विशेषता थी।

अंनिस के कार्य के लिए लागू की पहली जेल यात्रा

शनी शिंगणापुर के चबूतरे पर महिलाओं को प्रवेश नहीं दिया जाता था। इस के विरुद्ध, स्त्री-पुरुष समता के आग्रह के लिए डॉ. दाभोलकर के नेतृत्व में अंनिस ने राज्य व्यापी आंदोलन छेड़ दिया था। महिलाओं को ले कर शनि मंदिर में प्रवेश करेंगे, यह घोषणा दाभोलकर ने की। इस हेतु अंनिस के सैकड़ों कार्यकर्ता अहमदनगर में इकट्ठे हुए। वहाँ के एक मंगल कार्यालय में आम सभा हुई। इस सभा में अंनिस के अध्यक्ष प्रो. एन. डी. पाटील, डॉ. बाबा आढ़ाव, प्रो. पुष्पा भावे, व्यंकट अण्णा रणधीर जैसे कई मान्यवर सहभागी हुए। इस सभा के बाद शनि शिंगणापुर की ओर सभी ने प्रयाण करना तय हुआ। पुलिस ने कानून और सुव्यवस्था का कारण बता कर सत्याग्रह आंदोलन के लिए अनुमति अस्वीकार की। लेकिन सत्याग्रही, महिलाओं को शनि शिंगणापुर ले जाने पर अटल थे। ऊपर उल्लेखित मान्यवरों का पहला गुट शनि शिंगणापुर जाने के लिए सभागृह से बाहर निकल पड़ा। उन्हें पुलिस ने तत्काल गिरफ्तार कर लिया और न्यायालय के समक्ष उपस्थित कराया। सभी सत्याग्रहियों ने जमानत लेने से इनकार किया। इस कारण विवश हो कर सभी को पुलिस अहमदनगर के कारागृह में ले गयी। अंनिस के इस आंदोलन के कारण डॉ. लागू को जेल की यात्रा करनी पड़ी। डॉ. लागू को कारागृह में देख कर कैदियों को लगा, शायद आज कारागृह में किसी फिल्म का शूटिंग किया जा रहा होगा। वहाँ के कारागृह अधिकारियों से इन मान्यवरों के साथ फोटो खिंचवाने का मोह रोका नहीं जा सका।

प्रसिद्धि के शिखर पर विराजमान इंसान ने आंदोलन के लिए कारागृह की राह चुनना, यह डॉ. लागू का बड़प्पन है। प्रसिद्धि के केंद्र रहने वाले कुछ लोग केवल बोलने वाले सुधारक होते है। उनकी कोशिश रहती है कि वे आंदोलन के चक्कर में ना पड़ें। लेकिन आंदोलन के लिए, स्त्री-पुरुष समता के आग्रह के लिए कारागृह जाने वाले डॉ. लागू क्रियाशील सुधारक थे। ऐसे इंसान के कारण ही अंनिस की जन-मानस में छवि ज्यादा उज्ज्वल होती है।

सामाजिक कार्यकर्ताओं के मानदेय के लिए प्रयास महाराष्ट्र में विविध प्रगतिवादी आंदोलन के कार्यकर्ताओं को कुछ अल्प मानदेय देना संभव हो इस लिए एक बड़ा निधि स्थापित करने के लिए 'सामाजिक कृतज्ञता निधि' इस संस्था की स्थापना हुई। उस के प्रथम अध्यक्ष के पद पर डॉ. श्रीराम लागू थे तथा सचिव पद पर डॉ. नरेंद्र दाभोलकर थे। इस संस्था के लिए निधि स्थापित करने के लिए डॉ. लागू के साथ निलू फुले, सदाशिव अमरापुरकर, रीमा लागू, रोहिणी हट्टंगड़ी इन कलाकारों ने बिना

मानदेय 'लग्नाची बेडी' इस नाटक के शो पूरे महाराष्ट्र में किए। इस नाटक से प्राप्त लाभ इस निधि के लिए दिया। फिर भी इस निधि को पैसों की और जरूरत थी, इस लिए डॉ. दाभोलकर ने स्कूल के छात्रों से निधि संकलन करने की कल्पना प्रस्तुत की। इस कार्यक्रम को 'एक उपवास कृतज्ञतेचा' (एक उपवास कृतज्ञता का) यह नाम दिया। छात्रों ने एक समय उपवास कर के उस से बचे हुए पैसे निधि के लिए देना, इस प्रकार यह कल्पना थी। इस हेतु डॉ. लागू को साथ ले कर दाभोलकर ने सातारा जिले के छः सौ प्रधानाध्यापकों की बैठक बुला कर इस काम हेतु प्रधानाध्यापकों को राजी किया। डॉ. लागू इस बैठक में उपस्थित रहे इस कारण सभी प्रधानाध्यापकों ने यह काम सहर्ष करना तय किया और सातारा जिले से पूरे 25 लाख रुपयों का निधि इकट्ठा हुआ। अपने प्रसिध्दि वलय का उपयोग सामाजिक कार्य के लिए करा देने वाले लागू हमारे कार्यकर्ताओ के लिए एक प्रेरक व्यक्तित्व थे।

लागू के हाथों कार्यकर्ताओं के विवाहः

महात्मा फुले द्वारा शुरू किए गए 'सत्यशोधक विवाह' (किसी पंडित या धार्मिक कर्मकांड के बिना किया जाने वाला आसान विवाह) का अभियान अंनिस ने फिर एक बार महाराष्ट्र में पुनरुज्जीवित किया। अंनिस के सैकड़ों कार्यकर्ताओं के, कुछ कार्यकर्ताओं के लड़के-लड़कियों के विवाह कोई भी धार्मिक विधि ना करते हुए आसान पद्धति से किए जाते थे। इस विवाह में वधू और वर को सहजीवन समता के साथ जीने की शपथ दिलाई जाती थी। यह शपथ डॉ. लागू या निलू भाऊ (निलू फुले) द्वारा ही दी जाए, यह आग्रह कार्यकर्ता डॉ. दाभोलकर से करते थे। दाभोलकर भी ऐसे विवाहों के लिए डॉ. लागू और निलू भाऊ को महाराष्ट्र के विविध ग्रामों में ले जाया करते थे। नेवासा के हमारे कार्यकर्ता बाबा आरगडे के लड़के के शादी में वधु-वर को शपथ डॉ. लागू ने ही दी और इस विवाह का पौरोहित्य किया। उस समय उन्होंने मजाक में कहा, 'मैं पौरोहित्य कर के लूटने वाला ब्राह्मण नहीं हूँ, एक नास्तिक इंसान से आप ऐसे धार्मिक काम करवा रहे हैं, यह ठीक नहीं है। लेकिन ये विवाह महात्मा फुले द्वारा कथित सत्यशोधक पद्धति से हो रहे हैं, इस कारण मैं यह पौरोहित्य सहर्ष कर रहा हूँ।"

अंनिस की ओर से आगरकर पुरस्कार :

महाराष्ट्र अंधश्रद्धा निर्मूलन समिति हर वर्ष एक मान्यवर को 'सुधारक' कार गोपाल गणेश आगरकर पुरस्कार प्रदान कर के उन का सम्मान करता हैं। डॉ. लागू पर आगरकर के विचारों का काफी प्रभाव था। 'इष्ट हो वह ही बोलेंगे और साध्य हो वह करेंगे' आगरकर के इन विचारों का प्रभाव डॉ. लागू के व्यक्तित्व पर भी था। डॉ. लागू हमेशा अपने भाषण में आगरकर के अनेक उक्तियों का संदर्भ दे कर धर्मसत्ता द्वारा किए जाने वाले शोषण का विरोध करते थे। आगरकर की बुद्धिवादी विचारधारा मन ही मन जी रहे थे। इसी कारण वर्ष 2012 का महाराष्ट्र अंनिस का आगरकर पुरस्कार डॉ. लागू को प्रो. एन. डी. पाटील के हाथों और डॉ. आ. ह. सालुंखे की मुख्य उपस्थिति में सातारा में प्रदान किया गया। उस समय डॉ. लागू ने आगरकर पर किया हुआ भाषण बहुत अध्ययन-पूर्ण था।

अंनिस के कार्यकर्ताओं की सराहना :

महाराष्ट्र अंधश्रद्धा निर्मूलन समिती का मुखपत्र 'अंधश्रद्धा निर्मूलन वार्तापत्र' यह मासिक पत्रिका पिछले 30 वर्षो से सांगली से प्रसिद्ध हो रहा है। वह महाराष्ट्र में सब से ज्यादा बिकने वाली मासिक पत्रिका के रूप में आज भी मशहूर है। इसे के लिए अभिदाता जोड़ने का काम अंनिस के कार्यकर्ता बिना शुल्क करते हैं। सौ अभिदाता लाने वाले कार्यकर्ताओं का गौरव डॉ. दाभोलकर हर वर्ष निलू भाऊ और डॉ. लागू के हाथों करवाते थे। कार्यकर्ताओं की सराहना करने के लिए डॉ. लागू आते थे। उस समय लगभग 50-60 कार्यकर्ताओं का गौरव करने के लिए डॉ. लागू घंटा-डेढ़ घंटा मंच पर खड़े रहे, बिना किसी थकावट के कार्यकर्ताओं को सम्मान चिन्ह प्रदान करते थे। उन से वे कहते थे, ''आप कार्यकर्ता अभिदाता जोड़ने का रिवार्डिंग काम करते हैं, इस कारण मैं आप का आदर करता हूँ।" डॉ. लागू के हाथों सम्मान हो जाने पर कार्यकर्ता उत्साहित हो जाते थे और ज्यादा मेहनत कर के और अभिदाता जोड़ने के लिए उन्हें प्रेरणा मिलती थी।

युवाओं के हाथ में अंनिस आंदोलन

(शेष पृष्ठ 28 पर.)

वैज्ञानिक मानवतावाद के कुछ मूल प्रश्नः –एक इंटरव्यू

(यह लेख काल्पनिक इंटरव्यू के आधार पर तैयार की गई है जिसका मुख्य उद्देश्य अपने साथियों और जनता के बीच वैज्ञानिक मानवतावाद के बारे में सही संदेश को पहुंचाना है। तो पढ़िए और खुद अपने तर्कों व अनुभवों के आधार सही-गलत का निर्णय लीजिये।)

प्रश्नः आप किस धर्म को मानते हैं?

उत्तरः हम किसी स्थापित धर्म को नहीं मानते और उनके मतों और सिद्धांतों के मामले में हम निरपेक्ष दृष्टि रखते हैं। हमारे लिए मत पंथ जिनकी बहुसंख्य बातें कट्टर और अवैज्ञानिक है, अस्वीकृत है। धर्म का अर्थ अगर चारित्रिक उन्नति, प्रेम का बिना किसी भेदभाव के विस्तार है और धरती के जीवन को सम्पूर्ण रीति सुखी बनाने का प्रयास है तो हमारा कोई भेद नहीं। लेकिन धर्मों का इतिहास और वर्तमान इसके उलट ही है इसलिए तार्किक रूप से वे सभी अयोग्य है।

प्रश्नः तो क्या आप सभी धर्मों के विरोधी हैं?

उत्तरः हम उन समस्त वादों और मान्यताओं का विरोध करते हैं जो कि किसी अलौकिक सत्ता में विश्वास करती हैं और मनुष्य मनुष्य को आपस में किसी भी लेबल के आधार पर बाँटती है।

प्रश्नः अगर ईश्वर नहीं है तो धरती को किसने बनाया? यह सारा ब्रह्मांड कौन चला रहा है?

उत्तरः ब्रह्मांड का बनना और चलना एक प्राकृतिक घटना है। इसकी उत्पत्ति पर अभी विज्ञान रिसर्च कर रहा है परंतु अब तक प्रचलित थ्योरीज में बिग बैंग थ्योरी सर्वाधिक स्वीकृत है तथा उसमें भी समय के साथ अधिक तर्कपूर्ण बातें सामने आ रही है। अतः हम भी इसी अनुसार इसकी व्याख्या करते हैं। क्योंकि अगर इस ब्रह्मांड का बनाने वाला कोई ईश्वर होता तो उसे किसने बनाया यह प्रश्न फिर भी शेष रहता? और अगर जो यह मानते हैं कि उसको किसी ने नहीं बनाया। वह अपने आप प्रकट हुआ तो फिर इस हिसाब से ब्रह्मांड को अपने आप प्रकट होने वाला भी माना जा सकता है।

प्रश्नः लेकिन जगत की हर चीज जैसे टेबल कुर्सी आदि सभी का कोई न कोई बनाने वाला होता ही है?

उत्तरः देखो जगत में किसी चीज का बनना दो प्रकार से होता है-एक तो किसी व्यक्ति द्वारा दूसरा प्राकृतिक घटनाओं के संयोग से। कारपेंटर कुर्सी बनाता है, टेबल बनाता है लेकिन एक बार बनने के बाद वह टेबल कुर्सी नित्य बढ़ते घटते नहीं रहते, लेकिन ब्रह्मांड कोई ऐसा नहीं है कि पहली बार जैसा बना अब तक वैसा ही है। वह प्रतिक्षण बढ़ रहा है फैल रहा है। निरंतर परिवर्तनशील ह। जैसे दूध से दही कोई व्यक्ति नहीं बनाता, वह तो दही के जीवाणु की दूध के साथ क्रिया का परिणाम है, ऐसे ही विश्व की उत्पत्ति और जीवन भी प्राकृतिक रासायनिक एवं जैविक घटनाओं का परिणाम है।

प्रश्नः लेकिन अनेकों संतो ने ईश्वर की शक्ति से चमत्कार किए हैं उनका क्या?

उत्तरः अव्वल तो हम चमत्कारों में यकीन नहीं रखते और अब तक जहां भी चमत्कार पकड़े गए वहां 99% हाथ की सफाई और विज्ञान के नियम ही थे और बाकी 1% घटनाएं जिन्हें सामान्य रूप से नहीं समझा जा सकता वह भी आगे चलकर विज्ञान के दायरे में आ जाएंगी। और अगर चमत्कार ही देखने हो तो विज्ञान के देखो जो कि सभी के सामने प्रत्यक्ष भी है और परीक्षण के- क्या इंसान का एक साथ झुंड में बैठे-बैठे हवा में उड़ना, महल जैसे विशाल जहाजों का पानी पर तैरना क्या किसी चमत्कार से कम है, बटन दबाते ही हजारों किलोमीटर दूर चल रहे क्रिकेट मैच के स्कोर अपने सामने हाजिर कर लेना क्या इसे भी हम चमत्कार ही कहेंगे! विज्ञान कभी भी अपनी उपलब्धियों को चमत्कार नहीं कहता। वैज्ञानिक, इन ढोंगी बाबाओं के समान अहंकारी और दुष्ट नहीं हैं। चमत्कार के नाम पर सिर्फ ढोंगी अपनी जेबें गर्म करते हैं और जनता को

मूर्ख बनाते हैं।

प्रश्नः लेकिन आज भी अलौकिक सिद्धियों का दावा करने वाले पीर फकीर और साधु दुनिया में मौजूद हैं ?

उत्तरः जो लोग अलौकिक शक्तियों का दावा करते हैं, उन से हमारा कहना है कि भारत-पाकिस्तान की सीमा पर जाकर क्यों नहीं अलौकिक शक्तियों के द्वारा दुश्मनों का नामोनिशान मिटा देते हैं, देश के लाखों अस्पतालों में मरीज तरह-तरह की बीमारियों से ग्रस्त होकर दम तोड़ रहे हैं क्यों नहीं वहां जाकर उनकी बीमारियां दूर करते हैं? जो अलौकिक शक्तियों से आपको धन संपन्न बना सकते हैं, वे खुद क्यों अपनी शक्तियों से स्वयं के लिए महल नहीं बनाते क्यों विज्ञापन देकर फीस लेकर होटलों में ठहरकर लोगों को मूर्ख बनाते हैं? महाराष्ट्र में अंधश्रद्धा निर्मूलन समिति के द्वारा पिछले 10 सालों से चमत्कार का वैज्ञानिक एवं सार्वजनिक प्रदर्शन करने वाले को लाखों रुपए का पुरस्कार घोषित हैं लेकिन आज तक कोई भी पीर फकीर या बाबा उनके सामने चमत्कार साबित करते हुए उस इनाम को नहीं ले सका ऐसा क्यों? चमत्कारों के नाम पर हमारी भोली-भाली जनता को सिर्फ ठगा जाता है और उनका धार्मिक शोषण किया जाता है।

प्रश्नः लेकिन इन धर्मो ने क्या मानवता का जरा भी भला नहीं किया?

उत्तरः ऐसा नहीं है धर्मो के द्वारा प्रत्येक क्षेत्र में कुछ अच्छे कार्य भी हुए हैं लेकिन इतिहास बताता है कि लंबे समय में धर्मो में आई अवैज्ञानिकता और कट्टरता ने मानवता समाज और विश्व का बहुत नुकसान भी किया है। ऐसी परिस्थितियों में धर्म-श्रद्धा, जाति और ईश्वर जैसे शब्दों का बहुत दुरुपयोग हुआ है इसलिए हमारे हिसाब से अब इनसे दूरी बनाए रखना ही बेहतर है।

प्रश्नः तो क्या हम सब लोग ईश्वर को मानना छोड़ दें?

उत्तरः हम ऐसा कोई आग्रह नहीं करते। संविधान में प्रत्येक व्यक्ति को उसकी मान्यताओं की छूट है, वह चाहे जिसे मान सकता है, लेकिन हमारा आंदोलन सारी अमानवीय, अवैज्ञानिक-धारणाओं के अस्वीकार का है फिर चाहे उसके रास्ते में कोई भी आ जाए। अगर आप अपने धर्मग्रंथों और ईश्वर को इन कसौटियों के विरुद्ध मानते हैं तो आप खुद ही असत्य का समर्थन करते है।

प्रश्नः तो क्या आप मंदिर मस्जिद तोड़ने जैसे हिंसात्मक कार्यों का समर्थन करते हैं?

उत्तरः बिल्कुल नहीं। हम अपना विरोध केवल तर्क विज्ञान और सार्थक बहस के द्वारा जताते हैं। हमारे आंदोलन में हिंसा का कोई स्थान नहीं है।

प्रश्नः तो क्या विज्ञान ने हमेशा मानवता का भला ही किया है?

उत्तरः हम ऐसा भी नहीं मानते गलत आदमी के हाथों में पड़ कर उसका दुरूपयोग भी हुआ है और आगे भी हो सकता है इसीलिए हम अपने दर्शन में विज्ञान को अनिवार्य रूप में मानवतावाद से जोड़कर देखते हैं। और मानवता का भला ही इस वैज्ञानिक मानवतावाद की कसौटी रहेगा।

प्रश्नः अगर परमात्मा नहीं है तो आत्मा के बारे में आप की क्या मान्यता है?

उत्तरः हम जिस प्रकार परमात्मा को अस्वीकार करते हैं उसी प्रकार आत्मा के अस्तित्व पर भी प्रश्नचिन्ह लगाते हैं। हमारा मानना है कि मनुष्य एक मनो-दैहिक (Psychosomatic) सम्मिश्रण है। इसके अलावा किसी तीसरे तत्व का वहां कोई स्थान और उसकी उपयोगिता ही नहीं है ।

प्रश्नः **लेकिन आत्मा ना हो तो मनुष्य के भीतर जो अच्छाई का रास्ता बताने वाली आवाज है वह कहां से आती है?'**

उत्तरः आपके अंदर से जितनी भी अच्छी बुरी आवाजें आती है वह आपके मन-मस्तिष्क का ही परिणाम है। चाहे वे एक दूसरे के विपरीत आती हुई लगे। ये आवाजे आप के बचपन के पालन-पोषण संस्कार और मान्यताओं के हिसाब से बदलती रहती है। इसलिए यह एक आत्मा जो कि सब में समान रूप से होनी चाहिए थी उसकी आवाज नहीं हो सकती।

इसे ऐसे समझेंः एक कट्टर जैन परिवार में पैदा हुआ बच्चा बड़ा होने पर जब कभी प्याज लहसुन खा लेता है तो उसकी आत्मा उसे कचोटती हुई आवाज देती है, लेकिन वही ऐसी कोई आवाज हिंदू को प्याज खाते वक्त नहीं आती। एक वैष्णव मुर्गी या

बकरे का मांस खाने की कल्पना भी नहीं कर सकता क्योंकि उसके अंदर की आवाज उसे कचोटती रहेगी लेकिन वही एक राजपूत या मुस्लिम परिवार में पैदा पैदा होता तो अन्य साग सब्जियों की भांति मांस खाने पर भी आत्मा के विरोध की कोई आवाज नहीं आती।

किसी के घर से जूते चुराने के बाद आपकी आत्मा से धिक्कार की आवाज अवश्य आती है लेकिन वही जूते की चोरी जब शादी में दूल्हे के पैरों से की जाती है तब अंदर से पछतावे की नहीं बल्कि शाबाशी की आवाज आती है। इन सब बातों से यह आसानी से समझा जा सकता है कि यह आवाज किसी तृतीय आत्मा तत्व की नहीं बल्कि हमारे ही संस्कारों में ढले मन की है।

प्रश्नः **क्या आपको लगता है कि विश्व के सारे लोग अपना धर्म मत और पंथ छोड़कर वैज्ञानिक मानवतावाद को अपना लेंगे?**

उत्तरः नहीं! हम यह मानते हैं कि संसार के प्रत्येक मनुष्य के पास अपना स्वतंत्र मस्तिष्क है और उसे उस के चुनाव की पूर्ण स्वतंत्रता होनी चाहिए। हमारी केवल यही इच्छा है कि विश्व स्तर पर हमारे मन में में विराट मानवता और इसके वैश्विक हितों को प्राथमिकता देने का दृष्टिकोण पैदा हो।

प्रश्नः ईश्वर का डर ना रहने से लोग अराजकतावादी और उन्मुक्त पशु हो जाएंगे?

उत्तरः भय और लोभ पर आधारित अपनाये अनुशासन का मूल्य दो कौड़ी का है। यही कारण है कि खुद को धार्मिक कहने वाले समाज में चारित्रिक पतन की सीमाएं भी पार होती देखी गई हैं। हमारा विश्वास धार्मिकता की जगह नैतिकता पर है जिसका पालन मनुष्य किसी अलौकिक सत्ता के डर से नहीं बल्कि अपने विवेक सामाजिक मूल्य एवं संवैधानिक कायदों के तहत करेगा। दुनिया के नास्तिकों में कई महान वैज्ञानिक, दार्शनिक, समाजसेवी, क्रांतिकारी, साहित्यकार, संगीतकार, लेखक, कलाकार, खिलाड़ी आदि रहे हैं। क्या ईश्वर और धर्म को न मानने के कारण यह अनैतिक और अराजकतावादी उन्मुक्त पशु हो गए थे?

प्रश्नः तो क्या होली, दिवाली, ईद, क्रिसमस जैसे धार्मिक त्यौहार नहीं मनाना चाहिए?

उत्तरः हम किसी त्यौहार के विरोधी नहीं है। यह आपका व्यक्तिगत मामला है। यदि त्यौहारों का उद्देश्य समाज में नई ऊर्जा का संचार करना, कुरीतियों को दूर करना, अंधविश्वास हटाना, सोचने समझने और मानवता की भलाई के लिए त्याग करने की प्रेरणा देना है तो आप उन्हें मना कर बहुत अच्छा काम कर रहे हैं। लेकिन हम त्यौहारों की खुशी के नाम पर पर्यावरण प्रदूषण, कुरीतियों के पालन, और वर्ग विशेष के अधिकारों के हनन का पुरजोर विरोध करते हैं। अफसोस इस बात का है कि हमारे बहुत से धार्मिक त्यौहार बड़े पैमाने पर चंदा उगाहने, पर्यावरण प्रदुषण करने और पूंजीवादी लोगों के उत्पादों का समर्थन करने का साधन बन चुके है। और यही हमारा विरोध है। बाकी समाज में नई ऊर्जा भर सके ऐसे त्यौहार तो हम भी मनाते हैं।

प्रश्नः आप किस तरह के त्यौहार मनाते हैं?

उत्तरः एक वैज्ञानिक मानवतावादी होने के नाते हम सारी विश्व मानवता को जोड़ने वाले, लाभ देने वाले त्यौहार मनाना पसंद करते हैं जैसे पर्यावरण दिवस, वसुंधरा दिवस, रक्तदान दिवस, अंगदान दिवस, विज्ञान दिवस, अंधश्रद्धा निवारण दिवस, सामाजिक संघर्षो के क्रांतिकारियों के जन्मदिवस और पुण्यतिथि, एड्स जागरूकता दिवस, नशा मुक्ति दिवस, बाल दिवस, युवा दिवस, देशों के स्वतंत्रता दिवस, गणतंत्र दिवस, मातृ दिवस, पितृ दिवस, रक्षाबंधन, मित्रता दिवस, टीचर्स डे जैसे बहुत से पर्व एवं दिन विश्व स्तर पर महत्व के एवं धर्म, जाति, भाषा, प्रांत की सीमा से मुक्त है हम उन्हें मनाने में सार्थकता समझते हैं।

प्रश्नः अगर कोई ईश्वर या धर्म के नाम पर सामाजिक समरसता फैलाएं और शांति एवं प्रेम करना सिखाए तब भी क्या आप उसका विरोध करेंगे?'

उत्तरः हमारे लिए वह प्रत्येक सिद्धांत स्वागत योग्य है जिसमें आवश्यक रूप से यह पांच शर्ते विशेषताएं मौजूद हैं

1. मनुष्य को किसी अलौकिक शक्ति के अस्तित्व से मुक्त करें।

2. नैतिकता से उपर अन्य किसी चीज को ना समझे।

3. समाज में वैज्ञानिक विचारधारा के रास्ते में

बाधक न बने।

4. मनुष्य की स्वतंत्रता में नैतिकता के उल्लंघन के अलावा अन्य रूप से दखल ना दें।

5. समानता, विश्वबंधुत्व, एकता और सद्‌गुणों का प्रेरक हो।

लेकिन दुर्भाग्य की बात है कि कोई भी पंथ संप्रदाय इन सभी सिद्धांतों का पालन नहीं कर पाता।

प्रश्नः आपमें और विशुद्ध मनमौजी में क्या अंतर है?

उत्तरः विशुद्ध मनमौजी अनिवार्य रूप अहंकार के साथ शुरू करता है उसकी धारणा में नकारात्मकता की झलक मिलती है। कई बार वह मानवतावाद तक को नहीं स्वीकार कर पाता और विशुद्ध रूप से स्वार्थ साधन और मौज उड़ाने की बातों को भी कह देता है। लेकिन हम इस प्रकार के दर्शन में यकीन नहीं रखते। हमें मानवता के प्रति उच्चतम बलिदान की भावना में व्यक्तिगत स्वार्थपरता से अधिक यकीन है।

प्रश्नः क्या आप राष्ट्रवाद में यकीन रखते हैं?

उत्तरः हाँ भी और नहीं भी। अगर विश्व संस्कृति के प्रश्न का मुद्दा है तो हमारा मानना है कि समस्त देशों को स्वयं की सीमाओं को विश्व राज्य के अस्तित्व हेतु विलीन कर देना चाहिए। इस धरती पर राष्ट्रों के पास पूरे विश्व को सुख शांति से भरने की सामग्री मौजूद है पर पृथक-पृथक देशों के नाम पर हमारी अधिकांश बुद्धिमत्ता, श्रम, शक्ति और संपदा युद्ध में लग जाती है। अगर जमीन पर खींची राष्ट्रों की यह लकीरें मिट कर सम्पूर्ण विश्व एक राष्ट्र बन सके तो यह सब बंद हो सकेगा।

जब तक ऐसा न हो सके तब तक हम राष्ट्रवाद में केवल इतना यकीन रखते हैं कि हमारे देश के सम्मान को बनाए रखना,ऊँचा उठाना, वहाँ के कानूनों का पालन करना, सभ्यता संस्कृति और मूल्यों का पालन करना, उस देश के संविधान का पालन करना एक नागरिक के नाते हमारा प्रमुख कर्तव्य एवं दायित्व है।

प्रश्नः क्या आपको नहीं लगता कि आपके विचार अव्यवहारिक हैं?

उत्तर प्रत्येक कठिन चीज पहले अव्यवहारिक ही लगती है। सदियों पहले मनुष्य के उड़ने की कल्पना और परखनली में भ्रूण पैदा करने की बातें भी अव्यवहारिक लगती थी लेकिन आज वह एक सत्य है। धर्मो, मत, पंथों, राष्ट्रों और भाषाओं के विलय और विश्व नागरिकता की बातें इस समय चाहे कितनी भी अव्यवहारिक लगे हैं उनका भविष्य सुनिश्चित है। इन सब में चाहे जितनी देर लगे है इन्हें अपनाए बिना विश्व का कोई भविष्य नहीं।

प्रश्नः सभी धर्मों में आज के समय याने कलयुग को बुरा समय कहा गया है आपका इस बारे में क्या कहना है?'

उत्तरः हमारा ऐसा मानना है कि मनुष्य जाति का कोई आदर्श काल ऐसा नहीं था जबकि एक ही समय पर यहाँ बहुत अच्छे और बहुत बुरे लोग मौजूद नहीं थे। चोरी, लूट वेश्यावृत्ति, हत्याएं, अनैतिकता, बीमारियाँ, मृत्यु पहले भी थी आज भी है। लेकिन पहले की अपेक्षा आज कुछ व्यक्तियों के जीवन स्तर में सुधार हुआ है, शिक्षा का प्रतिशत बढ़ा है, मृत्यु दर घटी है कई बीमारियों पर पूर्ण पर विजय प्राप्त हुई है। अच्छे लोगों को देश विदेश तक में मिलने-जुलने के सर्वाधिक अवसर बने हैं, जातिवाद कम हुआ है और खुलापन बढ़ा है जब ऐसे समय में सिर्फ कलयुग को ही बुरा समय कहने या मानने का कोई औचित्य नहीं। हमारा मानना है कि बहुसंख्य व्यक्ति जिस समय में अच्छे कार्य करें वही युग अच्छा है।

प्रश्नः सभी धर्म कलयुग के अंत में किसी अवतार पैगंबर याने मसीहा का इंतजार कर रहे हैं आपका क्या विचार है वह समय कब आएगा?'

उत्तरः ईसाइयत पिछले 2000 साल से नए मसीहा का इंतजार कर रही है, इस्लाम इमाम मेहदी के इंतजार में है, बौद्ध मैत्रेय बुद्ध की राह देख रहे है और हिन्दू कल्कि अवतार की लेकिन अब तक कोई नहीं आया। यहाँ भारत में भी अनेक लोग कई भगवानों या अवतारों के इंतजार में बैठे हैं इस बीच में न जाने कितने अवतार और भगवान गांव-गांव, शहर-शहर में पैदा होकर मर भी गए लेकिन कुछ नहीं बदला। हमारा मानना है कि श्रेष्ठ व्यक्तियों से यह धरती कभी भी रिक्त नहीं थी। प्रत्येक मनुष्य को अब यह बीड़ा स्वयं उठाना है। किसी कल्पित अवतार के इंतजार में हाथ पर हाथ रख कर बैठने से अच्छा है स्वयं को बदलें और अपने आसपास के परिवेश को बदलने के लिए काम करें।

प्रश्नः बहुत से धर्म पुनर्जन्म में विश्वास रखते हैं आपका क्या कहना है ?

उत्तरः इस संबंध में धर्मो के बीच में ही बहुत सा विवाद होता रहता है। अब्राहिमिक धर्म पुनर्जन्म के सिद्धांत में बिल्कुल विश्वास नहीं करते और उनके पास इसके लिए सभी वैज्ञानिक एवं ऐतिहासिक साक्ष्य एवं तत्व मौजूद हैं लेकिन वह भी यह बात विज्ञान के आधार धर्म के आधार पर मानते हैं। पूर्व के धर्म पुनर्जन्म, चौरासी के चक्कर और जन्म मरण के चक्र को अपने धर्म का एक महत्वपूर्ण अविभाज्य अंग मानते हैं और इसे वैज्ञानिक एवं ऐतिहासिक साबित करने के लिए पुरजोर दलीलें भी देते हैं। अब आप ही कहें एक ही समय में दो विरोधी बातें और दोनों ही वैज्ञानिक हों यह कैसे संभव है ?

वैज्ञानिक तौर पर पुनर्जन्म का मानना अब तक अंधकार में तीर चलाना है जिसका अस्तित्व अब तक प्रमाणित नहीं हो पाया है। यदा-कदा हमें जो घटनाएं और खबरें देखने को मिलती हैं उनमें गहराई से जांच करने पर वैज्ञानिक सत्यता कम और उथले संयोग और दिमाग की बीमारी और चेतन मन के विकार ही अधिक देखने को मिलते हैं। वैसे भी प्राकृतिक तौर पर जब आपको अपने पिछले जन्म की कोई बात याद ही नहीं रहती ना आप उन जन्मों को मानकर भी उनमें वापस जाकर कुछ सुधार कर सकते हैं तो उसे वास्तविक मारने से कोई विशेष लाभ नहीं।

प्रश्नः लेकिन पुनर्जन्म को मानने से भी तो कोई नुकसान नहीं है ?'

उत्तरः बड़े भारी नुकसान है। पुनर्जन्म का सिद्धांत आज के फल को पूर्व जन्म के कर्मो पर निर्भर बताता है जिसमें कोई परिवर्तन ही संभव नहीं है बस फल ही भुगतना शेष है। दूसरा बड़ा नुकसान है की यह मनुष्य को एक ही जन्म में सब कुछ कर गुजरने की प्रेरणा से रोकता है जब बार-बार जन्म होंगे तो इसी जन्म में सारे संसार की भलाई की इतनी जल्दी क्या परवाह करना। बार बार पैदा होते रहेंगे और थोड़ा थोड़ा करते रहेंगे। इसकी तीसरी बड़ी बुराई यह है कि यह मानव मानव के बीच संवेदनात्मक संबंध को तोड़ता है। दूसरा मनुष्य अगर गरीब और उत्पीड़ित है तो वह उसके किए गए कर्मो का फल भोग रहा है और मुझे उसके कर्म और फल के बीच में दखल क्यों देना चाहिए ऐसी मान्यता है पुनर्जन्म के सिद्धांत से ही पैदा होती है। उसके स्थान पर दूसरे मनुष्य के दुख एवं व्यथा इस समय समाज के अन्य शिक्षित एवं समृद्ध लोगों की मदद न मिलने के कारण ही हैं अगर यह सिद्धांत मान्य हो तो प्रत्येक मानव एक दूसरे की विपन्नता को दूर करने में सारी शक्ति लगा दे।

अगली बड़ी बुराई है पुनर्जन्म लेकर उसी परिवार घर कुटुंब में जन्म लेने की मिथकीय कल्पनायें क्योंकि इस स्थिति में व्यक्ति मरते समय भी अपनी धन संपदा को समाज के लिए खर्च करने की बजाए अपने बेटों पोतों के लिए छोड़ जाता है ताकि अगर उसका जन्म इसी परिवार में हो तो पारिवारिक संपत्ति के रूप में यही सब कुछ उसे वापस मिले।

पुनर्जन्म को मानने वाले लोग मरते समय अपने अंगों का दान करना भी गलत मानते है। उनके अनुसार इस जन्म में यह सारे अंग होने ईश्वर की कृपा से मिले थे और अगर इन एक दान करने पर ईश्वर बाद में अगले जन्म में उन्हें उस अंदर से रहित कर देगा जिसका उन्होंने दान किया है। इसके विपरीत जब आप इसी जन्म को प्रथम और अंतिम मानते हैं तो जाते-जाते आप अपने अंग मानवता की सेवा में समर्पित कर अनेकों वंचितों जिंदगी में खुशियां भर सकते हैं।

मरने के बाद सम्पत्ति को अपने स्वर्ग के लालच में पण्डे पुजारियों और चर्चो के नाम करने की जगह अगर गरीबों की दशा सुधारने के लिए दे दिया जाये तो विश्व का कितना कल्याण हो सकता है।

इन इन सभी तर्को के आधार पर देखने से हम मानते हैं कि पुनर्जन्म की धारणा संसार में दुखों और पीड़ा को कम नहीं बल्कि बढ़ावा ही देती है।'

(अध्यक्ष, जीवन जागृति शिक्षण संस्थान।
मो.-9410848459)

अनमोल वचन

'देशभक्ति लफंगों का अंतिम पनाहगाह होती है।'

--सेमुअल जॉनसन

विज्ञान के इतिहास से एक पन्ना

- **वेद प्रिय**
(हरियाणा विज्ञान मंच)

न्यूटन तक आते आते सौरमंडल की सूर्य केंद्रित व्यवस्था लगभग स्थापित हो चुकी थी। कीपलर ने नियम दिए थे लेकिन इसमें अभी बहुत कुछ करना बाकी था, जिनके आधार पर और गहरे तक जाना था। सौरमंडल में पिंडों का भार, अपेक्षाकृत दूरियां, इनका आकार आदि आदि महत्वपूर्ण जानकारियां अभी बाकी थी।

न्यूटन के मित्र थे एडमंड हेली। इनके नाम से धूमकेतु का नामकरण है। इसी से ये अधिक जाने जाते हैं। इन्होंने एक विचार दिया कि कैसे सूर्य से पृथ्वी की दूरी मापी जा सकती है। सूर्य ग्रहण से तो लोग पहले से परिचित थे। चंद्रमा के बीच में आने के कारण दूरियों की कुछ गणनाएं हो सकती थी। इन्होंने विचार दिया कि यदि कोई ग्रह पृथ्वी और सूर्य के बीच से गुजरे तो कुछ बात बन सकती है। यह केवल शुक्र ग्रह से ही संभव है। इसे हम शुक्र पारगमन कहते हैं। अपनी पीढ़ी पिछले कुछ वर्षों में इसका साक्षात नजारा कर चुकी है। शुक्र पारगमन का पहला उल्लेख हमें सन 1939 में वे पारगमन का मिलता है। इसके गवाह दो अंग्रेज व्यक्ति हैं, इरेमियाह और विलयम क्रेब ट्री। एडमंड हेली ने इनके अवलोकनों को पढ़ा । इन पर विचार कर हेली ने सन 1717 में एक पर्चा लिखा। उन्होंने अपने पर्चे में अपनी योजना लिखी। यदि पृथ्वी पर स्थित दो बिंदुओं (अधिक दूरी पर स्थित) से सूर्य की चकती के आगे से जाते हुए शुक्र ग्रह के मार्ग को चिन्हित किया जाए तो स्वाभाविक है कि दो अलग-अलग वक्र मार्ग दिखा देंगे। दोनों अवस्थाओं में शुक्र ग्रह का सूर्य की चकती को छूने और इससे अलग होने का समय भी भिन्न होगा। इन अवलोकनों की सहायता से कीपलर के नियम लागू कर कुछ परिणाम निकाले जा सकते हैं।

इन गणनाओं के आधार पर उनका एक कहना तो यही था कि अगला शुक्र पारगमन 6 जून 1761 को होगा। हेली की उम्र बड़ी हो चुकी थी। वे जानते थे कि वे इसे देखने तक के लिए जीवित नहीं रहेंगे। तो क्या उनकी योजना अधूरी रह जाएगी? इसलिए उन्होंने खगोलविदों से आग्रह किया कि वे आगे होने वाले शुक्र पारगमन को देखें। इससे आंकड़े जुटाएं और मेरी योजना अनुसार गणनाएं करें। वैज्ञानिक स्थिति को बेसब्री से इंतजार करने लगे। अंतराल लंबा था। फ्रांस और ब्रिटेन के वैज्ञानिकों ने पूरा मन बनाया हुआ था। वे मिलकर इसका अध्ययन करना चाहते थे।

एक अवांछित व्यवधान आ खड़ा हुआ। फ्रांस और ब्रिटेन इन्हीं दिनों 7 वर्ष 1756 से 1763 के लंबे युद्ध में उलझ गए। आवागमन कठिन हो गया। लेकिन वैज्ञानिकों की दिलचस्पी में कोई कमी नहीं आई। उन्होंने अपने-अपने स्थानों से निकलकर सुदूर क्षेत्रों को चुना। अंग्रेज वैज्ञानिक नेविल मस्केलाइन साईसैंट हेलेना की ओर निकले। जॉन विन्थ्रोप केनाडा पहुंचे। ऑस्ट्रीया वैज्ञानिक मैक्सीमिलियन ने नार्वे का रूख किया। फ्रांसीसी वैज्ञानिक अलेक्जेंडर गुल पिगरे मेडागास्कर के पास रोड रग चले गए। चैप डी ऑटरोच साइबेरिया की ओर कूच कर गए। डिक्सन और चार्ल्स मेसन (ब्रिटेन) ने सुमात्रा की राह देखी। लेकिन रास्ते में ही दक्षिण अफ्रीका रुकना पड़ा। फ्रेंच वैज्ञानिक गिलाउन जैंटिल दुर्भाग्यशाली रहे। ये भारत आना चाहते थे। ये पांडिचेरी तक पहुंच भी गए, परंतु युद्ध के कारण बंदरगाह पर उतरने की अनुमति नहीं मिली। इन्होंने सब्र किया। पूरे संसार से कुछ अवलोकन इकट्ठे किए गए।

इससे जुड़ा अगला शुक्र पारगमन 8 वर्ष बाद 1769 में होना था। इसके लिए वैज्ञानिकों ने योजना बनाई हुई थी। जेंटिल इस बार पांडिचेरी उतरने में सफल हो गए। इनका जनून देखिए यह अभी तक फ्रांस वापस नहीं लौटे थे। वे इस घटना को देखने के बहुत उत्सुक थे। दुर्भाग्य ने इनका पीछा नहीं छोड़ा। पारगमन से ठीक एक दिन पहले उन्होंने अपनी टीम के साथ अध्ययन करने की पूरी योजना तैयार कर ली थी। रात को ही बादल छा गए। वे इस घटना को देख पाने में इस बार भी असमर्थ रहे। ये 11 वर्ष बाद अपने वतन खाली हाथ लौट गए। इनके देशवासियों ने तो समझ लिया था कि वह अब इस दुनिया में होंगे ही नहीं ।

सब ओर से इकट्ठे किए हुए आंकड़े मिलाये गए। गणना शुरू हुई। फ्रांसीसी वैज्ञानिक जेरोन आलान्द पहले व्यक्ति थे, जिन्होंने सूर्य और पृथ्वी के बीच की दूरी की गणना की। इनके अनुसार यह 15.3 करोड़ किलोमीटर मापी गई। इसके साथ-साथ अन्य जगहों पर भी वैज्ञानिकों ने इन्हीं आंकड़ों से प्रयास किए। उन्होंने अलग किया। साइमन न्यूकॉम्ब ने गणना कर यही दूरी 14.97 करोड़ किलोमीटर निकाली। इससे सौरमंडल की अन्य गणनाएं सुगम हुईं।

भारत के प्रख्यात नास्तिक

गजानन माधव मुक्तिबोध

– डॉ॰ प्रभा दीक्षित

जब कभी मैं मुक्तिबोध के मानसिक द्वन्द्वों व अन्तर्विरोधों के पुनः पाठ से गुजरती हूं तो हतप्रभ रह जाती हूं। इस असफर आदमी के सफल साहित्य की मिसाल पूरी तरह न तो दोतोएवस्की से दी जा सकती है न निराला सें अपवनी अनपास्था पर मजबूत आस्था रखने वाला यह महान् लेखक नास्तिक था परंतु विज्ञान की सीमाओं से बाहर निकलकर बौद्धिक व्यायाम करने वाला यह चिंतक संवेदना की अति पर पहुंचकर उदारता के हिंडोले पर पारे की भांति, अस्थ्रिार अपने आप से मुठभेड़ करता लहुलुहान हो जाता था। मूर्तियों पर आस्था नहीं थी परंतु किसी मंदिर का सात्विक शांत वातावरण उसे प्रभावित करता था।आध्यात्मिक अनीश्वरवादी कहा जाये क्या? अनायास मुझे अपनी लिखी काव्य पंक्तियों याद आती हैं-

'मैं आस्तिक से बड़ी श्रद्धा
और नास्तिक से बड़ा तर्क तलाशती हूं
चाहती हूं वह बिन्दु
जहां श्रद्धा और तर्क
एक साथ ठहर सकें।
वह बिंदु....
न भगवान है
न शैतान
बस महज इंसान है.....'

कापका, आर्डी, शेक्सपियर, वर्ड्सवर्थ, टीत्र एव इलियट, टॉलस्टाय, दोतोएवस्की, वेलेन्सकी, गोर्की, नायकोवस्की, चेखव, प्रसाद, प्रेमचंद, निराला, पंत, तुलसीदास, कबीर सभी के पाजिटिव-निगेटिव्स से प्रभावित, उनपके पात्रों से स्वयं अपनी तुलना करना, उन्हें आत्मसात् करना एवं झिटककर दूर हो ॲन्टीथीसिस पर चिंतन, अच्छे से बेहतर के प्रयास में संलग्न, समाज और व्यक्ति के द्वैत में डूबी आत्मरति के साथ, अपनी लाश को कन्धों पर उठाये, क्रांतिपथ पर दौड़ने वाले इस असफल धावक की सफलता को कौन-सा सम्बोधन दूं? मुक्तिबोध की सबसे बड़ी ट्रेजडी यह थी कि वह स्वयं आप में वैचारिक रूप से अन्तर्विरोधों के केन्द्र थे। बुरो-अच्छे और बेहतर के द्वन्द्व ने उन्हें कभी भी चैन से बैठने नहीं दिया। वे अपने समकालीनों की भांति निर्णायक बन कर दिशा का चुनाव नहीं कर सके। शायद यही कारण है कि मुक्तिबोध अपने समकालीन लेखकों की भीड़ में अलग दृष्टिगत होते हैं। 13 नवम्बर, 1917 ई. को ग्वालियर में जन्में मुक्तबोध का बचपन एवं किशोरावस्था मध्यमवर्गीय समृद्धता के घेरे में सुरक्षित रही, जिसे वे अपनी सर्वहारा वर्गीय चेतना का अवरोध मानते रहे। सुख में पलने वाले बुद्ध ने जब पहली बार दुख देखा तो करुण-सविगलित हो राजसी वैभव त्यागकर संन्यासी हो गये किन्तु बुद्ध को आर्थिक रूप से पत्नी और बच्चों या मां-बाप के भरण-पोषण की चिन्ता नहीं थी, पर चाय या बीड़ी के सहारे जीने वाला यह संन्यासी कभी इस चिंता से मुक्त नहीं होसका।

यदि हम उस काल के प्रतिबद्ध लेखकों के जीवन पर दृष्टि डालें तो तीन तरह के चरित्र दृष्टिगत होते हैं। प्रथम वे जो अभाव में पले, बढ़े और अपने वर्ग के बेहतर जीवन के लिए प्रयास करते रहे। ऐसे लोग अपनी गरीबी या अभावों को अभिशाप नहीं समझ सके तथा बिना किसी फ्रस्टेशन या कॉम्प्लेक्स के अपने वर्ग के साथ निजी जीवन को भी बेहतर बनाने का प्रयास करते रहे। अपने निर्धारित लक्ष्य को पाने के लिए उन्हें किसी से कुछ पाने या मांगने में भी दीनता का अनुभव नहीं हुआ। वे दूसरों की सहायता को सहजता से स्वीकारते हुए अपने निर्धारित लक्ष्य की ओर बढ़ते रहे और अपनी लेखकीय क्षमताओं को बढ़ाते रहे। राहुल सांकृत्यायन, नागार्जुन आदि को हम इसी श्रेणी में रख सकते हैं। दूसरे वे थे जो यह मानकर चले कि सामाजिक उत्थान या मुक्ति के लिए अपने घर का बलिदान आवश्यक है। विश्व के करोड़ों बच्चों की मुक्ति के लिए अपना बच्चा कई बार खोना भी पड़ता है। अतः दो नावों में पैर नहीं रखना चाहिए। निराला जैसे लोग इसी कोटि में आते हैं। निराला से बहुत पहले कबीर को भी

जुलाहे का काम करना पड़ा था और 'सरोज-स्मृति' लिखने वाले निराला भी इसी पक्ष में बिल्कुल न सोचते हों, यह नहीं कहा जा सकता। इसके अतिरिक्त प्रतिबद्ध लेखकों (कवियों) की एक श्रेणी तनिक दूरदर्शी थी जो कूदने के पूर्व पानी की फव्वारा तलाश चुकी थी। वे सोचते थे बड़े लक्ष्य को पाने के लिए छोटे-मोटे समझौते कर लेने चाहिएं, तथा मुक्त होकर निर्धारित दिशा की ओर बढ़ा जा सकता है। डॉ. रामविलास शर्मा, नेमिचन्द्र जैन और यशपाल से लेकर अनेक लेखक इसी भावभूमि पर चलते रहे। कहना न होगा कि मुक्तिबोध उक्त तीनों कोटियों में शामिल नहीं किये जा सकते। मुक्तिबोध प्रारम्भ से ही अपने को 'डी-क्लास' करने के प्रयास में स्वयं अपने ही शत्रु बनते चले गये। आदर्शोन्मुख यथार्थ उनके संवेदनशील मस्तिष्क का सबसे बड़ा अन्तर्विरोध बना रहा। यथार्थ के पथ का यह दावेदार इस आदर्श की बांह थामें आगे बढ़ता रहा कि वर्ग की त्रासदी को तभी समझा जा सकता है जब उसी तरह जिया जाये। समझौताविहीन असमर्थ स्वाभिमान को जमाने की ठोकर विकलांग बना देती है। जहां धीमी गति से मृत्यु का वरण ही शेष रह जाता हैं और इस जीनियस आत्महन्ता लेखक ने वही किया।

कहा जाता है चीनी क्रांति के महानायक माउत्से तुंग जब दुश्मन के सैनिकों द्वारा पकड़ लिये गये तो उन्होंने उन्हें धन की घूस देकर अपने प्राणों की रक्षा की थी। मैं दावे के साथ कह सकती हूं कि मुक्तिबोध ऐसा कभी न करते या घूस देने के लिए उनके पास साधन ही न होता। एक लघुकथा के माध्यम से भी मुक्तिबोध की मानसिकता को आंशिक रूप से समझा जा सकता है। संस्कृत के एक विद्वान की पत्नी और बच्चे जब अभाव के कारण भूखों मरने लगे तो उन्होंने एक धनी दुकानदरा के गोदाम में चोरी करने का निर्णय लिया। वह नीतिशास्त्र की पुस्तक के साथ रात को दुकान में घुस गये और यह विचार करने लगे कि ऐसी चीज चुराऊं जिसको चुराने पर चोरी का दोष न लगे। वह अंधेरे में दीपक जलाकर पुस्तक देखते रहे। जिसमें आटा, दाल, चावल, मसाला, तेल, गुड़, घी सभी को चुराना वर्जित माना गया था। वे पूरी रात ऐसी चीज खोजते रहे जिसे चुराने में दोष न हो। इसी ऊहापोह में सुबह हो गई और वह विद्वान पकड़ लिये गये। मुक्तिबोध भी अपनी अभावग्रस्तता के साथ दुनिया को बेहतर बनाने की दुविधा, ऊहापोह या द्वन्द्व के शिकार रहे और अन्त में मृत्यु के द्वारा पकड़े गये। औचित्य की अति तक समझौताविहीन, भीषण अभावग्रस्त परिवार के प्रति कृर्तव्य-बोध क्रांतिकारी कार्य एवं लेखन के प्रति प्रतिबद्धता ये कुछ ऐसे परस्पर विरोधी आयाम थे जो उन्हें न तो ठीक से जीने देते थे और ना ही मरने की आज्ञा प्रदान करते थे। वर्तमान के कर्तव्य-बोध ने उनके भविष्य को विकलांग बना दिया। तनावपूर्ण चिंतन की अति किसी को भी मनोरोगी बना सकती है किंतु उस रूप में मुक्तिबोध मनोरोगी कभी नहीं रहे जिस रूप में डॉ. रामविलास शर्मा उन्हें देखते थे। मानव मन की गहराई में पैठकर सम्पूर्ण मानवता के साथ उसक मनोविश्लेषण क्या कोई मनोरोगी कर सकता है? काश, मुक्तिबोध पागल होते तो कुछ दिन शांति के साथ और जी लेते। लेकिन तब क्या कोई चीनी विद्वान, हिन्दी भाषा का ज्ञाता कवि यह कहता-'बार-बार मुक्तिबोध की कविताओं से गुजरते समय लगा है कि वह मानवता का, जीवन के ऊष्मामय पल का बड़ा कवि है।'

अपनी फतांसी के कल्पनालोक में मुक्तिबोध जो दुनिया तैयार करते हैं, क्या वह हवाई उड़ान है? यह लिखते हैं-

'गये युगों से नये युगों तक
गुजर रहे पथ बीच भयानक खाई आई
इस खाई के भयद अंधेरे में मर-खप कर
हमने अपने तन-मलन की दृढ़ता के पत्थर
ईटों से प्राणों के लोहे के गाटर से हृदय रक्त मस्तिष्क
रक्त के गारे चूने से भव्य बनाया
अति विशाल मजबूत एक पुल
अपनी आत्मा की नींवों पर उसे दिया बल
देह प्राण के लोहे के स्तम्भों पर थामा
बांहों के लोहे की मेहराबों पर तनकर
जमकर फैला वह प्रदीर्घ पुल।'

आगे की कविता के अनुसार लोक विरोधी लक्ष्यों की जीपें इस पुल से पार नहीं होंगी। यह पुल क्या है? मुक्तिबोध की रचना-संसार, एक संपूर्ण मानवीय संस्कृति जिसे कवि ने हृदय और मस्तिष्क के रक्त और गारे-चूने से निर्मित किया है। हृदय और मस्तिष्क का द्वन्द्व प्रारम्भ से अंत तक उनके साथ रहा। यह द्वन्द्व ही उनकी अच्छाई-बुराई या सफलता-असफलता का मूल रहा है। वह अपने प्रारम्भिक युवा काल के बारे में लिखते हैं-'यौवन का उन्माद मुझे दर्पण में अपना मुख देखने को

उत्साहित करता है, लगता है कंकड़ों पर ही चल रहा हूं। कंकड़ों पर पैर फिसल गया है। एक ही समय मे मैं कई आदमियों में रूपान्तरित हो जाता। एक सुख का सपना देखता। दूसरा सुनहरी यादों में घुलता जाता। तीसरा शुष्क तिनका बनकर धूल के सिर पर उड़ता। चौथा सोचता मेरा अणु-अणु परिवर्तित होने को छटपटा रहा है। मेरे ही अस्थिमानस से युवक का पांचवां रूप बनाता। कभी वह तरल अवसाद में दृग कोटर से अश्रु बहाता, कभी पतझर-सा उदास बनकर बिखर जाता, कभी कल्पित शूल-सा एक चेहरा मेरे पास आ जाता और मैं मरुभूमि-सा भीतर ही भीतर जलने लगता, कभी टॉलस्टाय का 'फादर सर्जिएस' उपन्यास पढ़कर सोचता, इस समय दुनिया में मूर्ख-महामूर्ख मैं ही हूं।'

सुखों की सेज पर दुखों की मरुभूमि की तलाश तब पागलपन कही जा सकती है, जब उसके पीछे कोई लक्ष्य न हो। सही लक्ष्य को समझौतों की गलत रोहों से प्राप्त न करने की आदर्शवादी जिद, अच्छे और बेहतर का द्वन्द्व, जोखिम से डरते हुए खेलना, मस्तिष्क के विरुद्ध हृदय की कमजोर चाह से लड़ना मुक्तिबोध का शुगल रहा है।

मुक्तिबोध के मानसिक द्वन्द्वों, अन्तर्विरोधों से गुजरते हुए प्रश्न उठता है। क्या मुक्तिबोध एक लेखक के रूप में सफल नहीं हो पाये ? क्या अपने समकालीन बुद्धिजीवियों के दंगल में पराजित रहे ? शायद मुक्तिबोध ऐसा मानते रहे। वे कभी अपनी मानसिक उलझनों एवं पारिवारिक परेशानियों से उबर नहीं पाये। कभी योजना बनाकर शांति के साथ क्रमबद्ध ढंग से लिख नहीं पाये। परंतु अपने समकालीनों पर सटीक सकारात्मक टिप्पणियों लिखनेवाला यह लेखक, जिसने एक व्यापक साहित्यिक संसार के साथ एक क्रांतिकारी महाकाव्य की रचना की; देशी-विदेशी साहित्यकारों की दृष्टि में अद्वितीय लेखक माना गया। हां, यह मान्यता उन्हें मरणोपरांत प्राप्त हुई जबकि कई दशक तक अपनी आलोचना की धाक जमाये रहने वाले डा. रामविलास शर्मा मरणोपरांत सर्वाधिक आलोचना के पात्र बने।

त्रासदी के सहारे उम्र गुजारने वाले मुक्तिबोध का जन्म 13 नवम्बर, 1917 को ग्वालियर राज्य के एक मराठी परिवार में हुआ था। उनके पिता एक ईमानदार पुलिस इंस्पेक्टर थे। 1917 के आसपास ऐसा सम्भव था। मुक्तिबोध चार भाई थे तथा सबसे बड़े होने के कारण उनका लालन-पालन विशेष लाड़-प्यार से हुआ था। मुक्तिबोध की प्रारम्भि शिक्षा उज्जैन, विदिशा, अमझारा, सरदारपुर आदि स्थानों में हुई । उन्होंने 1935 में उन्होंने ग्रेजुएशन किया। इस समय उनका मानसिक स्तर विकास पथ पर दौड़ने लगा था और उनकी रचनाएं कर्मवीर, वीणा आदि पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होने लगी थीं। यद्यपि इस काल में वे छायावादी प्रभाव में लिख रहे थे। इन्दौर में ही उन्होंने अपने घर की नौकरानी की बेटी शांताबाई स`विवाह किया। 1939 में उनके पिता नौकरी से रिटायर हो गये। अपनी ईमानदारी के कारण वे भविष्य की कोई आर्थिक व्यवस्था नहीं कर सके। उनके भाई शरदचंद्र मुक्तिबोध के शब्दों में- 'इस मामले में सारा परिवार मुक्तिबोध पर निर्भर था।' इस दौर तक वे मार्क्सवादी चेतना से सम्पन्न हो चुके थे। रात-दिन अध्ययन में डूबे रहने वाले इस लेखक ने पारिवारिक दायित्वों के निर्वाह के लिए न जाने कितनी नौकरियां कीं और छोड़ीं, इसका एक लम्बा इतिहास है। क्योंकि वे चाह, क्षमता एवं लक्ष्य के बीच एक संतुलन कभी नहीं बना पाये। भटकाव, अभाव, पारिवारिक दायित्व, लक्ष्य की प्रतिबद्धता, समझौताहीनता की ज़िद, ये कुछ ऐसे महत्त्वपूर्ण शब्द हैं जो उनके सम्पूर्ण व्यक्तित्व की रचना करते हैं। नेमिचन्द्र जैन के सम्पर्क में आने के बाद वे मार्क्सवादी नास्तिक दर्शन में विशेष योग्यता प्राप्त कर चुके थे। निर्धन परिवार एवं स्वयं के जीवन के अस्तित्व तथा क्रांतिकारी जीवन के सरोकारों के दोहरे संघर्ष के कारण वे विक्षिप्त-से हो गये थे, उनके स्वयं के कथानुसार-'वे कभी रचनाकर्म को मनचाहे ढंग से समय नहीं दे पाये।' इसके बाद भी उन्होंने इतना लिखा है कि कोई साधारण लेखक उक्त रचनाधर्मिता पर गर्व कर सकता है। उनके आत्मसंघर्ष की दास्तान वर्तमान प्रतिबद्ध लेखकों का घोषणापत्र बन चुकी है। उनके काव्य पर कुछ कहने के पूर्व उनके समग्र कृतित्व का विवरण नीचे दिया जा रहा है-

1. तारसप्तक
2. चांद का मुंह टेढ़ा है (काव्य संकलन)
3. कामायनी एक पुनर्विचार
4. नई कविता का आत्मसंघर्ष एवं अन्य निबन्ध
5. भारत-इतिहास और संस्कृति (मध्य प्रदेश सरकार द्वारा जब्त)
6. एक साहित्यिक की डायरी

7. काठ का सिपाही (कहानी-संग्रह)
8. विपात्र (उपन्यास)
9. सतह से उठता आदमी (कहानी-संग्रह)
10. भूरी-भूरी खाक धूल (काव्य-संग्रह)
11. नये साहित्य का सौंदर्यशास्त्र (निबंध-संग्रह)
12. मुक्तिबोध रचनावली (छह खण्डों में)।

रचनावली में उनकी समस्त प्रकाशित रचनाएं संगृहीत हैं। मुक्तिबोध के साहित्य का एक बड़ा हिस्सा आज भी अप्रकाशित है और संग्रहालय में सुरक्षित है। अपने जीवन के अन्त समय में अपने प्रथम माव्य-संग्रह 'चांद का मुंह टेढ़ा है' जो प्रेस में था, को देख पाने की लालसा लिये, इस दुनिया को छोड़ने वाले इस महान् कवि, लेखक, आलोचक मुक्तिबोध के बारे में इतना ही कहा जा सकता हे कि वे जिन मानसिक द्वन्द्वों, उलझनों और प्रतिबद्धताओं के साथ-साथ जिये, वह उनकी नियति ही नहीं उनकी सफलता का रहस्य भी है।

स्वतंत्रता के बाद की त्रासदी के लिए पं. जवाहरलाल नेहरू को दोषी मानने वाले मुक्तिबोध जब अपने अंतिम समय में अचेतन अवस्था से कुछ पल के लिए सचेत होते हैं तो लोगों से पूछते हैं -नेहरूजी का क्या हाल है? यह मानवीय अन्तर्विरोध उनकी रचनाधर्मिता का एक महत्त्वपूर्ण तत्व कहा जा सकता है।

एक दयनीय अभाव एवं भयंकर तनाव की स्थिति में अपनी रचनाधर्मिता की अस्मिता बनाये रखने वाले इस महान् साहित्यकार की प्रतिभा और साहित्यिक क्षमताओं को उसकी मृत्यु के बाद ही समझाा गया। 'मुक्तिबोध को महान् कवि, महान लेखक, नव लेखन के प्रमुख हस्ताक्षर, नई कविता के शीर्ष कवि, हिन्दी कविता के प्रकाश स्तम्भ, एक जगमगाता नक्षत्र, पुरानी एवं नई पीढ़ी का अत्यन्त प्रिय कवि, ईसा मसीह, शिव, सुकरात आदि-आदि संबोधनों से पुकारा गया।'

प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि एक तनावग्रस्त, अर्द्धविक्षिप्त रचनाकार को उपर्युक्त संबोधन कैसे प्राप्त हुए? इस प्रश्न का उत्तर थोड़ा जटिल है। यदि यह मान लिया जाये कि कवि की मानसिकता से इतर उसकी कविता के मूल्यों की अपेक्षा नहीं की जानी चाहिए, तो तनाव की कविता भी तनावग्रस्त होनी चाहिए। किन्तु उनका तनाव भी कविता के प्रश्नों को लेकर ही खड़ा है। जो बौद्धिक चिंतन के द्वन्द्व से गुज़र कर उस अति को स्पर्श करता है, जहां यथास्थितिवाद के किसी अंश की कोई गंजाइश नहीं रहती। कई बार चेतनासम्पन्न तनाव उस मुकाम पर पहुंचता है, जहां आम कवि की बौद्धिक भावुकता सहम कर ठिठक जाती है किन्तु मुक्तिबोध दोहरी मार करते हुए लिखते हैं-

अब अभिव्यक्ति के सारे खतरे
उठाने होंगे
तोड़ने ही होंगे मठ और गढ़ सब
पहुंचना होगा दुर्गम पहाड़ों के उस पार।

मुक्तिबोध की कविता इन अर्थो में थोड़ दुरूह है कि वे बिम्बात्मक प्रयोगी के द्वारा अपनी बात कहते हैं। इस बात को स्वयं मुक्ति बोध ने भी पुष्ट किया है। श्री शंकर दयाल मिश्र ने 'लहर' (अक्तूबर, 1964 में मुक्तिबोध की डायरी में से एक प्रसंग 'एक सुबह के नाम' से प्रकाशित किया है। अपनी डायरी में मुक्तिबोध ने कहा है कि-'बिना चित्र प्रस्तुत किये लिखता नहीं हूं। कोई भी विचार जब अभिभूत कर देता है, तभी लिखता हूं।'

अपनी 'अंधेरे में' कविता के आठवें खण्ड में मुक्तिबोध ने क्रांति का वर्णन किया है। यह सम्पूर्ण वर्णन बिम्बायुक्त है। कवि यहां पर क्रांति का वातावरण उपस्थित करना चाहता है परंतु लक्षित बिम्बों की विशेषता स्पष्ट दृष्टिगत होती है-

'मकानों की छत से गाडर कूद पड़े
धम्म से
घूम उठे खम्भे
भयानक वेग से चल पड़े हवा में
दादा का सोंटा भी करता है दांव-पेंच
गगन में नाच उठी कक्का की लाठी
यहां तक कि बच्चों की पेंगें भी उड़ती हें
तेजी से लहराती घूमती
मुन्ने की स्लेट-पट्टी।'

मुक्तिबोध की कविता के संदर्भ में डॉ. संजय सिंह का यह कथन महत्त्वपूर्ण है-'आधुनिक हिन्दी काव्य साहित्य के इतिहास में निराला के बाद मुक्तिबोध एक ऐसे कवि हैं जिनका जीवन और काव्य एक-दूसरे से अलग नहीं है। उनका काव्य व्यक्ति एवं निजी व्यक्तित्व एवं निजी व्यक्तित्व एक-दूसरे से अलग न होकर परस्पर संग्रथित हैं। जहां उनका काव्य-सृजन उनके व्यक्तित्व को निखारता है, वहां उनका व्यक्तित्व उनके काव्य को अर्थ देता

चलता है और तब उनके काव्य अध्ययन करने के लिए उनके व्यक्तित्व की बुनावट को समझना आवश्यक ही नहीं अनिवार्य बन जाता है। वह एक ऐसे कवि के रूप में सदैव याद किये जाएंगे, जिसका जीवन ही उसकी कविता है, कथनी और करनी में कोई अंतर नहीं है।

मुक्तिबोध कविता जीते रहे, कविता ओढ़ने-बिछाते रहे। उनका जीवन त्रासदी का महाकाव्य कहा जाता है, जिसमें घोर कष्ट व बीमारी के बावजूद व्यक्तिगत दुख का महाकाव्य कहा जाता है, जिसमे घोर कष्ट व बीमारी के बावजूद व्यक्तिगत दुख नहीं मिलता। वह हमेशा परिवार और समाज के दोहरे दुख को अपने दिल में पालते हुए मित्रों के बीच ठहाका लगाते रहे। यही कारण है कि उनके समकालीन लेखक चाहे नेमिचन्द्र जैन हों या रिशंकर परसाई या उनके समीप आई रूसी कवयित्री या शमशेर, सभी मुक्तिबोध की सहनशक्ति, दृढ़ इच्छाशक्ति, अध्ययनशीलता, ईमानदार आदि गुणों को देखकर एक सीमा तक हतप्रभ रहे।

काव्य में जीवन के व्यापक आयामों को चिन्हित करने वाले मुक्तिबोध ने 'साहित्य में जीवन की पुनर्ररचना' नामक निबंध में स्वयं लिखा है-'जीवन ज्ञान की प्राप्ति में तीन वृत्तियों का सजग सजग सहयोग होता है। संवेदनात्मक उद्देश्यों तथा कार्य अनुभवों के द्वारा ही बुद्धि का विकास होता है। यह बुद्धिकल्पना तथा भावना को सुसंस्कृत तथा परिष्कृत करके आगे बढ़ती है। इसी प्रकार सुशिक्षित कल्पना तथा सुशिक्षित भावना विकसित तथा परिष्कृत जीवन ज्ञान के आधार पर कार्य करती जाती है। तीनों अन्तःवृत्तियों की क्रियाशीलता के फलस्वरूप जो जीवनज्ञान उत्पन्न होता हैं यह स्वयं एक क्रियाशील शक्ति बन जाता है। यह जीवनज्ञान एक विकसित तथा परिपुष्ट अवस्था में परिणत होकर सारे व्यक्तित्व के कार्य की आधारशिला बन जाता है।'

संक्षेप में कविता के बारे में मुक्तिबोध ने जो कुछ विस्तार से कहा है, उस पढ़ने के बाद ही समीक्षक उनके बिम्बात्मक, चित्रात्मक काव्य संसार को गहराई से समझ सके। सम्भवतः यही कारण है कि उनकी मृत्यु के बाद ही उनके काव्य का सही मूल्यांकन सम्भव हो सकता है। 'चांद का मुंह टेढ़ा है' की आलोचना में शमशेर लिखते हैं-'यह कविता देश के आधुनिक इतिहास का', स्वतंत्रता-पूर्व एवं पश्चात् का दहकता इस्पाती दस्तावेज है। इअसमें अजब और अद्‌भुत रूप से व्यक्ति और जन का एकीकरण है। मुक्तिबोध की एक ऐसी ही कविता है 'अंधेरे में' जिसमें उनकी काव्यात्मक शक्ति के अनेक तत्त्व घुलमिल कर एक महान् रचना की सृष्टि करते हैं, जो रोमानी होते हुए भी अत्यधिक यथार्थवादी औौर एकदम आधुनिक है।'

सच तो यह है कि उनके समकालीनों ने, चाहे शमशेर हों या नामवर सिंह, सभी ने एक स्वर से मुक्तिबोध की कविता का लोहा मानते हुए उन्हें 'निराला' के समकक्ष घोषित किया है। कभी मुक्तिबोध की कविता पर उनसे बात करते हुए शमशेर ने कहा था-'जिन अनुभूतियों को तुम्हारे अड़ियल कवि ने झेला है, उसमें लगातार जीकर उनकी अग्निपरीक्षा देकर तुम वही खड़े हुए हो, जहां तुम प्रत्येक संघर्षशील देश और जनता के अपने हो गये हो, भले हम हिन्दी प्रदेशवासी तुम्हारे तपे हुए सोने को अभी न पहचानें। देश के बाहर आधुनिक हिन्दी काव्य की प्रवृत्तियों पर शोध करने वाली बहुभाषा विज्ञ विदुषी पोलिस कवयित्री अग्नेश्का का मत है-'हिन्दी के आधुनिक युग के सहज ही तुम सबसे शक्तिशाली कविता हो।'

मुक्तिबोध का रचना-संसार बहुत व्यापक है। भारत से लेकर सम्पूर्ण विश्व में जहां भी सर्वहारा एवं मानवता की मुक्ति की आवाज उठ रही हैं, वही मुक्तिबोध की कविता मनुष्यता-द्रोही वृत्तियों के विरुद्ध तनकर खड़ी दृष्टगत होती है।

यूं तो मुक्तिबोध अपने युवाकाल के प्रारम्भ से ही अस्वस्थ चल रहे थे। पारिवारिक अभाव का दिमागी टेंशन, कम खाना, चाय और बीड़ी के सहारे जीवन की गाड़ी को खींचते रहना, पार्टी का काम, रचनाधर्मिता, जीवन मूल्यों की रक्षा आदि कुछ ऐसे मुद्दे थे जिन पर मजबूती से चलते हुए दोहरे-तिहरे संघर्ष के कारण वे शीघ्र ही टूटते चले गये और 7 फरवरी, 1965 की पक्षाघात का शिकार हो संज्ञान का यह विशाल वट-वृक्ष भरभराकर गिर गया। उनकी स्थित में सुधार न होता देख उनके साहित्यिक मित्रों-हरिशंकर परसाई, ज्ञान रंजन, प्रमोद वर्मा आदि ने स्वयं पैसों की व्यवस्था कर उन्हें भोपाल के हमीदिया अस्पताल में भर्ती कराया और मध्यप्रदेश सरकार को तार भेज कर उनकी चिकित्सा शासकीय स्तर पर कराने की मांग की, जो मान ली गई। मध्यप्रदेश के श्रेष्ठ चिकित्सकों द्वारा उनका इलाज हुआ पर उनकी स्थिति सुधर नहीं पाई।

17 जून को दिल्ली में बच्चन, प्रभाकर माचवे, अक्षयकुमार जैन तथा कुछ अन्य साहित्यकार प्रधानमंत्री लालबहादुर शास्त्री से मिले तथा उन्हें मुक्तिबोध की स्थिति से परिचय कराया और मांग की कि उन्हें चिकित्सा के लिए दिल्ली बुला लिया जाये। उन्हें मेडिकल इन्स्टीट्यूट के कमरा नम्बर 208 में पहुंचाया गया। नाक के सहारे ऑक्सीजन दी गई, पर स्थिति सुधरी नहीं, बिगड़ती चली गई, अचेतन अवस्था बनी रही। भारत के सबसे बड़े चिकित्सा संस्थान के डॉक्टरों-डॉ. विग, डॉ. विरमानी, डॉ. टंडन, डॉ. बजाज आदि ने आखिर अपना निर्ण दे दिया कि कहीं बड़ी भारत चूक हो गई थी। मुक्तिबोध का इस लम्बी बीमारी के पश्चात् अचेतन अवस्था में ही 11 सितम्बर, 1964 को देहांत हो गया।'

यह अलग बात है कि कुछ प्रभावशाली साहित्यकारों के प्रभाव से अंत समय में उनका मंहगा सरकारी इलाज सम्भव हुआ परंतु वे पूरी उम्र बीमार रहे और कभी अपना इलाज नहीं करवा पाये। क्यो? अपने अभावों के कारण! ईश्वर के बारे में 'इतने बड़े झूठ का, इतना आडम्बर' जैसे पंक्तियां लिखने वाले, दृढ़ इच्छाशक्ति का धनी यह महान् लेखक जहां परिवार, वर्ग, देश और विश्व के कमजोर राष्ट्रों के बारे में सोचता रहा, वहीं अपनी जिंदगी से भी पूर्णतः निराश रहा। धीमी गति से आत्महत्या करने वाले इस लेखक को अपने जीवनकाल में भारी उपेक्षा झेलनी पड़ी थी। ऐसा पहली बार नहीं हुआ था। हिन्दी साहित्य की यह घृणित, पावन परंपरा रही है, इस बात को मुक्तिबोध जानते थे। आज मुक्तिबोध को बीसवीं सदी का सबसे बड़ा कवि घोषित किया जा रहा है परंतु जीते-जी उनका बैंक में खाता न खुल सका। अपने अन्त समय में भी 'बिना चेक काटे' और बिना अपना कविता-संग्रह देखे उनकी मृत्यु हो गई। आज वे 'कवियों के कवि' ,'एक स्कूल' कहे जा रहे हैं। देश-विदेश में उन पर शोध प्रबन्ध प्रकाशित हो रहे हैं। वे अपने कृतित्व के माध्यम से आप पहले से अधिक हमारे मध्य-जीवंत हैं। जैसे पूछ रहे हों 'पार्टनर तुम्हारी पालिटिक्स क्या है,'। वह भारत के वाल्तेयर हैं, जिनका दिशा-निर्देशन में भारत की विशाल जनता मनुष्यता-द्रोही संस्कृति के विरुद्ध मानवता के पक्ष में एक महासमर लड़ रही है।

★★★

गीत

-कपिल भारद्वाज

मेरे मीत न पूछो मुझसे, पैरों में अब
छाले क्यों हैं
दिल मे वेदना का शोर है, होठों पे अब
ताले क्यों हैं

सावन की बरसातें रूठी
आहों का बाजार सजा है
फूलों ने बेमानी कर दी
अन्तर्मन में रुदन मचा है
मूरत जिसमें झांका करती,
दर्पण पे अब जाले क्यों हैं
दिल में वेदना का शोर है, होटों पे
अब ताले क्यों हैं

पलकों पे आंसू बिखरे हैं
सपनों में किरचें गढ़ती हैं
मुस्कानों पे लगे मुखोटे
पीड़ा की गागर भरती है
सोने जैसे दिवस सुनहरे, रजनी से
अब काले क्यों हैं
दिल मे वेदना का शोर है, होठों पे
अब ताले क्यों हैं !

अनमोल वचन

''यदि ईश्वर सर्वशक्तिमान है तो वह सब कुछ कर सकता है। वह एक पत्थर को इतना भारी बना सकता है, जो स्वयं उससे उठ न सके। इसका तात्पर्य यह है कि कोई ऐसी चीज है जो ईश्वर नहीं कर सकता; वह पत्थर नहीं उठा सकता। इसलिए सर्वशक्तिमान परमात्मा का कोई अस्तित्व नहीं है।''

-टाईट्स लुक्रीटियस कारूस (94-49 ई.पू.)

न उलझें व्यर्थ के विचारों में

-डा. शौनक अजिंक्य व
डा.उन्नति कुमार

सुनीता जी (परिवर्तित नाम) एक शिक्षित और अच्छे स्वभाव की महिला हैं, लेकिन बीते कुछ दिनों से उनके रूयवहार में कई असामान्य बदलाव हुए हैं। जैसे वह जब ताला बंद करती है तो इस प्रक्रिया में उन्हें 10 मिनट लग जाते हैं। बार-बार चाबी लगाती हैं, खोलती हैं और फिर बंद करती है। कभी उनके दिमाग में विचार आता है कि किसी वस्तु के स्पर्श करने से वह अस्वच्छ हो चुकी हैं तो वह देर तक बार-बार हाथ धोती रहती हैं। उनकी इस तरह की हरकतों को देखकर उनके स्वजनों ने अनुमान लगाया कि उनके दिमाग का संतुलन बिगड़ गया है।

बहरहाल कुछ लोगों को राय पर स्वजनों ने मनोचिकित्सक से परामर्श लेने का निर्णय लिया। मनोचिकित्सक ने उनके जांच कर उन्हें ओसीडी नामक रोग का ग्रस्त पाया।

क्या है मर्ज ?

ऑब्सेसिव कंपलसिव डिस्ऑर्डर (ओसीडी) नामक मनोरोग अंग्रेजी के दो शब्दों को मिलकर बना है। ऑब्सेशन और कंपलसन। ऑब्सेशन का आशय सनक या जुनून से है और वहीं कंपलसन का अर्थ विवशता, बाध्यता व मजबूरी से है।

ऑब्सेशन के अंतर्गत सनकपन से संबधित विचारों और आवेगों को शामिल किया जाता है, जो रोगी के दिमाग में बार-बार मंडराते रहते हैं। ओसीडी से पीड़ित व्यक्ति नहीं चाहता कि उसके दिमाग में व्यर्थ के विचार आएं, लेकिन वह इन्हें रोक नहीं सकता। ऐसे विचारों से रोगी परेशान हो जाता है और व्यर्थ की हरकते करने लगता है।

कंपलसन के अंतर्गत रोगी के व्यवहारों को शामिल किया जाता है, जिन्हें वह बार-बार अंजाम देना चाहता है। आमतौर पर रोगी ऑब्सेशन को दूर करने के प्रयास में कंपलसन से संबंधित क्रियाकलाप करता है। उदाहरण के तौर पर अगर मरीज यह आशंका जाहिर कर रहा है कि वह अस्वच्छ हो गया है, तो वह कई बार नहाने की प्रक्रिया दोहराएगा, लेकिन नहाने के बाद भी कुछ समय बाद वह फिर चिंतित हो जाता है।

जैसे पुराने ग्रामोफोन रिकॉर्डर पर सुई कभी-कभी अटक जाती थी, ठीक उसी प्रकार ओसीडी के कारण पीड़ित व्यक्ति का दिमाग किसी एक ही विचार या कार्य पर अटक जाता है। उदाहरणस्वरूप ओसीडी से ग्रस्त व्यक्ति रसोई में रखी गैस को 20 या इससे अधिक बार बंद करके जांचेगा कि हां अब गैस बंद है।

स्वस्थ व्यक्ति और ओसीडी मरीजः

वैसे तो हम सभी के मन में अक्सर कोई न को कोई आशंका उत्पन्न होती रहती है, लेकिन हम लोग इन आशंकाओं से मन ही तर्क वितर्क करके पार पा लेते हैं। वहीं ओसीडी से ग्रस्त व्यक्ति इन्हीं आशंकाओं में बुरी तरह उलझ जाता है। उदाहरण के लिए एक स्वस्थ व्यक्ति ताला बंद करता है, वह एक दो बार उसे चेक कर लेता है, लेकिन ओसीडी से ग्रस्त व्यक्ति अनेक बार या यूं कह लीजिए कि 15-20 मिनट तक ताले को चेक कर सकता है। ओसीडी से ग्रस्त व्यक्ति बात करने में और लोगों को पहचानने में स्वस्थ व्यक्ति की ही तरह कार्य करते हैं।

कारण ओसीडी होने का प्रमुख कारण मस्तिष्क में सेरोटोनिनि नामक न्यूरोकेमिकल की कमी होना है। इस मर्ज के अन्य कारणों पर शोध-अध्ययन जारी हैं।

नोट बुक में दर्ज करेंः

पीड़ित व्यक्ति के दिमाग में ओसीडी से संबंधित जो विचार या चिंताएं आती हैं, उन्हें एक डायरी या नोटबुक में लिख लें।

नियमित रूप से व्यायाम करेंः

नियमित रूप से व्यायाम करने से शरीर में रक्त संचार सही रहता है और आंतरिक अंग सशक्त होते हैं।

पर्याप्त नींद लेंः ओसीडी के मरीज को 7 से 8 घंटे

की नींद लेना चाहिए।

नशे से बचें: पीड़ित व्यक्ति को किसी भी तरह के नशे से बचना चाहिए। शराब, धूम्रपान और किसी भी प्रकार से नशे बचना चाहिए।

मनोचिकित्सक से परामर्श लें: पीड़ित व्यक्ति को मनोचिकित्सक से परामर्श लेना चाहिए।

ओसीडी का इलाज

ऑब्सेसिव कंपलसिव डिस्ऑर्डर का इलाज तीन विधियों से होता है:

1. दवाओं द्वारा
2. मनोचिकित्सीय कांउसलिंग से।
3. रोगी के परिवार के सदस्यों की कांउसलिंग की जाती है ताकि परिजन मरीज की सही तरह से मदद कर सकें। ओसीडी की गंभीर स्थिति में आरथेरेपी मरीज की मदद कर सकती है।

क्या है आर थेरेपी?

इस थेरेपी के अंतर्गत इन बातों को शामिल किया जाता है:

1. **रिलेबेल**: इसका यहां आशय है कि आपके दिमाग में विचारों की वजह से जो डर पैदा होता है, उससे भागिएगा नहीं और कंपलसन का सहारा मत लीजिएगा। कहने का आशय है कि जैसे रोगी के मन में व्यर्थ में ही यह विचार उठा कि वह अस्वच्छ हो गया है और उसे तुरंत नहाना है। इस क्रम में मरीज अपने मन में यह संकल्प ले या फिर उसके स्वजन उसे इस बात के लिए प्रेरित करें कि अभी नहीं एक घंटे बाद तुम्हें नहाना है।

2. इस अंग्रेजी शब्द का यहां आशय है कि मरीज स्वयं से कहे कि जो विचार आ रहे हैं, वे मेरे नहीं हैं, बल्कि मेरी बीमारी ओसीडी से संबंधित हैं।

3.रीफोकस: इसका आशय है कि जब मन में ओसीडी से संबंधित विचार आएं तो ध्यान को दूसरी ओर केंद्रित करें। जैसे व्यायाम करें, संगीत सुनें, कोई किताबें पढ़ें या फिर वीडियो गेम्स खेलें या फिर हॉबी को पूरा करें।

4. रीवैल्यू: ओसीडी से संबंधित विचारों पर विश्वास न न करें।

-(मनोचिकित्सक कोकिलाबेन अंबानी हॉस्पिटल मुंबई)
-मनोविशेषज्ञ, कानपुर (प्रस्तुति: विवेक शुक्ल)

गग्ग वाणी

-सुरजीत गग

इससे पहले कि
ज़ुबांबंदी के फतवे के
उल्लंघन का दोष लगा कर
सर कलम कर दिए जाएं
गूंगों के।

इससे पहले कि
सोने के लिबासों को
घूरने के एवज में
निकाल ली जाएं
अंधों की आँखें।

इससे पहले कि
सुनके अनसुना करने का
इल्ज़ाम लगाकर
ढाल दिया जाए सिक्का
बहरों के कानों में।

इससे पहले कि
अपने ही क़त्ल के इल्ज़ाम में
झेलनी पड़ जाएं
उम्र भर की कैद
या काले पानी की सज़ा।

आओ लड़ें
अपने हिस्से का युद्ध
जो लड़ते नहीं
वे गुलाम बना लिए जाते हैं।

और ग़ुलामों का
कोई भविष्य नहीं होता।

★★★

महामारी के रूप में बदल रही है आत्महत्या करने की प्रवृत्ति

हर 40 सेकेंड पर मौत दे रही है दस्तक

(विश्व स्वास्थ्य संगठन के पास उपलब्ध 2014 के डाटा के अनुसार भारत में सबसे ज्यादा आत्महत्याओं का कारण पारिवारिक उलझनें, शादीशुदा जिंदगी की उठापटक या फिर उससे जुड़े विवाद हैं.)

–आशीष सक्सेना

हर साल करीब आठ लाख. हर 40 सेकेंड पर एक मौत. ये मौत भी साधारण नहीं, खुद के हाथों. क्या पूरी दुनिया में इस कदर निराशा, हताशा और अकेलापन है कि जिंदा रहने की चाहत इतनी कम हो गई है! इसको महामारी की सूरत में देखने के लिए ही दस सितंबर को विश्व आत्महत्या रोकथाम दिवस मनाया जाता है. हालांकि, कई देशों की सरकारें इन मौतों को रोकने की जगह पर्दा डाले रखना चाहती हैं.

विश्व स्वास्थ्य संगठन की रिपोर्ट दो मामलों में खास है. एक, निम्न मध्यम आय वाले देशों में आत्महत्या की दर सबसे ज्यादा है. ऐसे देशों में भारत भी है, जहां विकास प्रक्रिया जिस तरह चल रही है, तनाव अवसाद ग्रस्त बना रहा है. बेरोजगारी से लेकर दैनिक जीवन के संकट गहरा रहे हैं.

दूसरी चौंकाने वाली बात ये सामने आई है कि युद्ध से तबाह सीरिया, अफगानिस्तान और इराक में आत्महत्या की दर बहुत कम है. एक लाख लोगों में अफगानिस्तान में पांच से कम, इराक में तीन और सीरिया में दो से कम लोगों के आत्महत्या करने की दर है. इसका कारण नहीं समझा जा सका है.

बहरहाल, भारत के हालात इस मामले में बहुत खराब हैं. पूरी दुनिया में शीर्ष 20 देशों में शुमार था और अब 21वें नंबर पर है. यहां से बेहतर स्थिति पड़ोसी देशों की है. डब्ल्यूएचओ की 2018 की रिपोर्ट के मुताबिक आत्महत्या की दर में श्रीलंका 29वें, भूटान 57वें, नेपाल 81वें, म्यांमार 94वें, चीन 69वें, बांग्लादेश 120वें और पाकिस्तान 169वें पायदान पर हैं. नेपाल और बांग्लादेश की स्थिति जस की तस है. भारत ने मामूली सुधार किया है. जबकि बाकी पड़ोसी देशों में हालात खराब हुए हैं. चीन इस मामले में बहुत खराब स्थिति में आया है, 103 से सीधे 69वें पायदान पर.

विश्व स्वास्थ्य संगठन की हालिया रिपोर्ट में इस बात पर चिंता जताई गई है कि विश्व स्तर पर आत्महत्या और आत्महत्या के प्रयासों पर डेटा की उपलब्धता और गुणवत्ता खराब है. केवल 80 सदस्य देशों ने ही बेहतर डाटा दिया है जिससे आत्महत्या की दर का अनुमान लगाया जा सका है.

मी लार्ड! हमें भी चाहिए ऐसी सजा, आपको दुआ देंगेः देश के किसान

डेटा मुहैया कराने में भारत भी गंभीर नहीं दिखता, जबकि आबादी के हिसाब से यह दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा देश है. ताजा आंकड़े या फिर पुराने आंकड़ों को लेकर कोई हिसाब किताब साफ ही नहीं है. ऐसे में रोकथाम कैसे होगी, ये सवाल है.

जबकि डब्ल्यूएचओ का मानना है कि आत्महत्या की प्रभावी रोकथाम और रणनीति के लिए निगरानी की आवश्यकता है. आत्महत्या के पैटर्न में अंतर्राष्ट्रीय अंतर, आत्महत्या की दरों, विशेषताओं और तरीकों में बदलाव, प्रत्येक देश को उनके आत्महत्या संबंधी डेटा से ही कोई ठोस लक्ष्य तय हो सकता है.

2014 में प्रकाशित पहली डब्ल्यूएचओ विश्व सुसाइड रिपोर्ट इसी मकसद से जारी की गई. मेंटल हेल्थ एक्शन प्लान 2013–20 में डब्ल्यूएचओ सदस्य देशों ने 2020 तक देशों में आत्महत्या दर को 10 प्रतिशत तक कम करने के वैश्विक लक्ष्य की दिशा में काम करने को प्रतिबंद्ध किया है. हालांकि ऐसा होता नहीं दिखता.

ग्लोबल बर्डन ऑफ डिजीज स्टडी 1990–2016 में भारत के राज्यों के बीच आत्महत्या से हुई मौतों को लेकर बहुत अस्पष्टता है. 2016 में भारत में 230,314 आत्महत्या से मौतें हुईं. देखे गए रुझान जारी रहे तो वैश्विक लक्ष्य को हासिल करने में भारत की संभावना कम हो गई है.

उल्टी बात है, आत्महत्या से होने वाली

मौतों में भारत का आनुपातिक योगदान बढ़ता जा रहा है. यहां का आंकड़ा महामारी की शक्ल अख्तियार किए हुए है. राष्ट्रीय स्तर पर हुए सैंपल सर्वे में ये बात सामने आई है, जिसको अंतिम रूप से 31 मार्च 2018 को तय की गई कमेटी में रखा गया. अनुमान लगाया गया कि आत्महत्या की दर में 95 फीसद की बढ़ोत्तरी हुई है.

इसी सर्वे के आधार पर सामने आया है कि सबसे ज्यादा विवाहित महिलाएं इस असामयिक मौत का शिकार हुई हैं. अध्ययन में ये तथ्य भी बताए गए हैं कि विवाह के बाद असुरक्षित होने का भाव, कम उम्र में विवाह, कम उम्र में मातृत्व, कमजोर सामाजिक पायदान पर होना, आर्थिक निर्भरता, घरेलू हिंसा इसके कारण बने हैं.

किशोरियों की आत्महत्या की दर चौंकाने वाली है, ये मातृ मृत्यु दर को भी पार कर चुकी है. इसके पीछे लैंगिक भेदभाव, यौन उत्पीड़न, यौन हिंसा के साथ सामाजिक जोखिम से पैदा अवसाद होना सामने आया है. उनकी आकांक्षा को नजरंदाज करना भी एक कारण है. गंभीर बात ये है कि बुजुर्गों में आत्महत्या के बारे में बहुत कुछ जाना ही नहीं जाता है, जबकि ये आंकड़ा लगातार बढ़ रहा है.

विश्व स्वास्थ्य संगठन के पास उपलब्ध 2014 के डाटा के अनुसार भारत में सबसे ज्यादा आत्महत्याओं का कारण पारिवारिक उलझनें, शादीशुदा जिंदगी की उठापटक या फिर उससे जुड़े विवाद हैं. 2014 में लगभग सात हजार से ज्यादा आत्महत्याएं हुईं. अन्य पारिवारिक समस्याओं के चलते 28 हजार से ज्यादा लोगों ने मौत को गले लगा लिया. संकट, बेरोजगारी, बीमारी या अन्य कारण भी बड़े कारण हैं, जो घटने की जगह बढ़ रहे हैं.

(लेखक स्वतंत्र पत्रकार है)

एंतोन चैखव की लघुकथा– 'कमज़ोर'

अपने बच्चों की अध्यापिका यूलिया वारसिलिएवना का आज मैं हिसाब करना चाहता था।
'बैठ जाओ, यूलिया वारसिलिएवना!' मैं ने उससे कहा, 'तुम्हारा हिसाब कर दिया जाये। हां, तो फैसला यह हुआ था कि तुम्हें महीने के तीस रूबल मिलेंगे। है ना?'
'नहीं चालीस!'
'नहीं तीस। तुम हमारे यहां दो महीने रही।'
'दो महीने और पांच दिन।'
'पूरे दो महीने। इन दो महीनों के नौ रविवार निकाल दो। रविवार के दिन तुम कोलिया को सिर्फ सैर के लिए ही ले जाया करती थी...और फिर तीन छुट्टियां...नौ और तीन बारह। तो बारह रूबल कम हुए। कोलिया चार दिन बीमार रहा, उन दिनों में तुम ने उसे नहीं पढ़ाया, केवल वानिया को ही पढ़ाया...और फिर तीन दिन तुम्हारे दांत में दर्द रहा। उसमें मेरी पत्नी ने तुम्हें छुट्टी दे दी थी...बारह और सात हुए उन्नीस। इनको निकाल दिया जाये तो बाकी रहे...हां, इकतालीस रूबल, ठीक है ना?'

यूलिया की आंखों में पानी आ गया।
'और नये साल के दिन तुमने कप-प्लेट तोड़ दिये थे। दो रूबल उस के कम कर दो। तुम्हारी लापरवाही के कारण ही नौकरानी वानिया दो बूट लेकर भाग गयी। इस तरह पांच रूबल उसके कम हो गये...जनवरी में दस रूबल तुमने उधार लिए थे। इकतालीस में सत्ताइस निकाल दो। बाकी रह गये चौदह।'

यूलिया की आंखों में आंसू भर आये
'मैंने तुम्हारी पत्नी से केवल एक बार तीन रूबल लिए थे।'
'अच्छा, यह तो मैंने लिखे ही नहीं। चौदह में से तीन और निकाल दो। अब बचे ग्यारह। लो, यह लो तुम्हारी तनख्वाह। तीन, तीन, तीन..एक और एक..।
'धन्यवाद।' उसने बड़ी आहिस्ता से कहा।
'तुमने धन्यवाद क्यों कहा?'
'पैसों के लिये'
'लाहनत है! क्या तुमने देखा नहीं कि मैंने तुम्हारे साथ धोखा किया है। मैंने तुम्हारे पैसे मार लिये हैं। और तुम फिर भी मेरा धन्यवाद कर रही हो। मैं तो तुम्हें परख रहा था, मैं तुम्हें 80 रूबल ही दूंगा। यह रही तुम्हारी पूरी रकम।'

वह धन्यवाद कह कर चली गयी। मैं उसको देखता हुआ सोचने लगा कि दुनिया में ताकतवर बनना कितना आसान है। ★★★

भारत के प्रख्यात नास्तिक– प्रस्तावना लेख

–डॉ॰रणजीत

(डॉ. रणजीत के संपादन में उनकी मशहूर पुस्तक 'भारत के प्रख्यात नास्तिक' देश के कुछ चुनींदा प्रसिद्ध नास्तिक बुद्धिजीवियों के जीवन परिचय का एक संकलन है। इसी पुस्तक का प्रस्तावना लेख यहां पाठकों के लिये प्रस्तुत किया जा रहा है-संपादक।)

मैं जब कभी सैंकड़ों-हज़ारों लोगों को मंदिरों, मस्जिदों, गिरिजाघरों में, जो है, एकदम प्रत्यक्ष सामने है– यह प्रकृति, यह पृथ्वी, उसका पर्यावरण, यह मानव–समाज, ये अपने सहजन, प्रियजन, परिजन; इनके सारे धड़कते हुए, जीवंत संसार से आंखें मूंदकर, जो कहीं नहीं है, उस ईश्वर, अल्ला, गॉड या वाहेगुरु की पूजा–अर्चना–प्रार्थना में लगे देखता हूं; शोर–शराबे भरे, गणेशोत्सव, दुर्गापूजा आदि के धार्मिक जुलूसों के जुनून में झूमते–गाते पाता हूं, तो मेरे हृदय में उनके प्रति तरस और करुणा की लहरें उठने लगती हैं। काश! धर्म की धन्धेबाजी करने वाले कुछ धूर्त व्यवसायियों के बहकावे में आये हुए इन भोले–भाले बेवकूफ लोगों का यह सैलाब इस निरर्थक काम को छोड़कर अपने देश और समाज को, उसकी मूलभूत समस्याओं–अशिक्षा, कूपमण्डूकता, रोग–शोक और सामाजिक–आर्थिक विषमताओं से मुक्त करने के उद्योग में लग सकता; वैसी स्थिति में इस संसार को अपनी कल्पना का स्वर्ग बनाने में हमें कितनी देर लगती ?

मेरा खयाल है कि आस्तिकता में मानवसमाज को जो बड़े-बड़े नुकसान पहुंचाये हैं, उनमें से एक, मानवीय श्रमदिवसों की यह बेहिसाब बर्बादी भी है। धर्मग्रन्थों के अध्ययन–मनन, अनुसंधान और विभिन्न मतों के बीच शास्त्रार्थ में लगे रहे और आज भी लगे हुए धर्माचार्यों के निरुपादक औेर निथर्रक श्रम को भी इस बर्बादी में जोड़ना चाहिए। शायद ही मानवजाति ने, युद्धों को छोड़कर और किसी काम में, अपने समय, श्रम और संसाधनों की ऐसी भयंकर बर्बादी की हो। आस्तिकता से मानवजाति को जो दूसरा बड़ा नुकसान हुआ है, वह यह कि उसने मनुष्य का आत्मविश्वास छीनकर उसे डरपोक और कायर बना दिया है। रास्ते में किसी लाल कपड़े में लिपटी हुई कोई चीज दिख जाये तो उसकी रूह कांप उठती है–जरूर किसी ने कोई टोना किया है, आज मेरा कोई न कोई अनिष्ट होकर रहेगा। आस्तिकता ने उससे अपनी क्षमता पर, अपने कर्म पर से आत्मविश्वास छीन लिया है, वह अपने आप को दैवीय शक्तियों का गुलाम समझने लगा है। भय अतिरिक्त क्रूरता को जन्म देता है। डरा हुआ आदमी दूसरों के प्रति ज्यादा क्रूर हो जाता है। अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करने वाली स्त्रियों को सभी देशों में डायनें या चुड़ैलें घोषित कर बड़ी क्रूरता से मारा गया; स्वतन्त्र विचारकों, नये अप्रत्याशित तथ्य खोजने वाले वैज्ञानिकों और नास्तिकों को ज़हर पिलाने या जिन्दा जलाने के काम भी तत्कालीन भयभीत सत्ताधारी आस्तिकों की क्रूरता के ही कारनामे थे।

मनुष्य और अन्य पशुओं में मुख्य अन्तर यह माना जाता है कि मनुष्य एक विवेकशील प्राणी है, पर ईश्वर पर आस्था ने हमेशा उसके विवेक को बाधित किया है। उसे भूतों-प्रेतों से डरना सिखाया है, शुभ–अशुभ दिन, घड़ी संख्या और शकुन–अपशकुन के तर्कहीन अन्धविश्वासों में डाला है। उसे इन्सान से काठ का उल्लू बना दिया है। ईश्वर के विश्वास ने उसे अप्राकृतिक शक्तियों और घटनाओं में विश्वास करना सिखाया है, अज्ञानियों और बुद्धिहीनों की तरह व्यवहार करना सिखाया है।

आस्तिकता बच्चों का खेल है। यह सबसे सरल काम है। यह एक परिवारप्रदत्त संस्कार है, जिसे लगभग सभी बच्चे सहज ही सीख लेते हैं। ईश्वर के अस्तित्व को मानने के लिए किसी विद्या–बुद्धि, किसी चिन्तन–मनन, किसी काम में कुशलता की आवश्यकता नहीं है। मंदिरों में प्रर्थना–नमाज अदा करते अपने–अपने मां–बाप को देखते हुए बच्चे सहज ही आस्तिक हो जाते हैं। पर नास्तिक बनने के लिए अच्छी–खासी तर्क–बुद्धि, अच्छे–खासे जागृत

विवेक और अच्छे-खासे साहस की जरूरत होती है। परम्परा और संस्कार के बोझ को हटाकर सत्य को सत्य कहने में गज़ब का साहस चाहिए। यह साहस गम्भीर अध्ययन-मनन और आत्म-चिन्तन से ही आ सकता है।

ईश्वर में विश्वास का एक नुकसान यह भी है कि मनुष्य ईश्वर के बहाने अपने उत्तरदायित्व से मुक्ति पा लेता है। गलत काम करेगा खुद और उसके अनिच्छित परिणाम सामने आने पर कहेगा-क्या कर सकते हैं, जैसी प्रभु की इच्छा! एक ही वाक्य में वह अपने कार्य-व्यवहार या निर्णय की जिम्मेदारी से भी मुक्त हो गया और ईश्वर के आदेश को नम्रतापूर्वक स्वीकार करने वाले उसके भक्त होने की भूमिका भी उसने अदा कर ली। पर वह यह नहीं सोचता कि इस प्रक्रिया में उसकी मनुष्यता कितनी क्षरित हुई? एक मनुष्य के रूप में उसका कितना अवमूल्यन हुआ, एक जिम्मेदार इन्सान के रूप में वह कितना दयनीय, कितना नाचीज़ साबित हुआ। एक आदमकद इन्सान की जगह एक बौना अवमानव!

ईश्वर की अवधारणा के साथ ही जुड़ी हुई है, स्वर्ग-परक या परलोक की धारणा। और देहान्त के बाद आत्मा के इन लोगों में जाने की कल्पना। हिन्दुओं में परलोक की यह कल्पना वैदिक काल के वाङ्मय में नहीं मिलती। इसका कारण सम्भवतः यह है कि वैदिक सभ्यता विजेता आर्यों की सभ्यता थी। जमीनों की इफरात थी, नये-नये क्षेत्र जीते जा रहे थे, इहलोक धन-धान्य से परिपूर्ण था। इस लोक में दुःख-दर्दों की क्षतिपूर्ति के लिए परलोक के लम्बे-चौड़े दर्शनशास्त्र की आवश्यकता नहीं थी। वैदिक ऋषियों ने जिन देवताओं की कल्पना की-इन्द्र, वरुण, यम आदि-वे भी उनके अपने पूर्वज ही थे, या प्रकृति की ऐसी शक्तियां जैसे अग्नि, वायु, वर्षा आदि, जिनका रहस्य समझ में नहीं आता था।

पर आगे चलकर इस सरल धर्म में भी ओझाओं और पुरोहितों तथा उनके जटिल अनुष्ठानों के कारण संश्लिष्टता और जटिलता आयी। और धर्म शासक-वर्ग के स्वार्थों का साधक बन गया। उपनिषदों में हमें अनेक स्थलों पर धर्म के इस शासक-समर्थक रूप के प्रति विरोध के स्वर सुनाई पड़ते हैं। विरोध की इसी प्रक्रिया में से चार्वाक, बौद्ध और जैन जैसे नास्तिक दर्शनों का विकास हुआ।

ईश्वर और परलोक की अवधारणाओं ने कैसे अब तक के मानवजाति के एक क्रूरतम यथार्थ-वर्गविभाजन या मनुष्य और मनुष्य के बीच की भयंकर समाजार्थिक विषमता-को सहज बनाकर शासक-शोषक वर्ग के हितों की रक्षा की, उनके विरुद्ध शासित-शोषित वर्गों के विद्रोह की सम्भावनाओं को टाला, इसकी एक सहज स्वीकृति आधुनिक युग के एक नाम तानाशाह नेपोलियन बोनापार्ट के श्री मन्थनाथ गुप्त द्वारा उद्घृत इस कथन में दिखाई देती है-'बिन धर्म के भला किसी राष्ट्र में सुव्यवस्था कैसे कायम रह सकती है? समाज व्यक्तियों के भाग्यों की विषमता के बिन चल नहीं सकता और धर्म के बिना ये विषमताएं टिक नहीं सकतीं। जिस समय एक व्यक्ति भूख से मरा जा रहा हो और दूसरा जरूरत से ज्यादा खा-खाकर बीमार हो रहा हो, उस समय पहला व्यक्ति तब तक अपनी स्थिति को सहने के लिए तैयार नहीं होगा, जब तक कि कोई धर्माधिकारी व्यक्ति उसे यह न कहे कि यही प्रभु की इच्छा हैं संसार में अमीर और गरीब ईश्वर के ही बनाये हुए हैं। परलोक में यह बंटवारा पूरी तरह बदल जाएगा।'

इस संदर्भ में गरीबों को झूठी दिलासा देने वाला ईसा का यह प्रसिद्ध वाक्य बरबस याद आ जाता है कि सूई के छेद में से ऊंट निकल सकता है, पर धनी व्यक्ति स्वर्ग में नहीं जा सकता। यानी मेरी प्यारी भेड़ों, शांति से इस लोग में भेड़ियों के अत्याचार सहो, क्योंकि परलोक में तो स्वर्ग तुम्हारे ही लिए सुरक्षित हैं।

ईश्वर और उसके विभिन्न अवतारों और देवी-देवताओं को प्रसन्न करने और उनकी कृपा प्राप्त करने के नाम पर धर्म के सारे कर्मकाण्ड और उन्हें सम्पन्न करवाने वाले पंडे-पुजारी, ओझा और सयाने अर्थात् एक पूरा पुरोहित वर्ग विकसित हुआ जिसकी जीविका ही इन कर्मकांडों, टोने-टोटकों से मिलने वाली दक्षिणा थी। धर्म का सारा तामझाम, पूरा व्यापार ईश्वर आदि की अवधारणा पर ही आधारित है। इस तरह आस्तिकता ने ही भारती संदर्भ में केवल पुरोहितों या ब्राह्मणों के एक परजीवी वर्ग को जन्म दिया और उसके माध्यम से वर्ण-व्यवस्था स्थापित करके पूरे समाज को वर्ण विभाजित कर शूद्रों के साथ अमानवीय अत्याचार किये। यह

वर्णव्यवस्था ही कालक्रम में जाति-व्यवस्था में परिवर्तित हुई; पूरा हिन्दू समाज सैकड़ों श्रेणीबद्ध ऊँची-नीची जातियों में बंट गया। इस जातिवादी कोढ़ से हमारा देश आजादी के इतने सारे वर्षों बाद भी मुक्त नहीं हो सका है।

अभिप्राय यह है कि ईश्वर मनुष्य की एक बचकानी कपोल-कल्पना मात्र नहीं है, वह उसका आदिम, अबोध, अंधविश्वास मात्र नहीं है, वह मानव समाज के लिए एक हानिकारक अवधारणा है, जो न केवल मनुष्य और मनुष्य के बीच की विषमताओं को स्वीकार्य बनाती है, मनुष्य द्वार अन्य मनुष्यों को गुलाम बनाये जाने की अमानुषकता को भी उचित ठहराने में मदद करती है। अपने समय के क्रूर से क्रूर और स्वेच्छाचारी से स्वेच्छाचारी शासकों ने अपने आपको ईश्वर के अवतार घोषित करवाकर ही अपनी भोली प्रजा को अपने अत्याचार निर्विरोध सहने की प्रेरणा दी। ईश्वर मनुष्य द्वारा मनुष्य के शोषण को जायज ठहराने वाली एजेंसी है, विषमता का प्रहरी है; मानवीय स्वतंत्रता, समानता और भाईचारे का दुश्मन हैं यह मनुष्य के अज्ञान और अन्धविश्वास की संतान तो है ही, एक बार अवधारणात्मक पुष्टि पा लेने के बाद वह मनुष्यों के अज्ञान और अन्धविश्वासों का रखवाला भी बन गया है। उसकी धारणा से छुटकारा पाये बिना मानव समाज स्वस्थ, सुखी मानवीय हो नहीं सकता। ★★★

..पृष्ठ 9 का शेष.. (श्रीराम लागू).

डॉ. दाभोलकर की उम्र के 60 साल पूरे हो जाने के बाद उन्होने समिति का कार्याध्यक्ष पद छोड़ने का निर्णय लिया और इस पद से त्यागपत्र दे दिया। संगठन का भविष्य का काम नई ताकत वाले नौजवान द्वारा किया जाये, यह उनकी इच्छा थी। इस कारण उन्हों ने अंनिस के पूर्णकालिक युवा कार्यकर्ता अविनाश पाटील को चुन लिया। अंनिस का आंदोलन युवाओं के हाथों में सौंपने का एक प्रतीकात्मक कार्यक्रम दाभोलकर ने महात्मा फुले के पुणे स्थित निवास स्थल में आयोजित किया था। युवाओं के हाथों में आंदोलन सौंप देना, यह कल्पना डॉ. लागू को बहुत ही अच्छी लगी। वे इस कार्यक्रम के लिए स्वेच्छा से उपस्थित रहे थे। उन के हाथों विचारों की प्रतीकात्मक मशाल अंनिस के युवा कार्यकर्ताओं के हाथों में उस समय सौंपी गयी।

कार्यकर्ताओं के लेखन की डॉ. लागू द्वारा सराहना

'अंधश्रद्धा निर्मूलन वार्तापत्र' के वे नियमित पाठक थे। हर माह का अंक वे बड़े ध्यान से पढ़ते थे। उन अंकों में प्रसिद्ध हुए उन्हें अच्छे लगे हुए लेखों पर वे दाभोलकर के मार्फत अपनी राय पहुंचाते थे। अंनिस के कार्यकर्ता और खगोल विज्ञान के अध्येता प्रो. नितीन शिंदे ने विश्व का निर्माण पर और फलज्योतिष की व्यर्थता दिखाने वाली 'सफर विश्वाची' विश्व का सफर यह पुस्तक लिखी और वह उन्हों ने डॉ. लागू को भेज दी थी। वह सम्पूर्ण पुस्तक पढ़ कर डॉ. लागू ने प्रो. शिंदे को फोन लगाया। फलज्योतिष जैसा जटिल विषय आसान शब्दों में कथन करने के लिए उन्हों ने प्रो. शिंदे की सराहना की थी। लगभग एक घंटा फोन पर वे बात कर रहे थे। इस प्रकार कार्यकर्ताओं के लेखन की सराहना कर के उन्हें प्रेरणा देने वाले डा. लागू थे।

डा. लागू द्वारा लिखे गए 'वाचिक अभिनय' इस पुस्तक की सम्पूर्ण रॉयल्टी उन्होंने महाराष्ट्र अंधश्रद्धा निर्मूलन समिती को दी है। अंनिस के कई कार्यकर्ता जब बीमार हुआ करते थे तब उन्होंने खुले दिल से मदद की है।

अंधश्रद्धा निर्मूलन वार्तापत्र के वर्ष 2015 के दीपावली अंक में डॉ. ठकसेन गोराणे को दिये हुए साक्षात्कार में डॉ. लागू कहते हैं, ''विवेकवादी हो जाइए, बस! समाज अत्यंत भाग्यवादी हो रहा है। धर्मांध है, धर्मभीरु है और फिर यह लगता है कि, हम जिसे 'धर्म' कहते हैं, वह धर्म भी क्या है? भारतीय समाज में 'धर्म' यह शब्द बहुत ही व्यापक अर्थ से उपयोग में लाया जाता हैं। प्यासे को पानी पिलाना, शरणागत को अभय, भावना से ज्यादा कर्तव्य श्रेष्ठ मानना, यह मेरा रोज का धर्म है। इस में परमेश्वर का संबंध आता कहाँ हैं? मेरा विवेकवाद मुझे मेरे जीवन में अच्छे-बुरे प्रसंगों का सामना करने के लिए पर्याप्त है। स्वतंत्र बुद्धि से मैं सोच सकता हूँ, यह पिछले चार सौ वर्षों में 'विज्ञान' इस शक्ति ने दिखा दिया है। डॉ. लागू की यह वैचारिक विरासत आगे ले जाना यह ही उन्हें सच्ची आदरांजली होगी।

(संपर्कः 9422411862)

आइंस्टाइन

-शकन्द शुक्ला

आइंस्टाइन होना आपको वैज्ञानिकों-विज्ञानियों के साथ-साथ अविज्ञानियों-विज्ञान द्रोहियों में भी लोकप्रियता दिलाता है और कई बार ऐसा होना दुर्भाग्यपूर्ण होता है।

वैज्ञानिक को विज्ञान से ऊपर नहीं माना जाता। विज्ञानी नहीं मानते। जो मानते हैं, वे कम-से-कम मान्यता के उस क्षण विज्ञान से पथभ्रष्ट हुए। वैज्ञानिक पथभ्रष्ट नहीं हों, ऐसा नहीं होता। विज्ञान का हाथ अनवरत थाम कर सन्देही जीवन जीना सरल नहीं। भय के अनेकानेक एकान्तिक क्षणों में कम्पन से साथ छूट जाता है।

बहरहाल आइंस्टाइन की लोकप्रियता अभूतपूर्व है, जो उन्हें वैज्ञानिक से अधिकतर स्टार का ओहदा दिलाती है। लेकिन यही अन्धी लोकप्रियता उनके विज्ञान को चकाचौंध से आच्छादित कर देती है। व्यक्ति आइंस्टाइन के इर्द-गिर्द बुनी गयी किंवदन्तियों का ऐसा कथोपकथन चलता है कि उनका अस्तित्व बिसरा दिया जाता है। यह एक नायक की अवांच्छित सर्जना है, जो वैज्ञानिक चिन्तन के लिए विष का काम करती है।

विज्ञान में नायक नहीं होते, किरदार होते हैं। वे अपनी भूमिका निभाते हैं और चले जाते हैं। यह एक श्रृंखला की कड़ियों-सा मामला है, जहाँ हर आइंस्टाइन अपने पहले के किसी मैक्सवेल और आगे के किसी हॉकिंग से जुड़ा पाया जाएगा। आइंस्टाइन आते रहेंगे, जाते रहेंगे। विज्ञान आगे बढ़ता रहेगा, अनवरत।

आइंस्टाइन के सापेक्षता के सिद्धान्तों को ज्यादातर लोग नहीं समझते, लेकिन यह कहते नहीं अघाते कि वे ईश्वरवादी थे। यह बिना पूरी बात को पढ़े-समझे व्यक्ति आइंस्टाइन की धार्मिक व्याख्या करके उन्हें अपने खेमे में मिला लेना है। देखो तुम्हारा सबसे बड़ा वैज्ञानिक भी परलोक-परमात्मा-जैसे गूढ़ रहस्यों में विश्वास रखता था। वह तुम्हारा देवता-पैगम्बर है। इसलिए तुम भी करो। तुम उसी की उपासना करते हो न ! क्यों करें ? आइंस्टाइन कोई देवता-पैगम्बर नहीं। वे एक अदद किरदार निभाने वाले वैज्ञानिक थे जिन्होंने अपने पूर्वजों के ज्ञान के आगे सटीक ताना-बाना बुना और आगे वालों के लिए एक बेहतर वैज्ञानिक वसीयत छोड़ी। लेकिन अपना पूरा जीवन जीने के बाद वे ऐसा लार्जर-दैन-लाइफ कल्ट पैदा कर गये, जिसके आगे विज्ञानवादी-कलावादी, दोनों एक-से नतमस्तक नजर आते हैं।

यह दण्डवत् विनती भाव विज्ञान के साथ बहुत बड़ा छल है। आइंस्टाइन का सच्चा महत्त्व उनके सापेक्षता के सिद्धान्त और उसके मानव-जीवन पर प्रभाव को कम-से-कम स्थूल रूप में ग्रहण करना है। फिर यह भी जानना है कि उन्हें नोबल पुरस्कार इसके लिए नहीं, फोटोइलेक्ट्रिक प्रभाव के लिए मिला था। वह जिसके बारे में आम जनता का संज्ञान न के बराबर है।

आइंस्टाइन होने का दुर्भाग्य स्मृति में उसके बाह्य आवरण की भक्ति को स्थान देकर उसके शोध को विस्मृत कर देना है। भूल जाना है कि वह कहाँ असफल हुआ या हो सकता है, केवल उसकी देह-भंगिमा और जीवनाचार पर मुग्ध रहा करना है। और फिर अचम्भा और विस्मय लिए बात इसपर करनी है कि उसका मस्तिष्क कैसा विलक्षण था ! वह जिसे 1955 में निकाल कर अग्रिम शोध-हेतु रख लिया गया था।

कोई आश्चर्य की बात नहीं कि आइंस्टाइन का मस्तिष्क एकदम साधारण मस्तिष्कों-सा ही निकला। वैसा ही आकार-प्रकार, लगभग वैसी ही कोशिकाएँ। बस ग्लायल कोशिकाएँ थोड़ी ज्यादा। ये वे कोशिकाएँ हैं, जो तन्त्रिका- कोशिकाएँ नहीं हैं, उनकी सहचरी-भर हैं। आइंस्टाइन का मस्तिष्क मरणोपरान्त पढ़ने वाले भी इसी मोह से ग्रस्त रहे कि वे संसार के महानतम वैज्ञानिक का मस्तिष्क पढ़ रहे हैं। कोई तो बड़ी बात होगी, कुछ तो रहस्य उद्घाटित होगा। कुछ बड़ा नहीं निकला, कोई रहस्य नहीं मिला। सब कुछ सामान्य , सब कुछ मानवीय।

आइंस्टाइन होने के लिए मस्तिष्क-मेधा के आगे पूज्य भाव में झुके लोगों को आघात लगा। यह आघात बड़े बालों से घिरे रेखाओं से पटे माथे पर उभरी सरल-तरल आँखों से बार-बार इस बात का इशारा था कि सापेक्षता-फोटोइलेक्ट्रिक प्रभाव पढ़कर सहज भाव से आगे नित्य शोध करो। विज्ञान-मार्ग पर मेरे जैसे कई लोग चलते-मिलते रहेंगे।

वे लोग कहाँ हैं जो कहते हैं कि आइंस्टाइन

अपने मस्तिष्क का 10 प्रतिशतहिस्सा प्रयोग में लाते थे और साधारण मनुष्य 2-3 प्रतिशत।

आइंस्टाइन बहुत कुछ कहते हैं। लेकिन बहुत-कुछ उनसे मरणोपरान्त कहलवा दिया जाता है। ऐसा इसलिए कि उक्ति सूक्ति बन सके।

उक्ति में कथन है। सब कहते हैं, कह सकते हैं। किन्तु सबका कहा साधारण है। 'सु' उपसर्ग यूं ही किसी शब्द के आगे नहीं लगा करता। उसके लिये उसका बड़ा कष्टसाध्य अर्जन करना पड़ता है।
लेकिन मार्केटिंग-युग में कष्टसाध्य कर्म की क्या जरूरत भला कथन साधारण हो, असाधारण हो, सहज हो, जटिल हो, परामर्शी हो, निर्देशी हो- सब खप सकता है, अगर कथ्य-मुख विशिष्ट हो। और विशिष्ट के नाम के साथ उदृधत उक्ति को 'सु' उपसर्ग-आभूषण मिल जाता है और वह बन जाती है स्वरसन्धी सूक्ति(सु, उक्ति सूक्ति)।

ऐसा नहीं है कि पुराने लोग सूक्तियाँ नहीं कहते थे। अपितु वे सूक्तियाँ खूब कहते थे। किन्तु उन सूक्तियों में सैद्धान्तिक पक्ष पुष्ट होता था कर्मपक्ष क्षीण। सत्य बोलना चाहिए (चाहे स्वयं न बोला हो), प्रेम करना चाहिए, चाहे स्वयं न किया हा, देश के लिये प्राण दे देने चाहिए (किन्तु दूसरों को लोभी नहीं होना चाहिए) मेरे सिवा सभी को- जैसे वाक्य सह्स्राब्दियों के काल-क्षरण के बाद घिस कर भी नहीं घिसे हैं।

बहुधा किन्तु इन जैसी और इनसे जटिलतर सूक्तियों के मूल में कोई साधु-सन्त-पीर-फकीर, कवि-कथाकार अथवा दार्शनिक कोटि के लोग होते थे। ये ही समाज-सूक्ति-संचारक होते थे। यकीनन इन्हें जीवन में बोध सामान्य से अधिक और श्रेष्ठ होता था। अतः इन्हीं के अनुभवों-अनुभूतियों को अन्य लोग अक्षरशः मान लिया करते थे। किन्तु इनके मुख से उचार के बाद वाक्य जिन व्यक्तियों से होता समाज में फैल जाता था, वे नितान्त थ्योरेटिकल पर-उपदेशी जीव ही होते थे।

पुराने लोग चेतना चाहने वाले लोग थे। पदार्थ का इन्हें बोध बहुत ही कम था। इन्हें ज्ञान नहीं था, किन्तु विवेशकशीलता बहुत थी। फिर विज्ञान ने यह ढर्रा बदल दिया। सिखाने वाले तो बदले ही , सीखने वाले भी बदल गये। जनता अब जिज्ञासाओं के लिए मात्र चेतना-चिन्तकों के पास कम जाने लगी। उसे पदार्थ-चिन्तन वाले नये गुरू भाने लगे। ये लोग वैज्ञानिक थे। इन्हें पदार्थ इतना उलझाये रखता था, कि चेतना के लिए इनके पास समय ही नहीं था। लेकिन जनता का भरोसा फिर भी इन्हीं पर जमने लगा था। सन्त के स्थान पर सायंटिस्ट। कवि के स्थान पर कॉस्मोल जिस्ट। प्लेटो के स्थान पर आइंस्टाइन।

आइंस्टाइन और उन-जैसों को चेतना के बारे में कहने का अधिकार है या नही- इससे अधिक महत्त्वपूर्ण सोचने वाली बात यह है कि पदार्थ-चिन्तकों को समाज में चेतना-चिन्तकों के ऊपर निरन्तर स्वीकृति क्यों और कैसे मिलती गयी? क्या कारण है कि लोग विज्ञानजीवियों से मैटर के अलावा माइंड के भी मन-मन्थक प्रश्न पूछने लगे? ऐसा तो हैं नहीं कि देह की समस्याओं से इतर मन की समस्याएँ घट गयी हैं रू देह की आवश्यकताएँ पूरी करने के बाद लोग मनोदारिद्रया लिए पहले से कहीं अधिक भटक रहे हैं। लेकिन फिर रहनुमाई के लिए 'गलत' फकीर की चौखट पर वे क्यों?

इसके पीछे विज्ञान का अतिजटिल और अतिमहत्त्वपूर्ण दोनों एक साथ होना है। इनके सम्मेल से एक खास किस्म का एलीटपना जन्म लेता है। मसला यह नहीं है कि आप स्वयं को सम्भ्रान्त मानते हैं या नहीं य बात पते की यह है कि समाज आपको सम्भ्रान्त समझता है या भदेस।

विज्ञान और वैज्ञानिकों के साथ यही गुण या कहें दोष जुड़ा हुआ है। वे संभ्रान्त थिंकर बन कर उभरते हैं और वहाँ अधिक जहाँ पदार्थ-जन्य प्रचुरता है। संभ्रान्ति की चाह रखने वाली दुनिया में उनका कथ्य सभी पुराने कथ्यकारों की बातों से अधिक महत्त्व रखता है। मटीरियल कम्यूनिटी में उनके चित्रों के हजारों ऐसी बातें जोड़ कर प्रस्तुत कर दी जाती हैं, जो उन्होंने कही ही नहीं। लेकिन उनके चेहरे, उनके व्यक्तित्व की स्वीकृति है। वे आधुनिक सर्वोच्च्व नेता है। वे अद्यकालिक ऋषि-मुनि हैं। एक ऐसे समय में जब राजनेता भ्रष्ट, व्यापारी लोभी, साहित्यकार सैद्धान्तिक और दार्शनिक शब्दविनोदी मात्र समझे जाने लगे हैं - तब वैज्ञानिक के पास न कहते हुए भी कहने के लिए बहुत कुछ है और उससे कहलवाया जाएगा। आपने न्यूटनीय भौतिकी को शीर्षासन करा दिया- आप मुझे युद्ध पर, राजनीति पर, अर्थनीति पर, विवाह और प्रेम पर, मित्रता-शत्रुता पर उसी तरह निर्देश दे सकेंगे, ऐसे मैं आशा करता हूँ।

मैं आपकी ऑब्जेक्टिव उपलब्धियों के कारण आपसे सब्जेक्टिव रहनुमाई भी लूँगा, लेता रहूँगा।★★★

काल सर्प दोष मिटाने के बहाने तीन नाबालिग बहनों से कथा वाचक ने किया बलात्कार

पिता के घर लौटने पर बेटी ने सुनाई आपबीती। आरोपी कथा वाचक को पुलिस ने हिरासत में लिया

पत्रिका न्यूज नेटवर्क

सतनाः काल सर्प दोष का पूजन कराने के बहाने एक कथा वाचक ने तीन नाबालिग बहनों से बलात्कार किया। पूजन के बाद शाम ढलने पर जब लड़कियों का पिता घर लौटा तो छोटी बेटी ने कमरे के अंदर हुए वाक्या को बयां कर दिया। रात भर तीन बहनें और उनके परिजन लोग लज्जा के मारे चुप्पी साधे रहे। मंगलवार को जब हिम्मत बंधी तो तीनों बहनें माता पिता के साथ पुलिस के पास पहुंची। नादन देहात थाना में शिकायत करने पर पुलिस भी दंग रह गई। यहां महिला पुलिस अधिकारी के नहीं होने पर पीड़ित बच्चियों को कुछ समय थाने में ही गुजारना पड़ा। इस बीच पुलिस अपना काम करते हुए आरोपी की तलाश में जुट गई। जब मेहर कोतवाली से महिला पुलिस अधिकारी पहुंची तो तीनों बहनों के बयान दर्ज करते हुए आरोपी के खिलाफ अपराध कायम कर लिया गया।

एक-एक कर बुलायाः

पुलिस की प्राथमिक जांच में यह बात सामने आई कि आरोपी कथा वाचक ने सोमार की दोपहर फरियादी के घर ही बंद कमरे में पूजन रखा था। इस कमरे में उसने तीनों सगी बहनों को अलग-अलग बुलाया। इस बीच बच्चियों की मां को घर के बाहर बैठने को कहा था। बच्चियों के पिता मजदूरी करने गए थे। लड़कियों का आरोप है कि कथा वाचक ने उनके साथ बलात्कार किया।

छोटी बोली तो सब बोलेः शाम को जब पिता घर लौटा तो सबसे छोटी बेटी ने रोते हुए अपना हाल बताया। जब उसकी बात दोनों बड़ी बहनों ने सुनी तो वह भी बोल पड़ीं कि उनके साथ भी गलत हरकत की गई। घटना की अगली सुबह तीनों बच्चियां परीक्षा देने चली गई। जब लौटीं तो माता-पिता उन्हें पुलिस के पास लेकर गए जहां रिपोर्ट दर्ज कराने के साथ कार्रवाई शुरू कर दी गई।

आरोपी से पूछताछः

बलात्कार की खबर पर एसडीओपी मेहर हेमंत शर्मा थाना पहुंचे। उनके निर्देश पर एसआई रजनी पटेल ने बच्चियों के बयान लेते हुए कार्रवाई शुरू कराई। पीड़ित बच्चियों की रिपोर्ट पर पुलिस ने कथा वाचक नारायण स्वरूव त्रिपाठी निवासी नादन थाना देहात को आरोपी बनाया है। इसके खिलाफ अपराध क्रमांक 224/10 में आइपीसी की धारा 375(2)(घ) 376(ग) व (3)(2)(5) अनुसूचित जनजाति अधिनियम एवं 5/6, 7/8 पॉक्सो एक्ट के कायनी की गई है।

(पत्रिका (11-12-2019) (Patrika.com)

नाबालिग से दुष्कर्म, दोषी बाबा को 14 साल कैद

हिसार। भभूत खिलाकर नाबालिग के साथ दुष्कर्म करने वाले बाबा को 14 साल की कैद की सजा सुनाई गई है। इसके अलावा 35 हजार रूपये जुर्माना भी लगाया है। यह फैसला एडीजे डॉ.पंकज की अदालत ने बुधवार को सुनाया। जुर्माना न भरने पर दोषी को अतिरिक्त सजा भुगतनी होगी। इस संबंध में पीड़िता की शिकायत पर हांसी के महिला पुलिस थाने में दिसंबर 2018 को विभिन्न धाराओं के तहत केस दर्ज किया गया था। शिकायत में 15 साल की लड़की ने बताया था कि भिवानी के जीत वाला जोहड़ निवासी बाबा गुलाबनाथ दूर की रिश्ते दारी में पड़ता था। अकसर उनके घर आता-जाता था। एक दिन मौका का फायदा उठा कर दुष्कर्म किया और अश्लील वीडियो बनाई। इसके बाद ब्लैकमेल करने लगा। ब्यूरो।

-अमर उजाला

पूजा के बहाने युवती के साथ अश्लील हरकत, गिरफ्तार।

ग्रह-नक्षत्रों के प्रकोप का हवाला देकर लिया था झांसे में

गुरुग्राम। सेक्टर -43 स्थित मंदिर के पुजारी ने एक युवती से ग्रह-नक्षत्रों के शांति पाठ के बहाने अश्लील हरकत की। युवती का आरोप है कि पूजा के बहाने पुजारी ने उसके कपड़े उतरवाकर अश्लील हरकत की।

पूजा खत्म होने के बाद वह निकली तो पुजारी ने इस पूजा के बारे में किसी को न बताने की बात कहते दोबारा भी आने को कहा। युवती की शिकयत पर महिला थाना (पूर्व) ने राजस्थान के भरतपुर के गांव रसिया निवासी- रमाकांत शर्मा (40) के खिलाफ विभिन्न धाराओं केतहत मामला दर्ज कर गिरफ्तार कर लिया। पुलिस के मुताबिक बुधवार को सेक्टर-43 स्थित हुनुमान मंदिर में 19 वर्षीय युवती पूजा करने गई थी। पुजारी ने उससे नाम, जन्मतिथि, जन्म का समय और कुंडली के बारे में पूछा। कुंडली देखने के बाद बताया कि उसके ग्रह-नक्षत्रों की दशा ठीक नहीं है। इस कारण उसके जीवन में कई तरह की समस्याएं चल रही हैं।।

युवती ने समाधान पूछा तो वह उसे एक कमरे में ले गया जहां पूजा और मंत्रोच्चारण के बहाने उसके कपड़े उतरवा दिए और अश्लील हरकत करने लगा। अकेली होने के कारण युवती कुछ नहीं कर सकी। किसी तरह से पूजा पूरी होने पर वह वहां से निकलने लगी तो पुजारी ने इस गुप्त पूजा के बारे में किसी को बताने से मना किया और दोबारा आने को कहा। इसके बाद युवती ने पुलिस को शिकायत दी। -ब्यूरो।

अंधविश्वास

अपने बच्चों को आधा जमीन में गाड़ देने की रस्म जारी है

कर्नाटक के कुछ हिस्सों में सूर्य ग्रहण के समय उस रस्म को जारी रखे हुए हैं, बावजूद इसके कि इस मिथ्या धारणा के भ्रम को स्पष्ट किया जा चुका है कि विज्ञान की दृष्टि से इसमें कोई स्थान नहीं है। इस बुतुके रस्म को जारी रखते हुए कलबुर्गी विजयपुरा और तुमाकुरू जिलों में सूर्य ग्रहण के समय शारीरिक रूप से विकलांग बच्चों को गोबर की खाद के गड्ढे में गर्दन तक इस विश्वास के साथ गाड़ दिया जाता है, कि उनकी विकलांगता दूर हो जायेगी।

कलबुर्गी के बाहरी इलाके के ताज सुलतान पुर गांव में तीन बच्चों के ऐसे मामले प्रकाश में आये हैं जहां उनके माता-पिता ने सूर्य ग्रहण रहने तक उनको गाड़ दिया था।

तर्कशीलों की एक टीम जिसमें श्रीशैल घूली, रविन्द्र शाहबादी और श्रीसेलम स्थित सारंग मठ के सारंगधर देशकेन्द्र स्वामी शामिल थे, उस स्थल पर पहुंचे और माता पिता को समझाया कि इस प्रकार का कार्य उपचार करने की बजाये और अधिक समस्या ही पैदा करेगी।

इंडियन आर्थोपेडिक असोसिशन के राज्य प्रधान बी.कामारेड्डी ने स्थल का दौरा किया और बताया कि जन्मजात विकृति वाले बच्चों का उपचार करने के लिए सर्जरी की जरूरत होती है। उन्होंने कहां कि उनकी वे मुफ्त में सर्जरी करने के लिये तैयार हैं।

जयपुरा जिले में भी इसी प्रकार की एक घटना में, ऐनोली गांव का एक पांच साल का बच्चा और गाडलिंगडाहल्ली गांव की छःसाल की बच्ची को सूर्य ग्रहण के दौरान गोबर की खाद में दो घंटे बिताने पड़े। इंडी तालुक में एक 24 साल के विकलांग को गर्दन तक गोबर में दबा कर रखा गया।

(द हिन्दू : 27-12-2019)

अंधविश्वास के चलते

धार्मिक अनुष्ठान में बलि पर फांसी जायज

नई दिल्ली। धार्मिक अनुष्ठान के नाम पर दो वर्ष के बच्चे की बलि देने वाले तांत्रिक दंपती को सुप्रीम कोर्ट ने बुधवार को फांसी की सजा सुनाई। शीर्ष कोर्ट ने कहा कि इनके सुधरने की गंजाइश नहीं। दंपती को पहले भी छह वर्ष की बच्ची की हत्या में मौत की सजा सुनाई गई थी। तब, हाईकोर्ट ने सजा को आजीवन कारावास में तबदील कर दिया था। जस्टिस रोहिंग्टन एफ.नरीमन, जस्टिस एस.सुभाष रेड्डी और जस्टिस सूर्यकांत की पीठ ने छत्तीसगढ़ निवासी ईश्वरी लाल यादव और उसकी पत्नी किरण बाई द्वारा दो वर्ष के बच्चे की हत्या के मामले को रेयरेस्ट ऑफ रेयर बताया। पीठ ने अपने आदेश में कहा है कि दोनों में मानवता नाम की चीज नहीं है। 23 सितंबर 2010 कोदुर्ग में यादव के घर में बच्चे का शव मिला था। छानबीन के दौरान तांत्रिक दंवपती ने कुबूल किया कि छह-सात महीने पहले भी उसने एक बच्चे की हत्या कीथी। -ब्यूरो।
-अमर उजाला (10-10-2019)

°°°

अपनी बीमारी से छुटकारा पाने के लिए अपनी नन्ही बच्ची को पानी में डुबो का मार दिया-2 गिरफ्तार हुआ।

गुवाहाटी।- उत्तर पश्चिमी आसम के बकसा जिले में पुलिस ने एक व्यक्ति को गिरफ्तार किया है।व्यक्ति एक अज्ञात बीमारी से पीढ़ित था । बीमारी को ठीक करने के लिए उसने अपनी नन्हीं बच्ची को पानी में डुबो कर हत्या कर दी।

लाहापाड़ा गांव में रहने वाले बीरबल बोरो नाम के व्यक्ति को शनिवार को तब गिरफ्तार कर लिया गया जब उसकी पत्नी ने स्थानीय पुलिस चौकी पर एक शिकायत दर्ज करवाई कि आरोपी ने उनकी बेटी को मार दिया है।

स्थानीय लोगों ने बताया कि वह व्यक्ति लगभग पिछले एक महीने से बीमार रहता था। इलाज के लिए वह एक तांत्रिक के पास गया जिसने उसे सुझाव दिया कि यदि वह बीमारी से छुटकारा पाना चाहता है तो वह अपने तीन बच्चों में से एक की बलि दे देवे।-'द हिन्दू'

जादू टोने के शक में की इमाम और उसकी पत्नी की हत्या

अमर उजाला ब्यूरो

गन्नौर(सोनीपत) गांव मनिक माजरी में मस्जिद के पीछे बने कमरे में सो रहे इमाम और उनकी पत्नी की हत्या के मामले में पुलिस ने एक युवक को गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार आरोपी गांव मनिक माजरी का रहने वाला सतबीर है। आरोपी को इमाम पर घर में जादू टोना करने का शक था। उसने दोनों को सोते हुए मार डाला। पुलिस आरोपी को मंगलवार को अदालत में पेश करेगी। मूलरूप से पानीपत के गांव मोहाली निवासी इरफान (38) चार वर्षो से मनिक माजरी गांव की मस्जिद में इमाम थे। वह अपनी पत्नी यास्मीन उर्फ मीना (24) के साथ मस्जिद के पीछे बने कमरे में रहते थे। इरफान सुबह अजान पढ़ते थे, लेकिन रविवार की सुबह इरफान ने अजान नहीं पढ़ी थी। इस पर समुदाय के लोग मस्जिद पहुंचे तो वहां इरफान नहीं मिला था। वह उसे देखने इरफान के कमरे में गए तो वहां इरफान व उसकी पत्नी मृत पड़े मिले थे।

मामले में डीएसपी हेडक्वार्टर जितेंद्र के नेतृत्व में कार्रवाई करते हुए गन्नौर एसएचओ दिनोश कुमार, खुबड़ू चौकी प्रभारी संदीप गाहल्याण व सी आई ए की टीम ने 24 घंटे में हत्या से पर्दा उठाते हुए आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है। आरोपी ने शुरूआती पूछताछ में बताया है कि उसे इमाम पर उसके घर पर जादू टोना करने का शक था। (दिनांकः 10-9-2019)

खोज-खबर

आधा मस्तिष्क ऑपरेशन में निकाला, फिर भी पूरी तरह कर रहा काम

वाशिंगटन : मिर्गी के दौर से पीड़ित छह बच्चों को तकलीफ से निजात दिलाने के लिए उनका आधा मस्तिष्क बचपन में ही ऑपरेशन से निकाल दिया गया था, पर उनका उनका आधा मस्तिष्क बेहतर और सामानय ढंग से काम कर रहा है।

मस्तिष्क का बचा हुआ हिस्सा सभी तरह की प्रक्रिया पूरी करने के लिए खुद को तैयार कर लेता है। ये खुलासा अमेरिका के कैलिफोर्निया टेक्नोलॉजी के शोध में हुआ है जो सेल रिपोर्ट्स में प्रकाशित हुआ है। शोध करने वाली डोरिट क्लिमन ने बताया कि शोध में शामिल छह बच्चों का आधा दिमाग जब वे तीन से 11 महीने के बीच थे, हेमिस्फेयरेक्टॉमी प्रक्रिया के तहत निकाला गया था। आज उनकी उम्र 20 से 30 वर्ष है, और उनका आधा मस्तिष्क सामान्य व्यक्ति के मस्तिष्क की तरह काम कर रहा है। डोरिट की मानें तो बचे हुए आधा मस्तिष्क ने सभी चीजों को आपस में जोड़ लिया जिससे ये संभव हो पाया हैं अब वैज्ञानिक ये जानना चाहते हैं कि मस्तिष्क खुद को कैसे दोबारा पुराने स्वरूप में लाता है।

1500 मस्तिष्क की रिपोर्ट से मिलान

वैज्ञानिकों ने एमआरआई जांच केंद्र में पहले से मौजूद 1500 अलग-अलग तरह के मस्तिष्क की रिपोर्ट की तुलना उन लोगों के मस्तिष्क से की जिनका आधा मस्तिष्क निकाल दिया गया था। इसमें पाया गया कि जिन लोगों का आधा दिमाग निकाला गया था उनकी कौशल क्षमता बेहतर है और मस्तिष्क तेज काम करता है।

शोधकर्ताओं का दावा है कि आधे मस्तिष्क का सामान्य तरह से काम करना बड़ी उपलब्धि है। इससे ब्रेन इंजरी के चलते लोगों को होने वाली परेशानी से बचाया जा सकता है। दिमाग में गांठ, टयूमर और चोट लगने या सड़क हादसे में दिमाग पर चोट लगने के कारण मस्तिष्क को नुकसान पहुंचने के बाद भी जरूरी प्रक्रिया के व्यक्ति का जीवन सामान्य रखा जा सकता है।

शोध में सामने आया लो फैट डाइट का लाभ

शोध अनुसंधान

हालिया अध्ययन में वैज्ञानिकों ने लो-फैट डाइट यानी कम वसा वाले खानपान का बड़ा लाभ पता लगाया है। वैज्ञानिकों का कहना है कि कम वसा वाले खानपान के साथ फल, सब्जियों का सेवन करने से स्तन कैंसर से होने वाली मौत का खतरा कम होता हैं डायबिटीज और दिल की बीमारियों का खतरा भी कम होता है। वैज्ञानिकों ने बताया कि कई तरह के खानपान हैं, जिनसे तात्कालिक फायदा होता है और वजन कम करने में मदद मिलती है। वहीं कम वसा वाला भोजन करने से शरीर को लंबे समय तक फायदा होता है।

शोध के दौरान करीब 49,000 महिलाओं को शामिल किया गया था। नौ साल तक अध्ययन के बाद वैज्ञानिकों ने पाया कि कम वसा वाले खानपान से स्तन केंसर, डायबिटीज और दिल की बीमारियों के मामले में फायदा होता है। यहां तक कि करीब 20 साल बाद भी ऐसे खानपान का शरीर पर सकारात्मक असर दिखा। -एएनआई।

तथ्यः

87 हजार मिर्गी के मामले मस्तिष्क में चोट के चलते जन्म जात।

अकेले भारत में 1.2 करोड़ लोग मिर्गी से पीड़ित हैं जबकि बाकी दुनिया .7 करोड़ हैं।

बच्चों का कोना

विटामिन-सी के लिए जांच

कई ताज़े फलों और सब्ज़ियों (नींबू, संतरा, टमाटर, हरी सब्ज़ियां, काली मिर्च)आदि में विटामिन-सी भरपूर मात्रा में रहता है जो हमारे शरीर में 'कोलजेन'नामक प्रोटीन बनाने में मदद करता है। जब हमें घाव हो जाता है या हड्डी टूट जाती है, कोलेजेन घाव-चोट को भरने में मदद करता है। विटामिन-सी का रासायनिक नाम-'एस्कॉर्बिक एसिड' है। आइए जांच करें कि किस पदार्थ में विटामिन सी अधिक मात्रा में रहता है और किसमें कम।

ज़रूरी सामानः ★ कई तरह के ज्यूस और तरल जिनकी जांच की जानी है। टिंचर आयोडीन (ज़हरीला रहता है), स्टॉच सोलूशन (चावल का मांड) कागज़ के कप और इंक ड्रॉपर।

इस तरह से करेंः जिस नमूने की जांच करना है उसके आधे कप में एक चम्मच स्टॉर्च सोलूशन घोल लें। अब ड्रॉपर से टिंचर आयोडीन की एक-एक बूंद इस घोल में डालकर चम्मच से चलाते जाएं और बूंदों की संख्या गिनते जाएं। जब घोल का रंग बदल जाए तो नोट कर लें कि टिंचर आयोडीन की कितनी बूंदें मिलानी पड़ीं।

★ यही प्रक्रिया सभी नमूनों के साथ दोहराएं। रंग बदलने के लिए टिंचर आयोडीन की जितनी ज्यादा बूंदों की ज़रूरत पड़े, उस नमूने में उतना ही ज्यादा विटामिन-सी है।

कुछ चर्चाः

★आयोडीन पहले विटामिन-सी के साथ रासायनिक क्रिया करता है। इस क्रिया के दौरान रंग में कोई परिवर्तन नहीं होता। जब नमूने में मौजूद पूरी विटामिन-सी समाप्त हो जाती है, उसके बाद ही आयोडीन, स्टॉर्च के साथ क्रिया शुरू करता है। स्टॉर्च और आयोडीन की रासायनिक क्रिया में घोल का रंग गाढ़ा भूरा हो जाता है।

लार-महत्वपूर्ण पाचक द्रव

हमें हमेशा कहा जाता है कि निगलने से पहले भोजन अच्छी तरह चबाना चाहिए। चबाते समय काफी सारी लार खाद्‌य पदार्थ में मिश्रित हो जाती है। लार भोजन को चिकनाई प्रदान करती है, जिससे यह आसानी से अंदर तक चला जाता है। इतना ही नहीं, बल्कि लार एक महत्वपूर्ण पाचक द्रव भी है, जिसकी चर्चा हम यहां करेंगे।

इस तरह से करेंः

★मुंह में ब्रेड का टुकड़ा रखकर उसे चबाते रहें। निगलना नहीं है, चबाते जाना है। एक-दो मिनट चबाने के बाद इसमें मिठास आने लगती है। जितनी देर चबाएंगे, मिठास बढ़ती जाती है।

कुछ चर्चाः

★लार में 'अमिलेस' नामक एंजाइम रहता है। यह स्टार्च के अणुओं को तोड़ कर उन्हें 'ग्लुकोज़ (एक तरह की शर्करा) में परविर्तित कर देता है। स्टार्च के मुकाबले ग्लुकोज के अणु काफी छोटे रहते हैं और कोशिकाओं में आसानी से चले जाते हैं।

★ हमारे मुंह में बहुत सारी ग्रथियां रहती हैं, जिनमें से लार निकलती है। लार में 99 प्रतिशत पानी रहता है और कुछ अंश चिकनाई व अमिलेस का। अमिलेस की जरा सी मात्रा ही बहुत सारा स्टार्च तोड़ने के लिए काफी है।

★ एक व्यक्ति के मुंह में औसतन एक से डेढ़ लिटर लार रोज निकलती है।

तरकशील सांसायटी हरियाणा की द्विमासिक बैठक एवं सेमिनार का आयोजन सम्पन्न हुआ

दिनांक 10 नवंबर, 2019 को यमुनानगर के सेवन सीज होटल में तकशील सोसायटी हरियाणा की द्विमासिक बैठक एवं एक सेमिनार का आयोजन किया गया। इस सम्मेलन में हरियाणा प्रांत के अधिकतर जिलों से तर्कशील कार्यकर्ता तथा स्थानीय स्तर पर सोसायटी से जुड़ाव रखने वाले बहुत से नये कार्यकर्ता भी सम्मिलित हुए। इस सम्मेलन के आयोजन के दिनों में ही जिला यमुनानगर के एक कस्बा बिलासपुर में कपाल मोचन नामक स्थान पर एक धार्मिक मेले का भी आयोजन चल रहा था। सेमिनार के प्रारम्भ में मंच संचालन करते हुए इकाई यमुनानगर के अध्यक्ष साथी सुखदेव सिंह ने कपाल मोचन की धार्मिक कथा के बारे बताते हुए उसकी वैज्ञानिक चीरफाड़ भी की। साथ ही उन्होंने आध्यात्मवाद और पदार्थवाद विषय पर भी अपने विचार रखे।

साथी इन्द्रकुमार दीवाना ने धर्म ग्रन्थों के वास्तविकता पर अपनी बात रखते हुए बाईबल में से उदाहरण देते हुए कहा कि शासक वर्ग के लोग आम जनता के जीवन की दुर्दशा को देखकर उसका समाधान करने के बजाए धार्मिक नेताओं से इस प्रकार के उपदेश दिलवाते हैं कि जनता उन्हीं विकट परिस्थितियों में जीवनयापन करती रहे। जैसे कि -'सूई के छेद में से ऊंट तो निकल सकता है, परंतु धनी व्यक्ति स्वर्ग में प्रवेश नहीं कर सकता।'

अपनी बात रखते हुए दर्शन सिंह लेक्चरार ने कहा कि बच्चे अनेक प्रकार की जिज्ञासा रखते हैं परंतु उनके घर परिवार का वातावरण अंधविश्वासी होने के कारण उनका वैज्ञानिक चिंतन विकसित नहीं हो पाता। उन्होंने बच्चों में वैज्ञानिक सोच उत्पन्न करने के कुछ टिप्स भी बताए।

तर्कशील सोसायटी हरियाणा के प्रचार सचिव सुभाष तितरम ने अपनी बात रखते हुए कहा कि हमारे समाज में वैज्ञानिक चिंतन को कभी उभरने ही नहीं दिया गया। वर्तमान दौर में हमारे प्रदेश एवं देश में विज्ञान की रिसर्च के लिए रखे गए सारे फण्ड धीरे-धीरे बन्द किये जा रहे हैं। प्रतिक्रियावादी लोगों द्वारा समय-समय पर अंधविश्वास एवं कट्टरता फैलाने का मुद्दा खड़ा कर दिया जाता है।

यमुनानगर के प्रसिद्ध मनोचिकित्सक डॉ. दिव्य मंगला विशेष तौर पर सम्मेलन में शामिल हुए। मनोरोगों पर अपनी बात रखते हुए उन्होंने परसनैलिटी डिस्आर्डर के बारे में विस्तार से समझाया। कैथल इकाई के अध्यक्ष कृष्ण राजौंद ने अपने तर्कशील बनने की दास्तान को साथियों से साझा किया। जींद से साथी रामेश्वर दास ने भी अपनी एक कट्टर डेरा प्रेमी से लेकर तर्कशील सोसायटी का सदस्य बनने के सफर का वृतांत प्रस्तुत किया।

तर्कशील सोसायटी के संपादक बलवन्त सिंह ने अपनी बात रखते हुए तर्कशील कार्यकर्ताओं से अनुरोध किया कि वर्तमान दौर में सभी साथी जो सोशल मीडिया से जुड़े रहते है, उन्हें सोशल मीडिया के साथ-साथ अच्छी पुस्तकों का अध्ययन भी अवश्य करना चाहिए। पुस्तकों के अध्ययन द्वारा प्राप्त ज्ञान स्थाई प्रभाव रखता है जबकि सोशल मीडिया द्वारा हासिल की गई जानकारी केवल अल्प समय के लिए ही प्रभावित करती है।

सम्मेलन में तर्कशील सोसायटी हरियाणा के प्रदेशाध्यक्ष फरियाद सनियाना एवं उनके सहयोगी सुरेश कुमार ने जादू के विभिन्न ट्रिक दिखा कर सम्मेलन में उपस्थित दर्शकों का मनोरंजन किया और बाद में जादू के उन ट्रिकों की वैज्ञानिक व्याख्या प्रस्तुत करके उन ट्रिकों के रहस्यों की जानकारी दी तथा जनता को अंधविश्वास का त्याग करके वैज्ञानिक चिंतन को अपनाने की अपील की।

इस कार्यक्रम में मंच का संचालन यमुनानगर इकाई के प्रधान सुखदेव सिंह द्वारा किया गया। इस कार्यक्रम को सफल बनाने में यमुनानगर के साथियों अनुपम सिंह, बलबीर सिंह एडवोकेट, लक्ष्मण विनायक, राम कुमार, अनुरोध कुमार एवं नवीन गांधी ने अपना विशेष योगदान दिया। इन सभी के साथ सेवन सीज होटल के प्रबंधक व मालिक श्री संजीव शर्मा ने विशेष सहयोग दिया। *-रिपोर्टः बलवन्त सिंह लेक्चरार*

काकोरी केस के शहीदों की याद में आयोजित प्रदर्शनी में वैज्ञानिक चिंतन पर बातचीत

भारत के स्वतन्त्रता संगाम में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करने वाले चार शहीदों राम प्रसाद बिस्मिल, अशफाकउल्ला खान, ठाकुर रोशन सिंह तथा राजेन्द्र नाथ लाहिड़ी की शहादत की स्मृति को समर्पित एक प्रदर्शनी का आयोजन दिनांक 17 दिसंबर से 19 दिसंबर 2019 तक गोहाना में जन चेतना में, गोहाना द्वारा किया गया। इस प्रदर्शनी का उद्‌घाटन 'तर्कशील पथ' पत्रिका के संपादक बलवन्त सिंह लेक्चरार द्वारा 17दिसंबर को प्रातः 11 बजे कियागया। प्रदर्शनी में स्वतंत्रता आंदोलान के क्रांतिकारी संघर्ष के इतिहास को विभिन्न दस्तावेजों, अनेक चित्रों तथा समय-समय पर अखबारों में प्रकाशित क्रांतिकारी आंदोलन की खबरों तथा विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में छपे क्रांतिकारी आंदोलन के निबंधों को प्रदर्शित किया गया था। साथ ही आजादी आंदोलन में भाग लेने वाले शहीदों एवं अन्य आंदोलनकारियों के दुर्लभ चित्र प्रदर्शित किये गये थे। इस प्रदर्शनी का आयोजन चेतना मंच, गोहाना के अध्यक्ष डॉ. सी.डी. शर्मा की देखरेख में किया गया।

प्रदर्शन का उद्‌घाटन करने तथा काकोरी केस के शहीदों के चित्रों पर पुष्पांजलि अर्पित करने के पश्चात् तर्कशील सोसायटी हरियाणा के आगू एवं तर्कशील पथ पत्रिका के संपादक प्राध्यापक बलवन्त सिंह ने वहां पर उपस्थित जनसमूह एवं विभिन्न स्कूलों के विद्यार्थियों को संबोधित भी किया। अपनी बात रखते हुए उन्होंने वर्तमान समय में भी आजादी आंदोलन के क्रांतिकारियों की भांति सभी धर्मो एवं जातियों के लोगों को मिलजुल कर देश की उन्नति में अपनरा योगदान देने पर बल दिया। इसके साथ ही उन्होंने तर्कशील सोसायटी के उद्देश्यों एवं कार्यो के बारे में भी अवगत करवाया। साथ ही उन्होंने विश्व भर के देवपुरुषों, गुरुओं, संत-महात्माओं एवं मुल्ला मौलवियों के सामने रखी गई 23 शर्तो की चुनौती के बारे में भी बताया। उन्होंने स्पष्ट रूप में बताया कि 1963 में डा. अब्राहम टी.कोवूर द्वारा चुनौती रखे जाने से लेकर आज तक कोई भी तथाकथित देवपुरुष, तांत्रिक, संत-महात्मा इस चुनौती को जीत नहीं पाया है। अगर किसी कथित देवपुरुष, तांत्रिक, संत-महात्मा ने चुनौती को स्वीकार किया भी है तो वह अपनी करामातें सिद्ध न कर पाने के कारण सोसायटी के सामने अपनी हार मान कर ही गया है।

बाबा के भ्रामक विज्ञापन पर कार्यवाही हेतु कलेक्टर को ज्ञापन

दिनांक 20-12-2019 को उदयपुर शहर से प्रकाशित होने वाले समाचार पत्र राजस्थान पत्रिका में विज्ञापन के जरिये एक तथाकथित बाबा कुमार स्वामी द्वारा 21 व 22 दिसंबर 2019 को दुःख-रोग निवारण शिविर महासमागम आयोजित कर गंभीर बीमारियों का निवारण करने हेतु विज्ञापन प्रकाशित किया हुआ था। जिसमें सभी प्रकार के असाध्य रोगों, संकटो और दुखों का पूर्णतः नाश होने व्यक्ति के मृत्यु मुख से वापस आकर पूर्णतः स्वस्थ होकर अकाल मृत्यु से रहित होना का दावा किया गया था, जबकि भारत के चमत्कारिक दवा एवं उपचार अधिनियम 1954 के अनुसार 54 बीमारियों का चमत्कारिक उपचार का दावा करना और प्रचार करना गैरकानूनी है और इस हेतु दंड का प्रावधान है।

देश के विभिन्न अस्पतालों में प्रतिदिन लाखों मरीज उपचार के लिए आते हैं वहां ऐसे बाबा कदम नहीं धरते ताकि मरीजों का तुरंत ईलाज हो सके। विभिन्न गंभीर बीमारियों के ठीक करने की बात प्रचारित या प्रकाशित करना भ्रामक हैं। ऐसे बाबा भोली भाली जनता के साथ अंधविश्वास, ठगी और धोखाधड़ी करते हैं।

कुमार स्वामी का ऐसा ही विज्ञापन मार्च 2019 में रायपुर (छत्तीसगढ़) के अखबार में छपा था जिस पर अंधश्रद्धा निर्मूलन समिति के अध्यक्ष एवं नेत्र रोग विशेषज्ञ डॉ. दिनेश मिश्र ने जिला कलेक्टर को पत्र लिखकर ऐसे कार्यक्रमों पर रोक की मांग की गई थी।

कार्यक्रम की स्वीकृति को रद्द करवाने की मांग को लेकर अनेक सामाजिक कार्यकर्ताओं द्वारा जिला कलेक्टर को ज्ञापन सौंपा गया। ज्ञापन के दौरान सामाजिक कार्यकर्ता ललित दार्शनिक, मानवाधिकार से रिंकु परिहार, सौरभ नारूका, एडवोकेट मंजूर खान, एडवोट पी.आर. सालवी, अख्तर हुसैन, बाबूलाल गावरी, गणेश लाल, मोहनलाल सालवी, करण गौरण, शिवराज नलवाया, अर्जुन सोनवाल, मोहनलाल डांगी आदि शामिल रहे।

-रिपोर्ट : ललित दार्शनिक

केस रिपोर्ट

मूड के बिगड़ जाने पर

–बलवंत सिंह, लेक्चरार

गुरदेव सिंह की शादी को आठ वर्ष हो चुके थे। शादी के दो वर्ष पश्चात् उनके घर एक पुत्र ने जन्म लिया। जमीन का आगे और बटवारा न हो, यह सोच कर उन्होंने और सन्तान की इच्छा को त्याग कर अपने इकलौते पुत्र की बेहतरीन परवरिश करने का मन बना लिया था। गुरदेव सिंह और उसका बड़ा भाई दोनों संयुक्त परिवार के रूप में रहते थे। दोनों भाइयों का एवं उनकी पत्नियों का आपस में अत्यधिक स्नेह था। बड़े भाई के पास एक बड़ी लड़की तथा छोटा लड़का था। दोनों भाईयों ने ग्रेजुएशन तक पढ़ाई की हुई थी। उनको विरासत में आठ एकड़ जमीन प्राप्त हुई थी। अपने पिता के देहांत के पश्चात् जब सेउन्होंने खेती संभाली तो उन्होंने अपने कृषि फार्म में नये नये प्रयोग करने शुरू कर दिये। उन्होंने कृषि विभाग के साथ तालमेल बिठा कर कृषि की तकनीक को और उन्नत तरीके के साथ प्रयोग में लाना शुरू कर दिया। इस कारण उनके खेतों की पैदावार बाकी किसानों से बेहतर रहती थी। सुनियोजित तरीके से खेती कर के कुछ ही सालों में उन्होंने चार एकड़ जमीन और खरीद ली थी। इसी कारण वह अपने परिवार को बेहद सीमित रखना चाहते थे। यदि बड़े भाई के घर में प्रथम संतान के रूप में लड़की की बजाये लड़का पैदा हो जाता ता उन्होंने भी परिवार नियोजन के तरीकों को अपना कर आगे और संतानोत्पति को ब्रेक लगा देने थे। परंतु 'भारतीय पुत्र मोह की मानसिकता' के चलते उन्होंने संतान पौदा करने का चांस लिया और संयोग से उनके घर अगली बार पुत्र का जन्म हो गया।

गुरदेव सिंह और शरणजीत की शादी को तीन चार साल बीत चुके थे। घर में हर प्रकार की सुख शांति थी। सारा परिवार प्रसन्नतापूर्वक जीवन व्यतीत कर रहा था। परंतु एक दिन शरणजीत की अलमारी में से कपड़े निकालते समय कागज में लिपटा हुआ एक ताबीज निकल आया। उसके पश्चात शरणजीत को दौरे पड़ने शुरू हो गये। उसे दिन में कई-कई बार दौरे पड़ने लग गये। कुछ दिनों पश्चात् घर में दीवारों पर, कभी कपड़ों पर कभी फर्श पर खून के लाल छींटे गिरने शुरू हो गये।

परेशान हो कर परिवार वाले शरणजीत को लेकर बाबाओं की शरण में जाने लग गये। किसी बाबा की चौंकी पर जाने से उसे कुछ दिन आराम रहता, परंतु कुछ दिन बीत जाने के पश्चात् उसकी हालत फिर वैसी ही हो जाती। फिर वे किसी अन्य बाबा, तांत्रिक अथवा ओझा की शरण में चले जाते।

कोई बाबा उनके घर की सभी चौखटों पर कीलें गाड़ कर घर को 'कील देने' का दावा कर के उन से हजारों रूपया भेंट स्वरूप ले जाता। कुछ महीने आराम रहने के पश्चात उनके घर में विचित्र सी घटनाएं और अधिक बढ़ जातीं। फिर वे किसी मौलवी इत्यादि की शरण में जाते। वह भी उनके घर की 'बुरी बलाओं' से सुरक्षा के नाम पर उनके घर के दरावाजों एवं दीवारों पर उर्दू में हाथ से लिखी हुई पर्चियां चिपका देता। इस से भी कुछ महीनों तक घर में शांति रहती, परंतु फिर से घर अनहोनी लगने वाली घटनाओं का सिलसिला शुरू हो जाता। उनके घर में ऐसी अजीब सी घटनाएं कभी बन्द हो जाने और कभी फिर और अधिक भयानक रूप में बढ़ जाने का सिलसिला चलते हुए लगभग चार वर्ष बीत चुके थे।

अब पिछले 15-20 दिनों से ऐसी प्रकार की घटनाओं ने भयंकर रूप धारण कर लिया था। अब उन के घर में बार-बार खून के छींटे पड़ने लग गये थे। एक दिन उन्होंने कपड़े धो कर घर के आंगन में एक रस्सी पर सूखने के लिए डाले हुए थे। जब सायंकाल को शरणजीत सूख चुके कपड़ों को एकत्र कर रही थी तो उसने देखा कि सूखने के लिए टंगी हुई उसकी एक सलवार आधी जली हुई थी। यह देखकर वह वहीं पर ही गश खा कर गिर पड़ी। फिर कई घंटों तक उसे होश नहीं आया। फिर एक-दो दिन के पश्चात् शरणजीत की ताला लगा कर रखी हुई अलमारी में उसके दो सूट कटे हुए मिले। फिर कुछ दिन के पश्चात् शरणजीत के बेडों परा रखे हुए कपड़ों को आग लग गई। बीच-बीच में शरणजीत को दौरा भी पड़ जाता था और वह बेहोश हो जाती थी। डाक्टरों द्वारा उसे बेहोशी खोलने वाला इंजेक्शन लगाने पर भी उसकी बेहोशी नहीं टूटती थी। फिर कई घंटों तक बेहोश रहने के पश्चात् अपने आप

ही उसे होश आ जाता था। इस प्रकार से पिछले कुछ दिनों से उनके घरों में दुखों का पहाड़ टूट पड़ा था। जिन बाबाओं के 'चमत्कारों' से शरणजीत को पिछले कुछ समय के लिए आराम आया था, जब वे उनकी शरण में पहुंचे, तो उन सभी बाबाओं ने अपने हाथ खड़े कर दिये।

अंत में उनके एक रिश्तेदार ने, जोकि तर्कशील सोसायटी द्वारा जनहित में की जा रही गतिविधियों से परिचित था, उसने उन्हें समझा कर मेरे पास मनोरोग परामर्श केन्द्र में भेज दिया।

पहले मैंने गुरदेव से सारे घटनाक्रम की जानकारी हासिल की। फिर शरणजीत को अपने पास बुला लिया। जब मैंने उससे बातचीत का क्रम शुरू किया तो शुरू में उसके व्यवहार में अत्यधिक रूखापन झलक रहा था। लम्बे संवाद में मेरे स्नेहमयी वार्तालाप द्वारा धीरे-धीरे उसके मन का भय जाता रहा और उसका व्यवहार पूर्णतः सहयोगी हो गया। वास्तव में पहले बाबाओं द्वारा इलाज के दौरान एक-दो बाबाओं ने उसकी बेहोशी को तोड़ने के लिए उसके बालों को पकड़ कर ज़ोर-जोर से खींचा था तथा उन साथ ही उसकी पिटाई भी कर डाली थी। अतः उसके मन में अब भी शंका थी कि शायद यहां पर भी कहीं उसकी पिटाई न हो जाए। परंतु जब मैंने उसे समझाया कि मैं केवल मनोवैज्ञानिक ढंग से उसके साथ बातचीत कर के उसके मन की समस्या की जानकारी प्राप्त कर के उसकी सभी परेशानियों को, उसके परिवार के सहयोग से, अवश्य ही दूर कर दूंगा तो उसका व्यवहार एकदम से बदल गया। फिर उसने अपने मन में बैठी हुई कुण्ठाओं की गांठों को सहज रूप से खोलना शुरू कर दिया। मैंने उसकी परेशानियों का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण कर के उनका सार्थक समाधान के बारे में उसे समझाया, जिसका उसके व्यक्तित्व पर अत्यधिक गुणात्मक प्रभाव पड़ता दिखाई देने लगा। फिर मैंने उसे सम्मोहक अवस्था में ले जाकर उसके अवचेतन मन में बैठे हुए नकारात्मक संवेगों को दूर करने के सुझाव दिये। सम्मोहक अवस्था में ही उसने स्वीकार किया कि उसी ने ही समय-समय पर घर की दीवारों पर, फर्श पर व कपड़ों पर लाल रंग, घर वालों से नज़र बचा कर फैंका था। उसी ने ही अपनी सलवार एवं अन्य कपड़ों को माचिस द्वारा आग लगाई थी। अपने पति का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने के लिए वह दौरे की अवस्था में चली जाती थी। घर वालों को बेचैन और परेशान देख कर वह मन ही मन में आनंदित महसूस करती थी; इसलिए समय गुजरने के साथ-साथ उसके दौरों का समय लम्बा होता चला गया था।

अब सम्मोहक नींद में से उठने के पश्चात वह स्वयं को पूरी तरह से प्रसन्न एवं संतुष्ट महसूस कर रही थी। साथ ही उसने वचन दिया कि अब आगे से अपने घर में कोई ऐसी कोई वारदात नहीं करेगी। मेरे द्वारा यह पूछने पर कि वह अपने घर में ऐसी विचित्र हरकतें क्यों करती थी, तो इसका जो उसने उत्तर दिया उस का सारांश इस प्रकार से हैः

उसका मानना था कि उनके परिवार के सभी सदस्य एक दूसरे का पूरा सम्मान करते हैं। किसी को भी किसी प्रकार की शिकायत का मौका नहीं देते। दोनों भाई खेती-बाड़ी में नये-नये प्रयोग करते रहते हैं। साथ ही साथ बाद में उन्होंने पशुपालन भी आधुनिक तरीकों से करना शुरू कर दिया। बड़ा भाई तो घर में रहकर अपनी खेतीबाड़ी एवं पशुपालन की देख-रेख करता था परंतु गुरदेव सिंह ज्यादातर बाहर ही रहता था। वह अपना अधिकतर समय कृषि सम्मेलनों एवं पशु मेलों में ही व्यतीत कर देता था। कई बार तो वह कई-कई दिन तक घर से बाहर ही बिता देता था। शरणजीत के जेठ व जेठानी खाली समय में जब अपने कमरे में बैठ कर आपस में बाते करते तो शरणजीत को अपने पति की बहुत याद आती। वह भी चाहती थी कि उसका पति भी घर में हो और वह भी अपने पति के साथ प्यार भरी बातें करते हुए अधिक से अधिक समय बिता सके। परंतु गुरदेव के मन में अपने कारोबार को उन्नति के शिखर पर ले जाने की धुन सवार रहती थी। और कुछ नया करने व नया सीखने के चाह में वह अपना ज्यादा समय घर से बाहर ही बिता देता था।

शरणजीत की बातों एवं व्यवहार से ऐसा लगता था कि उसके शरीर में कुछ विशेष हारमोन की सक्रियता अधिक थी। जिस के कारण वह अपने पति का सान्निध्य अधिक से अधिक समय तक चाहती थी; परंतु उसका पति अपने कारोबार को चमकाने के चक्कर में उसकी भावनाओं की तरफ कोई ध्यान नहीं देता था। जिसके कारण अपनी मानसिक एवं शारीरिक इच्छाओं की पूर्ति के लिए कुछ चेतन एवं कुछ अवचेतन तौर पर ऐसे क्रियाओं का सहारा लेना पड़ा।

(नोटः *यह एक सत्य घटना है। परिस्थितिवश पात्रों के नाम बदल दिये गये हैं।*)

सही विचार आखिर कहाँ से आते हैं ?

-(माओ त्से तुङ)

सही विचार आखिर कहाँ से आते हैं ? क्या वे आसमान से टपक पड़ते हैं ? नहीं। क्या वे हमारे दिमाग में स्वाभाविक रूप से पैदा हो जाते हैं ? नहीं। 'वे सामाजिक व्यवहार से, और केवल सामाजिक व्यवहार से ही पैदा होते हैं। वे तीन किस्म के सामाजिक व्यवहार से पैदा होते हैं -उत्पादन-संघर्ष, वर्ग-संघर्ष और वैज्ञानिक प्रयोग से पैदा होते हैं।' मनुष्य का सामाजिक अस्तित्व ही उसके विचारों का निर्णय करता है। जहाँ एक बार आम जनता ने आगे बढ़े हुए वर्ग के सही विचारों को आत्मसात कर लिया, तो ये विचार एक ऐसी भौतिक शक्ति में बदल जाते हैं जो समाज को और दुनिया को बदल डालती है।' अपने सामाजिक व्यवहार के दौरान मनुष्य विभिन्न प्रकार के संघर्षों में लगा रहता है और अपनी सफलताओं और असफलताओं से समृद्ध अनुभव प्राप्त करता है।' मनुष्य की पाँच ज्ञानेन्द्रियों-आँख, कान, नाक, जीभ और त्वचा के जरिये वस्तुगत बाह्य जगत की असंख्य घटनाओं का प्रतिबिम्ब उसके मस्तिष्क पर पड़ता है। ज्ञान शुरू में इन्द्रियग्राह्य होता है। धारणात्मक ज्ञान अर्थात विचारों की स्थिति में तब छलाँग भरी जा सकती है जब इन्द्रियग्राह्य ज्ञान काफी मात्रा में प्राप्त कर लिया जाये। यह ज्ञानप्राप्ति की एक प्रक्रिया है। यह ज्ञानप्राप्ति की समूची प्रक्रिया की पहली मंजिल है, एक ऐसी मंजिल जो हमें वस्तुगत पदार्थ से मनोगत चेतना की तरफ ले जाती है, अस्तित्व से विचारों की तरफ ले जाती है। किसी व्यक्ति की चेतना या विचार (जिनमें सिद्धान्त, नीतियाँ, योजनाएँ अथवा उपाय शामिल हैं) वस्तुगत बाह्य जगत के नियमों को सही ढंग से प्रतिबिम्बित करते हैं अथवा नहीं, यह इस मंजिल में साबित नहीं हो सकता तथा इस मंजिल में यह निश्चित करना सम्भव नहीं कि वे सही हैं अथवा नहीं। इसके बाद ज्ञानप्राप्ति की प्रक्रिया की दूसरी मंजिल आती है, एक ऐसी मंजिल जो हमें चेतना से पदार्थ की तरफ वापस ले जाती है, विचारों से अस्तित्व की तरफ वापस ले जाती है, तथा जिसमें पहली मंजिल के दौरान प्राप्त किये गये ज्ञान को सामाजिक व्यवहार में उतारा जाता है, ताकि इस बात का पता लगाया जा सके कि ये सिद्धान्त, नीतियाँ, योजनाएँ अथवा उपाय प्रत्याशित सफलता प्राप्त कर सकेंगे अथवा नहीं। आम तौर पर, इनमें से जो सफल हो जाते हैं वे सही होते हैं और जो असफल हो जाते हैं वे गलत होते हैं, तथा यह बात प्रकृति के खिलाफ मनुष्य के संघर्ष के बारे में विशेष रूप से सच साबित होती है। सामाजिक संघर्ष में, कभी-कभी आगे बढ़े हुए वर्ग का प्रतिनिधित्व करने वाली शक्तियों को पराजय का मुँह देखना पड़ता है, इसलिए नहीं कि उनके विचार गलत हैं बल्कि इसलिए कि संघर्ष करने वाली शक्तियों के तुलनात्मक बल की दृष्टि से फिलहाल वे शक्तियाँ उतनी ज्यादा बलशाली नहीं हैं जितनी कि प्रतिक्रियावादी शक्तियाँ। इसलिए उन्हें अस्थायी तौर से पराजय का मुँह देखना पड़ता है, लेकिन देर-सबेर विजय अवश्य उन्हीं को प्राप्त होती है।

'मनुष्य का ज्ञान व्यवहार की कसौटी के जरिये छलाँग भर कर एक नयी मंजिल पर पहुँच जाता है। यह छलाँग पहले की छलाँग से और ज्यादा महत्वपूर्ण होती है। क्योंकि सिर्फ यही छलाँग ज्ञानप्राप्ति की पहली छलाँग अर्थात वस्तुगत बाह्य जगत को प्रतिबिम्बित करने के दौरान बनने वाले विचारों, सिद्धान्तों, नीतियों, योजनाओं अथवा उपायों के सही होने अथवा गलत होने को साबित करती है।' सच्चाई को परखने का दूसरा कोई तरीका नहीं है। यही नहीं, दुनिया का ज्ञान प्राप्त करने का सर्वहारा वर्ग का एकमात्र उद्देश्य है उसे बदल डालना। अकसर सही ज्ञान की प्राप्ति केवल पदार्थ से चेतना की तरफ जाने और फिर चेतना से पदार्थ की तरफ लौटने की प्रक्रिया को, अर्थात व्यवहार से ज्ञान की तरफ जाने और फिर ज्ञान से व्यवहार की तरफ लौट आने की प्रक्रिया को बार-बार दोहराने से ही होती है। यही मार्क्सवाद का ज्ञान-सिद्धान्त है, द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद का ज्ञान-सिद्धान्त है।

हमारे साथियों में बहुत से लोग ऐसे हैं जो इस ज्ञान-सिद्धान्त को नहीं समझ पाते। जब उनसे यह पूछा जाता है कि उनके विचारों, रायों, नीतियों, तरीकों, योजनाओं व निष्कर्षों, धारा-प्रवाह भाषणों व लम्बे-लम्बे लेखों का मूल आधार क्या है, तो यह सवाल उन्हें

(शेष पृष्ठ 42 पर..)

गलतियां

डा.हरीश मल्होत्रा
मो. 44763013424

यह एक साधारण सा कथन है कि इन्सान गलतियों का पुतला हैं दुनिया में कोई भी परिपूर्ण व्यक्ति नहीं होता। हम से आमतौर पर गल्तियां हो ही जाती हैं। ये गल्तियां अनजाने में भी और जानबूझ कर भी की जाती हैं।

नीरज एवं जोशना की बेटी तथा उसके परिवार उनके पास रहने के लिए आया हुआ था। उनके वापिस जाने से पूर्व जोशना, जो कि इस से पहले एक कुक थी, ने अपने नातियों के लिए जलफ्रेजी बनाई, जो कि उनका मनपसंद भोजन था।

सभी लोग कुर्सियों पर बैठ गये। जोशना ने डौंगा लाकर मेज पर रख दिया। जब उसने डौंगे का ढक्कन उठाया तो वह यह देख कर हैरान-परेशान हो गई कि डौंगे में केवल शिमला मिर्चे ही थी और पनीर बिल्कुल भी नहीं था। जोशना, जलफ्रैजी बनाते समय पनीर डालना भूल गई थी।

चाहे हम छोटे हो या बड़े अथवा बहुत ही तजुर्बेकार, हम सभी कभी न कभी गलती कर जाते हैं। हम शायद किसी को बिना सोचे समझे कुछ कह दें अथवा गलत समय पर कोई कार्य कर दें अथवा शायद हम अनजाने में किसी चीज को अनदेखा कर दें या कोई जरूरी बात हमारे दिमाग से निकल जाए। परन्तु गलतियां होने पर हम कैसे पेश आते हैं। यह बात अत्यन्त महत्वपूर्ण है। क्या हम गलतियां करने करने से बच सकते हैं? गलतियों के प्रति सही दृष्टिकोण रख कर हमें इन सवालों के सही जवाब मिल सकते हैं।

अच्छा कार्य करने पर जब अन्य लोग हमारी प्रशंसा करते हैं, तो हम प्रसन्नतापूर्वक उसे स्वीकार कर लेते हैं तथा हमें लगता है कि हमारी तारीफ तो बनती ही थी। परन्तु जब हम गलती करते हैं, चाहे वह अनजाने में हुई हो अथवा किसी को उसका पता न भी चला हो, तो भी उस समय हमें गलती कीर जिम्मेवारी अपने सिर नहीं लेनी चाहिए? ऐसा करने के लिए नम्रता की आवश्यकता है।

यदि हम स्वयं को कुछ अधिक ही समझते हों, तो हम शायद अपनी गलती के बहाने बनाएं अथवा दूसरों पर दोषारोपण का प्रयत्न करें अथवा यहां तक कह दें कि हमने तो गलती की ही नहीं। ऐसा करने पर प्रायः बुरे नतीजे निकलते हैं। समस्या वैसी की वैसी बनी रह सकती है और अन्य लोगों पर बिना वजह के दोष लग सकता हैं यद्यपि हम अपना दोष दूसरों पर लगाने में सफल हो भी जाएं तो भी हमें याद रखना चाहिए कि हम अपने आप से भाग नहीं सकते। लोगों को तो मूर्ख बनाया जा सकता है परंतु अपने आप को नहीं। हमें सभी को पता है कि यहां पर कोई भी व्यक्ति संपूर्ण नहीं है।

जब गलतियां हो जाती हैं तो व्यक्ति प्रायः अपना अधिक समय व शक्ति इन के दोष दूसरों पर मढ़ने में अथवा अपनी सफाई पेश करने में लगाता हैं जब आपकी किसी बात के कारण किसी का मन दुखी होता है, तो क्यों नउससे क्षमा याचना कर ली जाए। अपनी गलती सुधार ली जाए और अपनी दोस्ती एवं रिश्ते को आंच न आने दी जाए। क्या आपने कोई गलती की है जिसके कारण आपको अथवा किसी अन्य को परेशानी हुई है अथवा नुकसान पहुंचा है? स्वयं पर क्रोधित होने अथवा दूसरों पर दोष लगाने के बजाए क्यों न मामले को सुधारने की कोशिश की जाए? दूसरों पर झूठा दोष लगाने से केवल तनाव ही बढ़ेगा तथा समस्या और भी अधिक उलझ जाएगी। ऐसा करने के बजाए अपनी गलती से सीखें, इसे सुधारें एवं आगे बढ़ें।

जब कोई गलती करता है, तो हम बहुत शीघ्रता से दिखा देते हैं कि हमें अच्छा नहीं लगा। कितना उचित रहेगा यदि हम इस उसूल पर चलें- जिस प्रकार से तुम चाहते हो कि अन्य लोग तुम्हारे साथ व्यवहार करें, तुम भी उनके साथ उसी भांति पेश आओ।' जब आप स्वयं कोई गलती करते हो, चाहे यह छोटी सी ही क्यों नहो, तो निश्चय ही आप चाहते हैं कि अन्य लोग आप के साथ प्रेम के साथ पेश आएं अथवा वे आपकी गलती को पूर्णतः

नज़रअंदाज कर दे। अत क्यों न आप भी दूसरों के साथ इसी तरह ही पेश आओ।

एक शब्दकोश के अनुसार गलतियां, आधी अधूरी जानकारी, गलत राय कायम करने अथवा ध्यान न देने के कारण ही होती हैं। यह बात सत्य है कि व्यक्ति कभी न कभी तो इन कारणों से गलतियां करता ही है।

विद्वानों का कथन है कि जो व्यक्ति पूरी बात सुनने वाली बात हो सकती है। पूरी बात सुन कर तथा उस पर सोच विचार करके आप रूखें व्यवहार के साथ कुछ कहने अथवा एकदम भड़क जाने से बच सकते हैं। ध्यान के साथ सुनने से आप किसी के बारे में गलत राय कायम करने एवं गलतियां करने से बच सकते हैं।

विद्वान यह भी कहते हैं कि यदि हो सके तो दूसरों के साथ शांति बनाए रखने की पूरी कोशिश करो। यदि आगे से, संबंधित व्यक्ति इस की ओर ध्यान नहीं भी देता अथवा परवाह नहीं भी करता तो कम से कम आपको तसल्ली रहेगी कि आपने अपनी ओर से पूरा प्रयत्न किया था। दूसरों के साथ काम करते समय नम्रता दिखलाओ। सभी के साथ सम्मान से पेश आओ व दूसरों की प्रशंसा करो तथा उनका हौसला बढ़ाओ। इस प्रकार के माहौल में बिना सोचे समझे, कह गए शब्दों को अथवा कार्यों को आसानी से नज़रअंदाज किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त गंभीर गलतियों को सुधारा भी जा सकता है।

अपनी गलतियों से सीखने की कोशिश करो। गलती होजाने पर बहाने बनानेकी बजाए इसे स्वयं में नैतिक गुण उत्पन्न करने का अवसर समझो।क्या आपको स्वयं में और अधिक सहनशीलता, दया अथवा संयम पैदा करने की आवश्यकता है? नम्रता, शांति एवं प्रेम के गुण के बारे में विचार किया जा सकता है। कम से कम आप यह सीख सकते हैं कि आपने अगली बार क्या नहीं करना है गैर जिम्मेदार बने बगैर अपने आप के यबारे में हद से ज्यादा मत सोचो। हास्य-मजाक में बात को टाल देने से तनाव को दूर किया जा सकता है।

गलतियों के प्रति उचित दृष्टिकोण रखने के कारण हम गलती हो जाने पर उचित प्रकार का व्यवहार कर सकेंगे। हम स्वयं शांत रहेंगे और दूसरों के साथ शांति बनाए रख सकेंगे तो हम और भी समझदार बनेंगे तथा अन्य लोग हमें और भी अधिक पसंद करेंगे। हम न तो हद से ज्यादा निराश होंगे तथा नहीं स्वयं के बारे में बुरा सोचेंगे। जब हम देखेंगे कि अन्य लोग भी गलती हो जाने पर बढ़िया ढंग से पेश आते हें, तो उनके साथ हमारी मित्रता और अधिक प्रगाढ़ हो जायेगी? सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि हम प्रेम करना और क्षम करना सीख रहे होंगे। इस प्रकार करने से हमें लाभ रहेगा।

क्या जोशना, जिसका पूर्व में ज़िक्र किया गया था, की गलती ने उसके परिवार का मज़ा किरकिरा कर दिया? बिल्कुल नहीं। सभी बातें को हास्य एवं मजाक में डाल दिया, खास करके जब जोशना ने एवं शेष सभी ने बगैर पनीर के खाने का आनन्द उठाया। काफी वर्षो के पश्चात् उसके दोनों नातियों ने अपने बच्चों को यह किस्सा सुनाया तथा उनके पास अपने नाना-नानी के साथ व्यतीत किया गया वह समय एक अविस्मरणीय स्मृति हैं वैसे भी, यह कौन सी कोई बड़ी गलती थी।

-हिन्दी अनुवाद
बलवन्त सिंह लेक्चरार

(पृष्ठ 40 का शेष..सही विचार)

एकदम अजीब-सा मालूम होता है और वे इसका जवाब नहीं दे पाते। और न वे इस बात को ही समझ पाते हैं कि पदार्थ को चेतना में बदला जा सकता है और चेतना को पदार्थ में, हालाँकि इस प्रकार की छलाँग लगाना एक ऐसी चीज है जो रोजमर्रा की जिन्दगी में मौजूद रहती है। इसलिए यह आवश्यक है कि हम अपने साथियों को द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद के ज्ञान-सिद्धान्त की शिक्षा दें, ताकि वे अपने विचारों को सही दिशा प्रदान कर सकें, जाँच- पड़ताल व अध्ययन करने और अनुभवों का निचोड़ निकालने में कुशल हो जायें, कठिनाइयों पर विजय प्राप्त कर सकें, कम से कम गलतियाँ करें, अपना काम बेहतर ढंग से करें, तथा पुरजोर संघर्ष करें, जिससे हम चीन को एक महान और शक्तिशाली समाजवादी देश बना सकें तथा समूची दुनिया के शोषित-उत्पीड़ित लोगों के व्यापक समुदाय की सहायता करते हुए अपने महान अन्तर्राष्ट्रवादी कर्त्तव्य को, जिसे हमें निभाना है, पूरा कर सकें।

(मई 1963)

गंभीर मानसिक रोग, परंतु इलाज संभव

स्किजोफ्रेनिया (Schizophrenia)

- *डा० दिव्य मंगला*

आम भाषा में मन की इस बीमारी को पागलपन भी कहा जाता है (परंतु मनोचिकित्सक इस बीमारी के लिए इस शब्द का इस्तेमाल उचित नहीं मानते) भारत में सौ में से एक व्यक्ति इस बीमारी से ग्रस्त है।)

कुछ लोग रोग को मानसिक स्वास्थ्य का केंसर भी मानते हैं। परंतु इस बीमारी के इलाज में काम आने वाली दवाओं व विधियों ने रोग पर काबू पाने के लिए नए दरवाजे खोल दिए हैं।

जितनी जल्दी यह बीमारी पकड़ में आ जाए उतने ही ज्यादा इलाज के सफल होने के अवसर बढ़ जाते हैं।

अज्ञानवश आज भी लोग इस बीमारी से जूझ रहे लोगों को पागल, नकारा, सुस्त व कामचोर समझते हैं परंतु वास्तव में यह एक मानसिक रोग है। इसके सही इलाज से रोगी के जीवन को सामान्य बनाया जा सकता है। इस बीमारी से जूझ रहा इंसान इतना खतरनाक नहीं है जितना कि आज के युग का सामान्य समझे जाने वाला स्वार्थी व चालाक इंसान।

रोग के लक्षणः

★कोई भी व्यक्ति इस बीमारी का शिकार हो सकता है। अकसर यह बीमारी जिंदगी के सबसे महत्त्वपूर्ण पड़ाव पर (15 से 45 वर्ष के बीच) पैदा होती है। इस रोग में व्यक्ति अपनी वास्तविक जिंदगी को छोड़ कर अपनी बनाई हुई अवास्तविक व मनगढ़ंत दुनिया में रहने लगता है।

★ बीमारी का शुरू-शुरू में किसी को भी पता नहीं लगता क्योंकि शुरुआत में इसके लक्षण काफी हलके-फूलके से होते हैं जैसे काम में मन न लगना, चिड़चिड़ापन व्यवहार में थोड़ा-थोड़ा अजीबपन सा आना, छोटी-सी बात को पकड़ कर बैठ जाना, हलकी घबराहट या उदासी का होना आदि।

★धीरे-'धीरे मरीज के लक्षण गंभीर होने लगते हैं और वह समाज से कटना शुरू हो जाता है। कुछ समय बाद वह साफ-सफाई का ध्यान भी कम रखने लगता है, जैसे कई दिनों तक न नहाना, ब्रुश न करना, कपड़े न बदलना आदि।

★रोगी के खाने-पीना का ढंग भी बदलने लगता है। यातो वह खाना बहुत ज्यादा खाता है या फिर बिल्कुल कम कर देता है।

अन्य लक्षणः

★अजीब व्यवहार करना जैसे अपने आप से बातें करना, अपने आप में हंसना, उलटी-सीधी हरकतें करना जैसे कूड़ा-करकट जेबों में डालाना, बिना मतलब कपड़ों को कैंची से काट देना, बेकार से इधर-उधर घूमना, अकेले बैठे-बैठे हवा में इशारे करना, अचानक बिना कारण कपड़े उतार देना, अंटशंट बोलना इत्यादि।

★ भ्रम व शक पैदा होना, जैसे कोई रोगी के खिलाफ साजिश रच रहा है, दूसरे लोग उसकी चुगली कर रहे हैं या फिर किसी ने उस पर जादू-टोना कर दिया है। लाख समझाने पर भी मरीज अपने शक पर अड़ा रहता है।

★ मरीज की बातें समझ में आना बेहद मुश्किल होने लगता है, क्योंकि उसके द्वारा कही गई बातों का आपस में ताल-मेल खोने लगता है। एक बात पूछने पर वह कोई और बात बनाने लगता है। सवालों के अस्पष्ट जवाब देना इस रोग का एक लक्षण हो सकता है।

★ कानों में आवाजें आना। मरीज ऐसी आवाजें कानों में सुनने लगता है जो कि केवल उसी को सुनाई देती हें, दूसरों को नहीं। इन्हें ओपरी आवाजें भी कहा जाता है।

★ बेवजह डरा-डरा सा दिखाई देना।

★ उलटी-सीधी आकृतियों का दिखना।

★ गुमसुम रहना, न किसी बात पर खुश होना न दुखी होना या फिर बेमतलब अत्यधिक प्रसन्न रहना।

★ बेवजह गुस्सा आना। मारपीट व तोड़-फोड़ करना। बिना धूप या बरसात की परवाह किए घंटों एक जगह खड़े रहना।

★ बिना कारण नाचने या गाने लगना।

★ मरीज को ऐसे लगना जैसे अखबार, टी.वी. रेडियो वाले उसके बारे में खबर छाप रहे हैं या फिर उसके दिमाग के विचार सबको बता रहे हैं।

ध्यान रहे किसी एक रोगी में इन सभी लक्षणों का होना आवश्यक नहीं है। विभिन्न रोगियों में इस बीमारी के अलग-अलग लक्षण हो सकते हैं।

स्किजोफ्रेनिया से ग्रस्त इंसान क्या अनुभव करते हैं? उन्हें किस प्रकार से ओपरी आवाजों व चीजों का अनुभव होता है? इन सभी को जानने क लिए कुछ फिल्में जैसे ब्यूटीफुल माईंड (अंग्रेजी), देवराई (मराठी), मदहोशी (हिन्दी) आदि फिल्मों को देखा जा सकता है। याद रहे हिन्दी फिल्मों में कुछ तथ्य सही हैं तो कुछ गलत भी हैं।

रमन, उम्र 30 वर्ष, किसी समय में वकालत पढ़ रहा था। वकालत व पढ़ने हेतु वह 18 वर्ष की उम्र में होस्टल आ गया था। हॉस्टल में उसे नए लोगों से मिलने में थोड़ी-थोड़ी हिचकिचाहट महसूस हुई परंतु कुछ समय बाद वह माहौल में ढलने लगा और सही ढंग से पढ़ने लगा। वह ज्यादातर अपने आप में रहना पसंद करता था। पढ़ाई के दो सालों के बाद रमन के व्यवहार में बदलाव आने लगा। वह बात करते-करते बीच में रुकने लगा तथा थोड़ा-थोड़ा चिड़चिड़ा हो गया। परीक्षा के दिनों में वह पढ़ाई छोड़कर घर आ गया। माता-पिता ने सोचा कि वह पेपरों से घबरा गया है और समझा-बुझा कर उसे वापस होस्टल भेज दिया। परंतु रमन की हालत दिन पर दिन बिगड़ती चली गई। उसने क्लास में जाना, मैस में इकट्ठे भोजन करना, टीवी आदि देखना काफी हद तक बंद कर दिया। वह एक जगह खड़े होकर अपने आप में बातें करने लगा और अपने आस-पास रह रहे लड़कों पर अजीबो-गरीब शक करने लगा। जैसे वे उसे नुकसान पहुंचाना चाहते हैं, उसका दिमाग कमजोर करना चाहते हैं आदि। अकेले कमरे में उसके जोर-जोर से हंसने व अपने आप में बातें करने की आवाज़े आने लगीं। यह सब देख, दूसरे छात्रों ने उससे मिलना बंद कर दिया। उसकी पढ़ाई में लगातार गिरावट आने लगी। जिसके कारण वह अपने पेपर भी ढंग से नहीं दे पाया। इस सब के चलते उसी के गांव के एक छात्र ने रमन के मां-बाप को फोन कर उन्हें उसकी स्थिति के बारे में अवगत कराया। रमन की ऐसी हालत देख वो लोग बेहद परेशान हो गए और उसको घर ले गये। घर पर भी उसकी हालत में कोई सुधार नहीं आया, उलटा वह अपने घर वालों पर ही शक करने लगा। उसने एक बार यह भी बताया कि कोई आत्मा है जो दूसरे ग्रह से आकर उससे बातें करती है। अपने बाल काट लेना, कपड़ों पर कैंची चला देना, दाल में मिट्टी डालकर खाना और न जाने कितनी ही अजीब हरकतें उसके व्यवहार में शामिल होने लगीं। रमन की नींद व भूख बिल्कुल गड़बड़ा चुकी थी। सारी सारी रात जागकर इधर-उधर घूमते हुए बड़बड़ाता रहता था। किसी बुजुर्ग के कहने पर रमन को तांत्रिक को दिखाया गया, परंतु कोई आराम न मिला। अंत में रमन के पिता के दोस्त (जिनकी लड़की साइकोलोजी में एम.ए. कर रही थी, ने उन्हें मनोचिकित्सक से मिलने के लिए कहा। तब जाकर उसकी बीमारी पकड़ में आई और सही इलाज शुरू हुआ। रमन को स्किजोफ्रेनिया नामक बीमारी से ग्रस्त पाया गया। इलाज के बाद रमन काफी सामान्य हो गया, परंतु वकालत पूरी करने में सक्षम नहीं हो पाया क्योंकि उसकी बीमारी के शुरू होने के दो साल बाद उसका इलाज शुरू किया गया था। बीमारी लंबी होने पर व्यक्ति का पहले की तरह सामान्य होना बेहद मुश्किल हो जाता है। रमन लंबे इलाज के बाद अपना एक एसटीडी बूथ चलाने में कामयाब हो गया था। रमन की तरह न जाने कितने और लोग इस गंभीर बीमारी से जूझ रहे हैं, परंतु दूर्भाग्यवश ज्यादातर लोगों को इस बारे में पता ही नहीं कि इस समस्या का इलाज संभव है।

ध्यान दे, जरूरी नहीं कि हर मरीज में रमन की बीमारी जैसे लक्षणा नज़र आएं। हर रोगी के अपने अलग किस्म के लक्षण हो सकते हैं। कुछ रोगियों में यह बीमारी बहुत ही हलके रूप में मौजूद रहती है और अंत तक पता नहीं चलता।

बीमारी के कारणः

(कैसे पैदा होती है यह बीमारी?)

इस रोग के वास्तविक कारणों का अभी तक सही-सही पता नहीं चल पाया है, परंतु कुछ समझ में आ चुके कारण इस प्रकार हैंः

★ **अनुवंशिक कारणः** माता पिता में अगर किसी

को यह बीमारी हो तो वह संतान में जीन्स के द्वारा जा सकती है। रोगी के ब्लड रिलेटिवस (खून से जुड़े सगे-संबंधी) में इस रोग के होने की संभावना औरों की अपेक्षा थोड़ी बढ़ जाती है। कुछ गुणसूत्र (क्रोमोसाम) जैसे 5,11,18,19 व X इस रोग से संबंधित पास गए हैं।

★ **दिमाग में आया रासायनिक बदलावः** दिमाग के कुछ हिस्सों में डोपामीन, सैरोटोनिन व अन्य रसायनों में आ रही गड़बड़ इस रोग का कारण बनती है। इलाज के लिए दी जाने वाली दवाएं इसी गड़बड़ को ठीक कर बीमारी को काबू करने में मदद करती हैं।

★ **मानसिक तनावः** जरूरत से ज्यादा मानसिक तनाव भी इस रोग को पैदा कर सकता है। मानसिक तनाव के बढ़ने पर वो ही व्यक्ति रोग का शिकार बनते हैं जिनके अंदर पहले से ही इसके होने की संभावना मौजूद हो।

अकसर इस बीमारी को हिन्दुस्तान में जादू-टोना, दैविक प्रकोप या बुरी आत्मा का असर समझ लिया जाता है, जिसके कारण रोग को सबसे पहले तांत्रिकों व जादू-टोने वालों के पास ले जाकर उल्टा-सीधा इलाज करवाया जाता है। इसी कारणवश उचित इलाज समय पर नहीं मिल पाता और रोगी की हालत ज्यादा गंभीर बन जाती है।

बड़ी-बड़ी हस्तियों, कलाकारों व वैज्ञानिकों को भी यह रोग अपनी गिरफ्त में ले चुका है। उदाहरण के लिए प्रवीन बाबी (हिन्दी फिल्म कलाकार), जॉन नैश आदि। जान नैश ने 21 साल की उम्र में ही गणित विषय में एक खोज की, जिसके लिए उसे नोबल प्राइज भी मिला। इस बीमारी से ग्रस्त होने के बाद उसे अपनी नौकरी छोड़नी पड़ी थी। परंतु अपनी पत्नी की मदद व लगातार इलाज से नैश काफी स्वस्थ हो गया और अपनी नौकरी हासिल करने में कामयाब हो गया।

कुछ महान व कामयाब हस्तियां जो अपने जीवन में इस रोग का शिकार हुईः

★ **टॉम हेरल** : एक लोकप्रिय संगीतकार जो इस बीमारी से ग्रस्त होने के बावजूद अच्छा संगीत देता रहा।

★ **जॉन नैश** एक मशहूर गणितज्ञ जिसे जवानी में ही स्किजोफ्रेनिया ने अपना शिकार बना लिया। लगातार तीस वर्ष तक बीमारी से लड़ने के बाद उन्होंने अपना खोया सम्मान वापस पाया। सन् 1994 में उन्हें नोबल पुरस्कार से नवाजा गया।

★**मीरा पोपकीन** :एक कलाकार

★**एंडी गोरेम**: स्कॉटलैड की फूटबाल की गोलकीपर।

★**पीटर ग्रीन** :लोकप्रिय गिटारिस्ट।

★**प्रवीन बॉबी** : हिन्दी फिल्म कलाकार।

★**वैक्लव निजिंस्की** : रूस की मशहूर डांसर जो कि बीमारी की वजह से ढाई साल घर बैठी रही।

★**चार्ल्स फास्ट** : अमेरिका का फुटबॉल का भूतपूर्व खिलाड़ी

स्किजोफ्रेनिया का इलाजः

इस बीमारी के इलाज में कई तरीकों का एक साथ उपयोग किया जाता हैः

★ **दवाओं द्वाराः** आज बाजार में इस बीमारी के इलाज हेतु कई किस्म की दवाएं उपलब्ध हैं। मरीज की स्थिति के अनुसार इनमें से किसी एक या दो दवाओं का सेवन मरीज को करना होता है। यें दवाएं अकसर लंबे समय तक खानी होती हैं। ये दवाएं रोगी के दिमाग में हो रही रासायनिक गड़बड़ को नियंत्रित कर, उसकी सोच समझ में पैदा हुई खामियों को दूर करती है। कुछ रोगियों में दवाओं का असर न आने पर कई बार ईसीटी (बिजली के टीके या या संघात चिकित्सा) आदि का इस्तेमाल भी किया जाता है।

इलाज के शुरुआती दौर में इन दवाओं के कुछ साइड इफेक्ट्स मरीज को आ सकते हैं जैसे हाथ कांपना, अकड़ना, बेचैनी, मुंह से लार गिरना, तोतलापन आदि। परंतु ये कोई गंभीर या घबराने वाले साइड इफेक्ट नहीं होते और धीरे-धीरे अपने आप कम होने लगते हैं। कई बार इन साइड इफेक्टस को खत्म करने हेतु मनोचिकित्सक कुछ अन्य दवाओं का इस्तेमाल भी करते हैं। इस रोग से ग्रस्त व्यक्ति अकसर अपने आप दवा लेने का ध्यान नहीं रख पाते, इसलिए परिवार के किसी समझदार व्यक्ति को इसकी जिम्मेदारी लेनी पड़ती है, जो कि रोगी को सही समय पर दवा खिलाता रहे।

कुशल मनोचिकित्सक की देखरेख में दवाओं या इसीटी का प्रयोग पूरी तरह से सुरक्षित है व

इससे दिमाग या शरीर को कोई नुकासान नहीं होता।

★ **मानसिक उपचार**ः इसके जरिए मरीज को अपनी दृष्टिकोण, अनुभवों, समस्याओं आदि को सामने रखने का मौका दिया जाता है। इसके जरिए मनोचिकित्सक व मनोविश्लेषक रोगी के मन को समझकर, उस रोग की वजह से पैदा हुइ अवास्तविक जिंदगी से वास्तविक जिंदगी में लाने में मदद करकते हैं।

इस चिकित्सा से मरीज में आत्मबल व आत्मविश्वास पैदा करने में काफी मदद मिलती है और वह एक बार फिर से जिंदगी का सामना करने के लिए तैयार होने लगता है।

★ **समाज में वापसी (सामाजिक पुनर्वास)** ः

दवाओं एवं मानसिक उपचार के द्वारा मरीज के सामान्य होने पर उसके सामाजिक पुनर्वास (यानी समाज का सफल सदस्य बनाना) का काम शुरू हो जाता है। इसमें शामिल है, रोगी को दूसरों के साथ मिलने-जुलने की ट्रेनिंग देना, मानसिक व शारीरिक क्षमता को ध्यान में रखते हुए उचित रोजगार का प्रशिक्षण देना, मरीज के भीतर छुपी योग्यताओं को विकसित करना इत्यादि।

मरीज के इलाज व उसे सफल जिंदगी के लायक बनाने में सबसे अहम भूमिका उसके परिवार वालों (माता-पिता, भाई, पत्नी, बहन) की होती है, जिसके बिना अच्छे से अच्छा इलाज भी असफल हो सकता है। नोबल पुरस्कार से सम्मानित जॉन नैश को जब यह बीमारी हुई तब उसकी पत्नी की मदद व उचित इलाज के कारण ही व इस रोग से सफलतापूर्वक जूझ पाए।

आखिरकार कैसा रहता है इन रोगियों का जीवनः

★लगभग एक तिहाई (30-40) प्रतिशत) मरीज बिल्कुल ठीक हो जाते हैं, और उन्हें बाद में दवा की भी जरूरत नहीं पड़ती)

★अन्य तिहाई मरीज आम ज़िंदगी व्यतीत कर पाने में सक्षम रहते हें, परंतु उनका इलाज पूरी ज़िंदगी चलता है।

★बाकी बचे 1/3 मरीज, इलाज करने के बावजूद पूरी तरह ठीक नहीं हो पाते और बीमारी से लंबे समय तक ग्रस्त रहते हैं। इस स्थिति में विशेष दवाओं की मदद (जैसे कि क्लोजापीन) से कुछ मरीजों को काफी हद तक आराम पहुंचाया जा सकता है।

ध्यान देंः

★ हर सौ व्यक्तियों में एक व्यक्ति स बीमारी से जूझ रहा है।

★ इस रोग से ग्रस्त व्यक्ति अक्सर अपनी बीमारी को बीमारी नहीं समझता और इलाज से इंकार कर देता है। इसलिए परिवार वालों को शुरुआत में थोड़ी मुश्किलें आ सकती हैं। मनोचिकित्सक के पास इन स्थितियों से निपटने के कई तरीके होते हैं जैसे लंबे समय तक असर रखने वाले इंजेक्शन, बिना स्वाद की दवाएं जो कि रोगी को बिना बताए दी जा सकती हैं आदि।

★ बीमारी के लक्षण पता चलते ही रोगी का शीघ्र से शीघ्र योग्य मनोचिकित्सक से इलाज कराएं।

नास्तिकों को भगवान के अस्तित्व को नकारने का अधिकारः हाईकोर्ट

चैनई-पत्रिका। मद्रास हाईकोट की एक खंडपीठ ने उस शिलालेख को हटाने से इनकार कर दिया है जिस पर लिखा है कि कोई भगवान नहीं है। यह शिलालेख तिरुचि में समाज सुधारकर पेरियार की मूर्ति के पास स्थित है।

इस पर यह भी लिखा है कि जो भी भगवान से विश्वास करते हें, वे मूर्ख और बर्बर हैं। इसके साथ ही हाई कोर्ट की पीठ ने एम.दिव्यनायगम द्वारा दायर उस जनहित याचिका को खारिज कर दिया जिसमें उन्होंने राज्य के मुख्य सचिव को निर्देश देकर पेरियार की प्रतिमाओं के नीचे लिखे इन अपमानजनक शब्दों को हटाने की प्रार्थना की थी।

हाईकोर्ट ने साफ कहा कि नास्तिकों को भी अपने विचार रखने का अधिकार है। याचिका पर सुनवाई करते हुए जस्टिस एस. मणिकुमार और सुब्रमण्यम प्रसाद की पीठ ने कहा, पेरियार ने जो कहा, उसमें विश्वास किया और शिलालेख पर अपने विचार रखने में कुछ गलत नहीं है।

जीना एक कला है

–आर.पी.गांधी

संसार की आबादी इस समय लगभग सात अरब है परन्तु बहुत ही कम लोग ऐसे मिलेंगे जो सही अर्थो में जीना जानते है। खाना–पीना,सोना,बच्चे पैदा करना तथा जीवन यापन के साधन जुटा लेना ही जीवन नही है। ये सब कार्य तो पशु–पक्षी भी करते है। कुछ ऐसे पक्षी है जो जीने के लिए लम्बी यात्राए करते है। शिकार और शिकारी दोनो ही जीने के लिए दौड़ लगाते है शिकारी ये सोचता है कि शिकार को खाकर मै जिन्दा रहूंगा। इसलिए शिकार को पकड़ने के लिए वह दौड़ लगाता है और शिकार इसलिए दौड़ लगाता है कि वह शिकारी की पकड़ से बच निकले ओर वह जीवित रह सके। विकसित बुद्धि का स्वामी होने के नाते मनु य की जीवन शैली और पशु–पक्षियों की जीवन शैली में बहुत अन्तर होता है। मनुष्य भविष्य की चिन्ता करते हुए जमाखोरी करता रहता है ताकि उसकी आने वाली नसल भी एक सुखी जीवन जी सके। ये सब प्राकृतिक बाते है वे केवल अपने लिए जीने की कला से परिचित है वे केवल अपने ही नहीं जीते,पूरे समाज के लिए जीते है। इस तरह के लोग हर रूप में बहुत कुशल होते है। उनके सोचने का ढ़ग यह होता है। जो बात हमें बुरी लगती है वह दूसरो के लिए उतनी ही कष्टदायक होगी। इसलिए उनके स्वभाव में नम्रता,कोमलता और दया की भावना होती है। भाष में मिठास जो व ाीकरण का काम करती है। ऐसे लोग जो जीने की कला से परिचित है उनके खान–पान और रहन–सहन में भी अन्तर होता है। इस तरह के व्यक्ति नशों से दूर एक आदर्श जीवन जीने का प्रयास करते है। वासनाएं उन पर कभी हावी नही होती बल्कि उनकी दासी बनकर रहती है। यही उनके सफल जीवन का एक राज होता है। वे सादा और सन्तुलित भोजन लेते है। स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए व्यायाम भी करते है ताकि उनको डाक्टरों की दवाइयों का दास बन कर न रहना पड़े। स्वस्थ सोच के लिए स्वस्थ शरीर का होना अति आवश्यक है। उनका समाज में एक विशेष स्थान बना रहता है। वे कष्ट उठाकर भी सामाजिक कुरीतियों के विरूद्व संघर्ष करते है। जीवन की कठिनाइयां उनके रास्ते की कभी रूकावट नही बनती। वे सुख और दुख दोनो अवस्थाओं में सन्तुलन बनाए रखते है। जब एक शराबी से पुछा गया तुम शराब क्यो पी रहे हो? उतर मिला मेरा बहुत बड़ा नुकसान हो गया है इसलिए गम को भुलाने के लिए शराब पी रहा हूं। कुछ दिनों पश्चात फिर उस व्यक्ति को शराब पीते देखा गया तो फिर पूछा गया आज क्यों शराब पी रहे हो? तो उसका उतर था मै आज बहुत खुश हूं। मेरे घर लड़का पैदा हुआ है। अतः मै शराब पीकर खुशी मना रहा हूं। भाव यह पीने वाले को कोई न कोई बहाना चाहिए। इस तरह के व्यक्ति आदतों के गुलाम होते है। वे अपनी मानसिक कमजोरियों के कारण दृढ़ निर्णय नहीं ले पाते। इससे वे एक अच्छा जीवन नही जी पाते और न ही ये अपनी सन्तान के अन्दर कोई अच्छे गुण पैदा कर सकते है। जो व्यक्ति खुद बुराईयों का शिकार हो वह अपनी सन्तान का भी बहुत बड़ा नुक्सान करता है।

सजना-संवरना उस व्यक्ति के लिए अति आव यक है जो जीने की कला से परिचित है। कारण जो स्वयं से प्यार करता है वह सर्वदा दूसरों के सामने अच्छा व्यक्तित्व पेश करने का प्रयत्न करता है। कपड़े साफ-सुथरे और घुले हुए होने चाहिए। सिर के बाल भी बिखरे हुए नहीं होने चाहिए। कपड़ो की क्रीज ठीक होनी चाहिए। जूते पालिश होने चाहिए। ये सारे चिह्न उस व्यक्ति के है जो जीने की कला से परिचित है। उदाहरण के लिए मै गुरबख्श प्रीत लड़ी का नाम बताना चाहूगां जो पेशे से तो इंजीनियर थे परन्तु पजाबी के बहुत अच्छे लेखक थे। पहले विश्व–युद्व में ईरान में रहते हुए अपने मिलिट्री वाले तम्बू में जमीन को खोद कर ही मेज और कुर्सी बना ली थी। उसे लीप-पोत कर और भी सुन्दर बना लिया था जिससे वह पूरे ािविर

में सुन्दर तम्बू वाला व्यक्ति बना। बाकी सैनिक भी उसके इस स्वच्छता प्रेम के कारण उसकी प्रशसां करते थे। वे उसको मिलना पसन्द करते थे। वह जीने की कला का एक सुन्दर उदाहरण था। जब एक व्यक्ति ने उनसे प्रश्न किया दार जी सोते समय सजं-संवर कर क्यो सोते हो? तब गुरवख्श का यह उतर था-सपने में अगर कोई अपना प्यारा मुझे मिलने आ जाए तो मुझे बिखरा हुआ देख कर वापिस न चला जाए इस एक वाक्य से सिद्ध हो जाता है कि वह जीवन जीने का कितना बेहतर कलाकार था। यह घटना उनके जीवन की आत्म-कथा में अंकित है। 'प्रीत लड़ी' उस पत्रिका का नाम है जिसका संचालन उन्होने 1938 में किया और इसी के कारण वे गुरवख्श प्रीत लड़ी बन गए। उन्होंने अमृतसर के पास इस समय की भारत-पाक सीमा के पास 'प्रीतनगर' नाम का एक नगर बसाया था। उस नगर में रहने वाले लेखक, पेंटर, कलाकार और बुद्विजीवी लोग थे। उस नगर में लोगों को जीने की कला की जानकारी दी जाती थी। किस प्रकार एक दूसरे से सहयोग कर प्रेम भरा जीवन जिया जा सकता हौ एक बार प० जवाहर लाल नेहरू को प्रीत नगर में जाने का अवसर प्राप्त हुआ। वे प्रीत नगर के दृश्य को देखकर और वहां के लोगों से मिलकर बहुत प्रभावित हुए थे। उन्होने प्रीत नगर की बहुत प्रशंसा की।

भारतीय इतिहास में मदर टैरेसा का भी प्रमुख स्थान है जिसका पूरा जीवन दुखियों के दुःख हरने में व्यतीत हुआ। मदर टैरेसा ने इस प्रकार जीवन जीने की आदर्श बन गई। उन्होंने अमेरिका का शांति पुरस्कार भी जीता। जो राशि उनको पुरस्कार में मिली उसको भी उन्होने मानव कल्याण में खर्च किया। जो लोगो जीवन-जीने की कला से परिचित है वे ईर्ष्या नही पालते। ऐसे लोगों की उन्नति देख कर प्रसन्न तो होते हैं दुखी नहीं। ऐसे व्यक्ति किसी प्रकार की बदले की भावना नहीं रखते। कारण बदला लेने वाला व्यक्ति हमेशा उस अवसर की तलाश में रहेगा कब और कैसे विरोधी से बदला लूं। यह सोच हमेशा उसके मन को विचलित करती रहेगी। वे अच्छे हालात में भी दुख का अनुभव करेगा। जो जीने की कला से परिचित होते है वे प्रसन्नचित होते है और दूसरो में भी प्रसन्नता बांटने का प्रयास करते हैं। मै यहां भी एक उदाहरण देना चाहूंगा। अगर हम किसी के सिर पर डण्डे मारे तो हम भी इस बात से डरते रहेंगे कि उस व्यक्ति को जब भी अवसर मिलेगा वह हमें बखसेगा नहीं। अगर हमने किसी के घाव पर पट्टी बांधी होगी तो हमें इस बात से संतुष्टि मिलेगी कि कल जब हम पर कोई मुसीबत आएगी तो वह व्यक्ति भी हमारे लिए अच्छा सिद्व होगा। यह तभी सम्भव हो पाएगा जब हम जीने की कला का ज्ञान रखते हैं। आज चारों तरफ हम लोगों को दुःखी पाते हैं। इसका कारण है कि वे जीवन जीने की कला से अनभिज्ञ है। ऐसे लोग छोटे-छोटे दुःखों को भी पहाड़ की तरह समझ बैठते हैं। वे व्यक्ति जो जीना जानते है वे बड़े से बड़े दुख ओर कठिनाई के सामने होने के बावजूद मुस्कराते रहते हैं। ऐसे लोग सन्तुलित जीवन जी सकते है। भय से मुक्त होना भी एक जीवन कला है। जब भी उन पर कोई मुसीबत आती है वे सिर घुनने की बजाय, उस आपदा से बाहर आने के रास्ते ढूढ़ते हैं। वे जब भी किसी को कठिनाई में फंसा हुआ देखते है तो वे आगे बढ़कर उसे यथा सम्भव सहयोग देते हैं। दुनिया में जितने भी समाज-सुघारक लोग हुए है वे अपने विशेष गुणों के कारण ही आम जनता के दिलों में अपनी जगह बना लेते हैं। पुरातन रूढ़िवादियों ने उनके आगे कई प्रकार की कठिनाइयां पैदा कीं। कई बार तो ऐसे व्यक्तियों को अपनी जान से भी हाथ धोना पड़ा, जैसे समाज-सुधारक नरेन्द्र दाभोलकर को गोली मारकर मार दिया गया।

हमारे देश में किरण बेदी भी एक प्रसिद्व नाम है जो राष्ट्रीय स्तर पर बैड्मिटन की खिलाड़ी भी रही है। जीने की कला से वह भली-भांति परिचित थी। जिस विभाग में भी उनकी नियुक्ति हुई उसी विभाग को इन्होने बड़े अच्छे ढ़ंग से संचालित किया। एक बार दिल्ली में यातायात विभाग में जब इनकी नियुक्ति हुई तो इन्होने बगैर किसी भेदभाव के कानून का उल्लघन करने पर सबको दंडित किया और बड़ी निष्ठा से अपने कर्तव्य का वहन किया। गलत पार्किग होने पर कार आदि को क्रेन से उठा लिया जाता था। इसी कारण कुछ लोग उनको क्रेन

बेदी के नाम से पुकारने लगे थे। जब वे तिहाड़ जेल में कार्यरत थे तब भी उन्होने वी.शान्ता राम की फिल्म 'दो आंखे बारह हाथ' की तर्ज पर जेल को सुधार-ग्रह में परिवर्तित कर दिया। खूंखार कैदियों को भी नया जीवन प्रदान किया।

बाबा आमटे भी हमारे देश का प्रसिद्व नाम है जिसने अपने आश्रम का आरम्भ दो रोगियों से किया। अपने हाथों से उनके जख्म साफ करने और उनकी मरहम-पट्‌टी करनी बाबा आमटे की दिनचर्या थी। धीरे-धीरे वह आश्रम कितने ही कुष्ठ-रोगियों का आश्रय-स्थल बन गया। यहां पर उनकी हर तरह से देख-भाल कर उनको रोग मुक्त किया जाता है। उनको एक नया जीवन प्रदान किया जाता है। जिससे बचा हुआ जीवन वे अच्छे नागरिक के रूप में व्यतीत करते है। बाबा आमटे जैसे व्यक्ति ही समाज का एक नया रास्ता दिखा पाते है। ऐसे व्यक्ति केवल अपने लिए ही नही जीते वे समाज-सेवा में अपना जीवन लगा देते है।

अगर हम इतिहास के पन्ने पलटें तो 2500 वर्ष पूर्व एक चरित्र हमारे सामने आता है जो तक्ष ािला वि वविघालय में अर्थ-शास्त्री थे। चाणक्य या कौटिल्य के नाम से उनकी प्रसिद्वि थी। सिकन्दर ने जब भारत पर आक्रमण किया तब चाणक्य पाटली पुत्र के राजा थे। राजा नन्द के यहां सहायता के लिए पहुंचे कि यमनों ने भारत पर हमला किया। राजा अम्बी ने तो आत्म-सर्म्पण कर अपनी सेनांए भी सिकन्दर के हवाले कर दी है। नन्द राजा का उत्तर था 'जब सिकन्दर हम पर हमला करेगा तो देख लेंगे।' तब चाणक्य ने अपनी शिखा खोल दी और कहा जब तक मै तुम्हे गद्‌दी से न उतार दूं मै अपनी शिखा को गांठ न दूंगा। वह जीने की कला से भली-भांति परिचित था। तक्षशिला इन दिनों पश्चिमी पंजाब में स्थित है जो अब पाकिस्तान में है। उन दिनों भारत में दो ही विश्व विघालय थेः तक्षशिला और नालन्दा जो बिहार में है। चन्द्र गुप्त मौर्य उन दिनों तक्षशिला विश्वविद्यालय में चाणकय के शिष्य थे जिसको उन्होंने राजा नन्द के विरूद्व तैयार किया। अन्त मे एक दिन अपने उद्‌देश्य मे सफल हुए। पाटली पुत्र की गद्‌दी से राजानन्द को हराकर चन्द्र गुप्त मौर्य के हवाले की तब जाकर अपनी शिखा को गाठं लगाई। दृढ़ निश्चय वाले लोग ही जीवन में सफल होते है। यह जीने की कला का एक भाग है। आज के भ्रष्ट समाज के लिए चाणकय के जीवन की एक घटना बहुत बड़ी शियाक्षा देती है। एक बार चीनी प्रवासी फाइयान भ्रमण करते हुए पाटली पुत्र पहुचें। पाटली पुत्र के प्रधान-मन्त्री से मिलने की इच्छा प्रकट की। उसे बताया गया कि प्रधान-मन्त्री चाणक्य शहर के बाहर एक झोपड़ी में रहते है। रात का समय था जब फाईयान चाणकय से मिलने पहुंचा। चाणकय की झोंपडी में उस समय दीया जल रहा था। फाईयान ने अपना परिचय दिया और कहा कि मै आपसे मिलना चाहता हूं। तब चाणक्य ने पूछा सरकारी काम से मिलना चाहते हो या गैर सरकारी' फाईयान ने उतर दिया मै गैर सरकारी काम से मिलना चाहता हूं। तब चाणक्य ने दीया बुझा दीया और कहा अन्दर आइए और बैठिए मैगथनीज ने पूछा 'आप ने दीया बुझा दिया हम आपस में बात कैसे करेंगे। जिस पर चाणक्य ने उतर दिया'दीया सरकारी तेल से जल रहा था। हमने गैर-सरकारी बातचीत करनी है। अतः सरकारी तेल से जलने वाला दीया बुझा दिया गया। बात हमने मुंह से करनी है और कानों से सुननी है। इसमें दीये की रोशनी की जरूरत भी नही है अतः शौक से बात कीजिए। ईमानदारी की इससे बडी उदाहरण क्या हो सकती है ? आज कल हम दैनिक जीवन में देखते है कि कार्यालय में कोई नही फिर भी बल्ब जगे हैं और पंखे चल रहे है। इतना ही नही सरकारी चीजों का गैर-सरकारी उपयोग सरेआम किया जाता है। नल खुले है पानी बह रहा है परन्तु किसी को चिन्ता नहीं। जबकि देश में कुछ ऐसे स्थान भी है जहां लोगों को पीने का पानी भी नसीब नहीं। महिलाएं सिर पर घड़े रख कर मीलों की दूरी से पानी ढ़ोती है।

अगर हमने अपने राष्ट्र को उँचा उठाना है तो हमें इन छोटी-छोटी बातों की ओर ध्यान देना होगा। ये छोटी बाते ही आगे चल कर बहुत बड़ी बात बन जाती है इसी का नाम जीवन जीने की कला है। जो व्यक्ति अपने स्वास्थ्य की ओर ध्यान रखते हुए जनहित और राष्ट्रहित के लिए जीता है वही एक आदर्श व्यक्ति होता है।

आर.पी.गांधी जी को याद करते हुए..

–गुरमीत अम्बाला

तर्कशील आंदोलन के योद्धा रहे आर.पी.गांधी आज से एक साल पहले 3 जनवरी, 2019 को 91 साल की लम्बी आयु पा कर हम सब को सदा के लिए अलविदा कह गये थे। उनका सम्पूर्ण जीवन संघर्ष की जिंदा मिसाल रहा। पाकिस्तान बनने पर अपने पुश्तैनी स्थान सियालकोट से उन्हें पलायन करना पड़ा और भारत में आकर अन्य लाखों लोगों की तरह शरण कैम्पों में रहना पड़ा था। जीवन के संघर्ष में उन्होंने वैज्ञानिक चिंतन का दामन पकड़ा और अंतिम सांस तक उसी पर अडिग रहे। मृत्यु उपरांत उनकी बनाई सीडी में यह खुलासा हम सब ने देखा है। तांत्रिकों, बाबाओं से टक्कर लेने के साथ ही विभिन्न स्थानों पर वे अंतिम पलों तक वैज्ञानिक चेतना का प्रचार-प्रसार करते रहे।

अपनी बढ़ती आयु में भी वे तर्कशील गतिविधियों में निरंतर सक्रिय रहे। लम्बे समय तक वे तर्कशील सोसायटी हरियाणा की यमुनानगर इकाई के प्रधान रहे, और सोसायटी के राज्य प्रधान भी रहे। इसके अतिरिक्त ह्यूमन हेल्प लाईन, हरियाणा विज्ञान मंच, ज्ञान विज्ञान समिति, रेड क्रॉस, नशा मुक्ति केंद्र, क्राइम तहकीकात आदि संस्थाओं में भी सक्रिय रहे।

यद्यपि उनके जाने से रिक्त हुए स्थान को भरना अति कठिन है लेकिन उनकी स्मृतियों से हम नया जोश प्राप्त कर सकते हैं और उनके अधूरे कार्यों को आगे बढ़ा सकते हैं। एक वर्ष गुज़र गया, उनके जुदा हुए, परंतु आज भी उनकी प्यार भरी आवाज हमारे कानों में गूंजती है। निश्चय ही वे तर्कशील आंदोलन के इतिहास में सदा याद किए जाते रहेंगे।

रागणी

कमा कै भी भूखे

–रामेश्वर गुप्त

माणस माणस म्हं फर्क नहीं, सब शक्ल एक सी दीखें।
जात धर्म के खात्यां म्हं, फेर मनै पता नहीं क्यूं लिखें।।

सारे माणस काम करैं, कुछ थोड़ा कुछ ज्यादा,
बैठ निठल्ले दुगणा खावैं, काम करणिए आधा,
दिन-रात हम हाड़ तुड़ावैं, क्या नर क्या मादा,
चालाक आदमी सीधे नै लूटण का करैं इरादा,
कुछ कमा कै भूखे-मरते, कुछ जेब काटणी सीखें।

इस जन्म की आगै मिलै, या पिछली तेरी कमाई,
तू हिन्दू से, तू मुसलमान, तू सिक्ख और इसाई,
वां न्यारे तू न्यारा सै, थम कोन्या हो भाई-भाई,
झूठी घड़ कै बात बता रे, ल्या दी म्हारी तबाही
म्हारी करणी आगै आगी, जिंदगी भर हम झीखें।

दो हाथ दो पैर सभी के, आँख, नाक, अर कान दिखे,
लाल रंग का खून एक सा, ना होती कोई पिछाण दिखे,
दिमाग दे दिया सोचण का, सही गलत नै जाण दिखे,
इसी बात पै न्यारे हो गये, पशु और इन्सान दिखे,
भेड़ चाल क्यू कर चलगी, थम नहीं समझते दीखें।

कुछ म्हारे पै राज करैं, हम लात अर जूते खाते,
कुछ लूटू कुछ लुटणे आले, बस दो ही वर्ग बताते,
अन्धे विश्वास की गठड़ी, हम सिर पै रहे उठाते,
सोचण की कोशिश ना करते, बस उनका हुक्म पुगाते,
'रामेश्वर' कौण सुणेगा, जब तक मिल कै ना चीखें।

सहयोग राशि :

(1) करनाल निवासी **अशोक भाटिया,** प्रोफेसर (रिटा.) व हिंदी के जाने माने लघुकथाकार की ओर से तर्कशील सोसायटी हरियाणा को तर्कशील केंद्र के भवन निर्माण के लिए 5000 रुपये (पांच हज़ार रुपये) सहयोग प्राप्त हुआ है। सोसायटी उनका इस सहयोग के लिए हार्दिक आभार प्रकट करती है।

(2) गुरमीत सिंह अम्बाला, महासचिव, तर्कशील सोसायटी, हरियाणा ने 19 नवंबर, 2019 के दिन हुए अपने सुपुत्र सरनजीत सिंह के विवाह की खुशी में तर्कशील सोसायटी हरियाणा को 2100 रुपये (दो हज़ार एक सौ रुपये) का सहयोग भेजा है। सोसायटी उनका इस सहयोग के लिए हार्दिक आभार प्रकट करती है।

स्मृति-शेष

बिना रस्मों के डॉ. श्रीराम लागू को अंतिम विदाई देकर परिवार ने पूरी की उनकी अंतिम इच्छा

फिल्म जगत के जाने माने अभिनेता, एक लेखक, निदेशक और अपने निजी जीवन में ईश्वर की सत्ता का एक सिरे से खण्डन करने वाले नास्तिक व एक प्रगतिशील व्यक्ति डॉ. श्रीराम लागू 17 दिसंबर, 2019 को इस संसार को अलविदा कह गये। उनका शवदहन शुक्रवार दोपहर राजकीय सम्मान के साथ पुणे, महाराष्ट्र में किया गया। दिवंगत लागू के दामाद डॉ. श्रीधर कानेटकर के मुताबिक, 'वे भगवान को नहीं मानते थे और चाहते थे कि हिंदू धर्म के तहत उनका अंतिम संस्कार न किया जाए। वे जो चाहते थे, हमने उसका सम्मान किया।' अत: उनके शवदहन के समय किसी प्रकार की रस्में आदि नहीं की गई।

उनका दाह संस्कार 12.30 बजे विद्युत शवदाह से किया गया। डॉ. लागू की आयु 92 साल थी। उनका निधन 17 दिसंबर (मंगलवार) की रात हार्ट अटैक से हुआ। उनके बेटे डॉ. आनंद लागू अमेरिका में रहते है, जिस वजह से उनके में तीन दिन शवदहन का वक्त लगा।

सरकार ने 21 तोपों की सलामी दी

बहुआयामी जीवन के मालिक श्री राम लागू को फिल्मी जगत, रंगमंच जगत् और उसके बाहर भी कितने सम्मान से देखा जाता था इसका अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि उनकी मृत्यु पर महाराष्ट्र सरकार ने राजकीय सम्मान में उन्हें 21 तोपों की सलामी दी। महाराष्ट्र सरकार में कैबिनेट मंत्री सुभाष देसाई ने शमशान घाट पहुंच कर डॉ. लागू के कॉफिन पर माल्यार्पण किया। अंतिम संस्कार में मनोरंजन जगत से नाना पाटेकर, अमोलपालेकर, उर्मिला मातोंडकर, विजय केंकरे, डॉ. जब्बार पटेल और राज ठाकरे समेत सिनेमा और राजनीति जगत की कई हस्तियां शामिल हुईं।

डॉ. लागू ने 50 साल में हिंदी मराठी की 200 से ज्यादा फिल्मों में काम किया। उन्होंने मराठी, गुजराती और हिंदी के 40 से ज्यादा नाटकों में काम किया। 20 मराठी प्ले भी डायरेक्ट किए। उन्हें मराठी रंगमंच के महान अभिनेताओं में गिना जाता है। उन्होंने 'घरौंदा',लावारिस', मुकद्दर का सिंकदर', 'हेराफेरी', 'एक दिन अचानक' जैसी यादगार फिल्मों महत्वपूर्ण किरदार निभाए।

डॉ॰ लागू ने अपना जीवन ई. एन. टी. सर्जन के रूप में शुरू किया था। 1960 में उन्होंने तंजानिया में मेडिकल प्रैक्टिस की। 1969 मे वे पूर्णकालीन एक्टर हो गए। उन्हें 1978 में फिल्मफेयर अवॉर्ड से नवाजा गया था। श्रीराम लागू को 1978 में हिंदी फिल्म 'घरौंदा' के लिए श्रेष्ठ अभिनता का फेयर पुरस्कार से प्रदान किया गया। वे एक संजीदा लेखक थे और बहुत सी पुस्तकें भी लिखीं। उनकी किताबों में 'गिधडे', 'गाबा' और आत्ममाथा शामिल हैं। उनकी आत्मकथा का शीर्षक 'लमाण' हैं जिसका हिंदी में अर्थ है 'मालवाहक'।

नास्तिक श्री राम लागू

गॉड इज़ डेड (ईश्वर मर चुका है)

श्री राम ने एक आर्टिकल लिखा था-टाइम टू रिटायर गॉड. अर्थात, 'ईश्वर को रिटायर करने का वक्त आ गया है।' श्री राम लागू के इस आर्टिकल ने उतना ही विवाद बटोरा जितना नीत्शे के कथन ने । अपने एक लेक्चर के दौरा डॉक्टर लागू ने कहा था:

'मैं ईश्वर को नहीं मानता। मुझे लगता है कि समय आ गया कि ईश्वर को रिटायर कर दिया जाए।

दिलचस्प बात यह है कि जिस मानव की बात नीत्शे ने की थी, श्री राम लागू भी अपनी बातों में उसी महामानव की बात करते थे।

डॉ. लागू केवल मराठी के रंगमंच मूवमेंट के लिए ही नहीं, महाराष्ट्र के अंधविश्वास मिटाने वाले आंदोलन के लिए भी याद किया जाएगा। वर्षो से वे महाराष्ट्र अंधश्रद्धा निर्मूलन समिति के साथ लगातार सक्रिय रूप से जुड़े हुए थे। यह वही समिति है जिससे नरेंद्र दाभोलकर और गोविंद पानसरे जैसे ख्यात विचारक जुड़े हुए थे और अपना बलिदान दे दिया।

-बलदेव सिंह महरोक

जनवरी 2020 Reg. No. HARHIN/2014/60580 वर्ष 7 अंक 1

अनमोल वचन

ज्ञान एवं कल्पना

कल्पना ज्ञान से भी ज्यादा जरूरी है, ज्ञान का दायरा उतना ही होता है जितना हम जानते है, परंतु कल्पना की पहुँच विश्वव्यापी हो जाती है यह जानने, समझने को विस्तृत कर देती है।

अल्बर्ट आईंस्टाईन
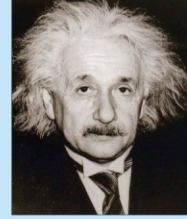
कवि का दिल

जब मैं कभी किसी बच्चे के साथ खेलता हूँ, लाड प्यार करता हूँ,
माफ करना मुझे – मैं धीरे से उसके कान में कहूँ।
लो मित्र, मैं खाली करता हूँ जगह, तुम्हारी खातिर।
समय आ गया है तुम लहलाओ और मैं मुरझाता हूँ।

एलैगजेंद्र पुश्किन

पहल कदमी

बच्चों को जीवित चीज़ों और कुदरत को प्यार करना सिखाना होगा। उन्हें बेइंसाफी, जुल्म, लूट के अर्थ समझाने होंगे उनको इन बुराईयों से नफरत करना भी सिखाना होगा। जिसके लिए हमें स्वयं शिक्षीत होना होगा और उदाहरण प्रस्तुत करना होगा।

वासिली सुखोमलिंसकी
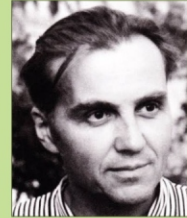
मेरा सन्देश

विद्यार्थी हमारा आने वाला कल है। एक बेहतर जिंदगी जीने का सपना इनके मन में है। सभी को आगे बढ़ने के लिए विद्यार्थियों को बराबर के अवसर देना उनका हक है। वैज्ञानिक सोच को अपना कर ही हम भगत सिंह व करतार सिंह सराभा की विरासत को आगे बढ़ा सकते है।

लोक नाटककार गुरशरण सिंह

If undelivered please return to :

Tarksheel

Tarksheel Bhawan, Tarksheel Chowk,
Sanghera By Pass, BARNALA-148101
Post Box No. 55
Ph. 01679-241466, Cell. 98769 53561
Web : www.tarksheel.org
e-mail : tarkshiloffice@gmail.com

BOOK POST
(Printed Matter)

To ....

....

....

प्रो. बलवंत सिंह, प्रकाशक, मुद्रक, स्वामी, संपादक मकान न. 1062, आदर्श नगर, पिपली, जिला कुरूक्षेत्र - 136131 (हरियाणा) द्वारा रमणीक प्रिंटरज, नजदीक लक्ष्मी सिनेमा, जिला यमुनानगर - 135001 (हरियाणा) से मुद्रित करके तर्कशील सोसायटी पंजाब व हरियाणा के माध्यम से वितरण हेतु जारी किया।